सामाजिक विज्ञान

इतिहास और राजनीति विज्ञान

छठी कक्षा

शिक्षक शिक्षा निदेशालय एवं
राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद
ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण,
भुवनेश्वर

सामाजिक विज्ञान

इतिहास
और
राजनीति विज्ञान

छठी कक्षा

संपादना मंडली

डॉ. शंभुप्रसाद सामन्तराय
श्री विष्णुचरण पाल
श्री प्रफुल्ल कुमार जेना
श्रीमती पद्मश्री महान्ति

संयोजना

डॉ प्रीतिलता जेना
डॉ तिलोत्तमा सेनापति

समीक्षक मंडली

डॉ. शंभुप्रसाद सामन्तराय
श्री वैष्णव चरण दास
श्री प्रताप कुमार पटनायक
श्रीमती रत्नमंजरी दाश
श्रीमती रेणुबाला दाश
डॉ. पुष्पांजलि पाणि

अनुवादक मंडली :

प्रो. राधाकान्त मिश्र, समीक्षक
प्रो. स्मरप्रिया मिश्र
डॉ लक्ष्मीधर दाश
डॉ अजित प्रसाद महापात्र
डॉ स्नेहलता दास, अनुवादक
डॉ सनातन बेहेरा

संयोजिका :

डॉ. सविता साहु

प्रकाशक : विद्यालय और गणशिक्षा विभाग, ओड़िशा, सरकार

मुद्रण वर्ष : २०२२

प्रस्तुति : शिक्षक शिक्षा निदेशालय एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा, भुवनेश्वर
और
ओड़िशा राज्य पाठ्यपुस्तक प्रणयन और संस्था, भुवनेश्वर।

मुद्रण : पाठ्य पुस्तक उत्पादन और बिक्रय, भुवनेश्वर।

जगतमाता के चरणों पर अब तक मैं जो-जो भेंट देता हूँ, उनमें से मौलिक शिक्षा मुझे सबसे अधिक क्रान्तिकारी और महत्वपूर्ण लगती है। इससे अधिक महत्वपूर्ण और मूल्यवान भेंट मैं जगत के सामने रख सकूँगा, वह मुझे प्रत्यय होता नहीं। इसमें मेरे सारे रचनात्मक कार्यक्रमों के प्रयोगात्मक करने की चाबी है। जिस नई दुनिया के लिए मुझे दर्द होता है वो इसीसे ही प्रकट हो सकेगा। यह मेरी अन्तिम अभिलाषा है।

-महात्मा गान्धी

हमारा राष्ट्र गान

"जन-गण-मन-अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा
द्रबिड़ उत्कल बंग
बिन्ध्य-हिमाचल-यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशीष मांगे
गाहे तव जय गाथा
जनगण-मंगल दायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता,
जय हे जय हे जय हे,
जय जय जय जय हे।"

विषय सूची

अध्याय	प्रसंग	पृष्ठ संख्या
प्रथम	इतिहास विषयक धारणा	1
द्वितीय	सर्वप्राचीन समाज	12
तृतीय	प्रथम कृषक और पशुपालन	19
चतुर्थ	भारत का प्रथम नगरीकरण	25
पंचम	भिन्न-भिन्न जीवन प्रणाली	35
षष्ठ	नए चिंतन का अभ्युदय	42
सप्तम	पारसी और ग्रीक् आक्रमण	52
अष्टम	मौर्य साम्राज्य का उत्थान	57
नवम	ईस्वी पूर्व 200 से ई. 300 के मध्य भारत	65
दशम	ई. 300 से ई. 800 के मध्य भारत	76
	राजनीति विज्ञान	
प्रथम	हम और हमारा समाज	95
द्वितीय	राष्ट्र	102
तृतीय	सरकार	109
चतुर्थ	स्थानीय स्वायत्त शासन	117

भारत का संविधान

हम भारतवासी भारत को एक सार्वभौम, समाजवादी, धर्म-निरपेक्ष, गणतान्त्रिक साधारण-तन्त्र के रूप में गठन करने के लिए दृढ़ संकल्प लेकर और यहाँ के नागरिकों को -

- सामाजिक अर्थनैतिक और राजनीतिक न्याय;
- चिन्तन, अभिव्यक्ति, प्रत्यय, धार्मिक विश्वास और उपासना की स्वतन्त्रता देने;
- स्थिति और सुविधा में समानता की सुरक्षा प्रदान करने तथा;
- व्यक्ति मर्यादा और राष्ट्र के ऐक्य तथा संहति निश्चित कर उनके बीच भाई-चारे का भाव जगाने के लिए

इसी प्रकार 1949 ई. के नवेम्बर 26 तारीख के दिन हम अपने संविधान प्रणयन सभा में इस संविधान को ग्रहण एवम् प्रणयन करते हैं तथा हम अपने को समर्पित करते हैं।

प्रथम अध्याय

इतिहास विषयक धारणा

एक दिन लिपि ने नानाजी से कहानी सुनने की जिद की । नानाजी ने लिपि से कहा, "मैं आज तुझे एक नई कहानी सुनाता हूँ ", सुन । लिपि उतावली थी । कहा, जल्दी बोलो। नानाजी कहने लगे...

यूनान में एक शक्तिशाली राजा थे । नाम था सिकंदर । धरती के अनेक देशों पर विजय करने के बाद उन्होंने भारत पर अधिकार पाने की इच्छा व्यक्त की । उन दिनों भारत के उत्तर - पश्चिम दिशा में दो प्रसिद्ध राजाओं का राज चल रहा था । वे दोनों थे - अम्बी और पुरु। डरपोक अम्बी सिकंदर से डर गए और उन्होंने उसकी शरण ली। परंतु पुरु वीर थे । सिकंदर से उनकी लड़ाई हुई । इस लड़ाई में पुरु हार गए और सिकंदर के द्वारा वन्दी बना लिए गए । सिकंदर ने पुरु से पूछा, "तुम मुझ से किस तरह का बर्ताव चाहते हो ?" पुरु ने जवाब दिया "जैसे एक राजा दूसरे राजा से व्यवहार करता है , ठीक वैसा।" पुरु की निर्भीकता देखकर सिकंदर खुश हुए और उन्हें मुक्त करके उन्हें राज्य लौटा दिया ।

कहानी सुनने के बाद लिपि ने पूछा, "नानाजी, आप इतनी सारी बातें कैसे जानते हैं ?" नानाजी ने जवाब दिया, इतिहास से । इस पर लिपि ने नानाजी से इतिहास के बारे में कई सवाल पूछे और नानाजी ने उन सबके जवाब दिए । लिपि ने जो सवाल किए थे उनके जवाब नानाजी ने क्या दिए, आइए, जानें ।

इतिहास का मतलब क्या है ?

आजकल धरती पर जितने लोग हैं, वे सब एक ही जाति के हैं । वैज्ञानिकों का कहना है आज से लगभग पंद्रह लाख वर्षों पूर्व धरती पर मानव की सृष्टि हुई थी । लेकिन उससे पहले मानव का रूप ऐसा नहीं था । नर-वानरों का क्रमिक विकास होकर मानव की सृष्टि हुई है । अब धरती पर उस तरह के नर-वानर नहीं है । उस जाति के गिबन्, ओरांगओटान, गोरिल्ला और चिपांजी अब धरती पर दिखते हैं । गोरिला के शरीर के गठन की तरह मानवों का शारीरिक गठन हुआ है । इसके अलावा चिपांजी की बुद्धि और मानवों की बुद्धि में मेल दिखता है ।

आपके अंचल में दिखनेवाले बन्दरों के बारे में लिखिए ।

मनुष्यों की सांस्कृतिक धारा अत्यंत प्राचीन है । कहा जाता है कि सामाजिक रीतिनीति और अस्त्र - शस्त्रों के निर्माण से ही मानव संस्कृति का आरंभ हुआ है । इसके अलावा कृषिकार्य, अग्नि का आविष्कार और व्यवहार, पहिए का उद्भावन, विविध धातुओं का उपयोग, गाँव और राज्य की परिकल्पना, शासन प्रणाली और परिचालना आदि विभिन्न चरणों से होते हुए मानव संस्कृति आगे बढ़ी है । इतिहास इस अग्रगति का धारावाहिक विवरण है । दूसरे शब्दों में कहा जाए तो मनुष्य की अतीत की घटनाओं की धारावाहिक प्रगति ही इतिहास है ।

आपके अंचल में प्रचलित रीति-नीति दूसरों से पूछकर लिखिए।

अंग्रेजी में इतिहास को History कहा जाता है । हिष्ट्री शब्द यूनान के 'हिष्टो' (Histo) शब्द से लिया गया है । इसका अर्थ है अतीत के विषय में जानना । दूसरे अर्थ में "इतिहास एक वास्तविक घटनावलियाँ हैं जो अतीत में बसनेवाले मानवों की जीवन-यापन प्रणाली के बारे में चर्चा करती हैं ।"

इतिहास पढ़ने की उपयोगिता क्या है ?

- इतिहास पढ़ने से हम समयानुसार अतीत की घटनाओं को जान पाते हैं ।
- वर्तमान को समझने के लिए अतीत को जानना आवश्यक है । अतीत को जानकर हम वर्तमान औार भविष्य को सही रूप में बना सकेंगे ।
- मानव सुख- शांति से रहने के लिए अतीत में जिन उपायों का अवलंबन करता रहा; उनमें से कुछ उपाय आज भी हमारे लिए जरूरी हो सकते हैं । अतीत के उन्हीं उपायों से जरूरी उपायों को चुन कर ग्रहण करने में इतिहास सहायक होता है ।
- अतीत में विविध रीति-रिवाज, राज्य गठन, शासन प्रणाली आदि के विषय में जानकर जो हमारे लिए जरूरी हैं उन्हें ग्रहण किया जा सकता है । इस कार्य में इतिहास पठन सहायक होता है ।
- अतीत की अनेक कुप्रथाएँ और अंधविश्वास आज भी हमारे समाज में प्रचलित हैं । इतिहास पढ़ने से हमें पता चलेगा कि वे सब कब, क्यों और कैसे बने थे ? और हम यह समझ सकेंगे कि वर्तमान युग में कौन-सी प्रथा ग्रहणयोग्य नहीं है ? उनमें जरूरी बदलाव कर आज की परिस्थिति के साथ मेल करने की चेष्टा करेंगे । इसलिए इतिहास पढ़ना हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है ।

इतिहास के आधार क्या हैं ?

इतिहास एक काल्पनिक कहानी नहीं है । यह प्रामाणिक तथ्य पर आधारित है । अनेक प्राचीन आधारों से हम इतिहास के बारे में जानते हैं । इन आधारों को दो भागों में बाँटा गया है । जैसे : (क) पुरातात्त्विक आधार (२) साहित्यिक आधार । उभय आधारों के सहारे इतिहास के बारे में जानना संभव होता है ।

पुरातात्त्विक आधार

भारत के विभिन्न प्रांतों में जमीन के नीचे और जमीन के ऊपर प्राचीन युग के बहुविध ऐतिहासिक वस्तु और अवशेष देखने को मिलता है । वे सब प्राचीन काल के विभिन्न कार्यकलाप तथा घटनावली पर प्रकाश डालते हैं। इन पुरातात्त्विक आधारों को चार भागों में बाँटा जा सकता है । जैसे - (1) पत्थरों पर बने लेख या लिपि (2) स्मारक और कलाकृति (3) भौतिक अवशेष (4) सिक्के ।

(1) पत्थरों पर बने लेख या लिपि

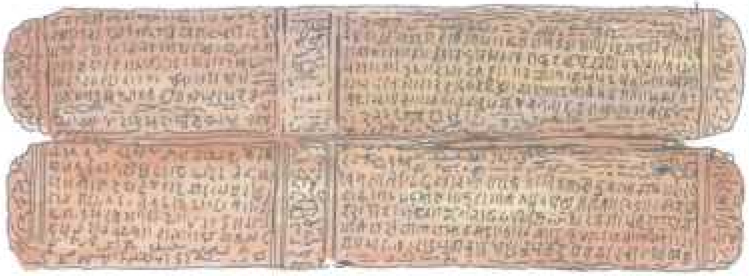

ताड़पत्र लिपि

मेसोपटामिआ लिपि

अतीत के विभिन्न घटना, कार्यकलाप, शासन प्रणाली, सामाजिक प्रथा , परंपरा, चाल-चलन आदि के बारे में मिट्टी की टाइलों और ईंटों, तांबे के पट्टों (ताम्रफलक) , पशुओं के चमड़ों, कपड़ों, स्तूपों, मंदिर की दीवारों, पेड़ के पत्तों और छालों तथा ताड़पत्तों पर लिखे जाते थे। वे आज भी पाए जाते हैं । ओड़िशा में भुवनेश्वर के पास धौली पहाड़ और गंजाम के जौगढ़ में पत्थरों पर बाईस सौ साल पुराने लेख पाए जाते हैं । उसके अलावा ईरान, ईराक, मिस्र, चीन, यूनान तथा हमारे देश की विभिन्न जगहों पर अतीत की घटनावली के लेख पाए जाते हैं ।

(2) स्मारक और कलाकृतियाँ :

कोणार्क मन्दिर

हमारे देश में अनेक ऐतिहासिक के स्मारक जैसे, मंदिर, दुर्ग, राजप्रासाद, स्तूप और मठ आदि पाए जाते हैं । इनके निर्माण-काल और निर्माण- कर्ता के बारे में पता

चलता है । इसके अलावा इनमें से उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक तथा वैज्ञानिक विचार-धाराओं के बारे में अनेक तथ्य मिलते हैं ।

उदयगिरि में हातीगुंफा

आपके अंचल के जो ऐतिहासिक जगह तथा स्मारक हैं, उनकी एक तालिका प्रस्तुत कीजिए।

(3) भौतिक अवशेष

पुरातात्त्विक खुदाई से अनेक मिट्टी के पात्र, धातु के पात्र, औजार, अलंकार , अस्त्रशस्त्र , मूर्तियाँ आदि पाए जाते हैं । इनके अनुध्यान से अतीत की बहुत सारी घटनाएँ तथा स्मारक के बारे में तथ्य मिलते हैं ।

(4) सिक्के

इतिहास को जानने के लिए प्राचीन सिक्के विशेष सहायक होते हैं । वे कब किन शासकों के द्वारा प्रचलित किए गए थे, उस समय की अर्थनीति, व्यापार और साम्राज्य के विस्तार आदि कैसे हुए थे, उनके बारे में अनेक तथ्य इन प्राचीन सिक्कों से पाए जाते हैं ।

प्राचीन मुद्रा

विभिन्न प्रकार के सिक्के इकट्ठे कीजिए। उन पर क्या खोदे गए हैं, लिखिए ।

साहित्यिक आधार

अतीत के विभिन्न घटनाओं की जानकारी के लिए साहित्य हमारी सहायता करता है । इन साहित्यिक आधारों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है । जैसे : (1) धार्मिक साहित्य (2) लौकिक साहित्य (3) यात्रा विवरण।

(1) धार्मिक साहित्य

जिन साहित्यों में विशेष रूप से धार्मिक विषयों पर चर्चा मिलती है, उनको धार्मिक साहित्य कहा जाता है। ऐसे साहित्य विभिन्न धार्मिक कथाओं पर आधारित होते हैं । वे, उपनिषद, पुराण, महाभारत, रामायण ग्रंथ आदि साहित्य के अंतर्गत हैं । इनमें अतीत के धर्म, सामाजिक व्यवस्था एवं राजनीतिक अवस्था के विषय में अनेक तथ्य पाए जाते हैं ।

(2) लौकिक साहित्य

धार्मिक साहित्य के अलावा अनेक साहित्यिक रचनाएँ मिलती हैं । ऐसे साहित्य को लौकिक साहित्य कहा जाता है। ऐसे साहित्यों में विविध धर्मसूत्र, स्तोत्र, पाणिनि और पतंजलि लिखित व्याकरण, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, कालिदास की रचनावली, बाणभट्ट के हर्षचरित आदि से उस काल के समाज , रीतिनीति, शासन प्रणाली, अर्थनीति आदि के बारे में अनेक तथ्य पाए जाते हैं ।

(3) यात्रा विवरण

प्राचीन काल में अनेक परिव्राजक भारत भ्रमण करने आए थे । उन लोगों ने उस समय की सामाजिक अवस्था, धर्म राज्य शासन प्रणाली, अर्थनीति आदि के विषय में अनेक बातें अपनी यात्रा विवरण में लिखा है । इन विवरणों से हमें इतिहास संबंधी अनेक तथ्य मिलते हैं । इन परिव्राजकों में से मेघास्थिनिस , फा -सिआँ, जुआँग-जांग, अलबरूनी, इबनबतूता आदि मुख्य हैं । उनमें से चीन यात्री जुआंग - जांग ओड़िशा आए थे ।

ये परिव्राजकगण किन राजाओं के शासन काल में भारत -
भ्रमण करने आए थे, उनको संग्रह करके लिखिए।

समय के अनुसार इतिहास का श्रेणी-विभाजन किया जाता है, कैसे ?

काल के आधार पर इतिहास को तीन भागों में बाँटा गया है । वे हैं (1) प्रागैतिहासिक काल (2) आद्य ऐतिहासिक काल (3) ऐतिहासिक काल ।

(1) प्रागैतिहासिक काल :

वर्षों पहले मानव लिखना पढ़ना नहीं जानता था; इसलिए उस काल की घटनावली का कोई लिखित साक्ष्य नहीं मिलता । उस काल के मानव की जीवन-यापन प्रणाली जानने के लिए पुरातत्त्व खनन और अनुसंधान पर

प्रत्नतात्त्विक खनन से मिलता मिट्टी के पात्र

निर्भर करना पड़ता है । उस काल के व्यवहृत विविध प्रकार के मिट्टी के बर्तनों, आभूषणों, औजारों, मानव की हड्डियों आदि से मानव की जीवन-यापन प्रणाली के विषय में अनेक तथ्य मिलते हैं । उस काल का मानव गुफा में कई प्रकार के चित्र बनाते थे । उनसे हमें उनके बारे में पता चलता है । इस काल को प्रागैतिहासिक काल कहा जाता है ।

(2) आद्य ऐतिहासिक काल :

जब मानव लिखना पढ़ना सीख गया तो विभिन्न घटनाओं को अपने लेखों में व्यक्त करने लगा । इस काल को आद्य -ऐतिहासिक काल कहा जाता है । ये लेख सीमित हैं एवं उन में से कुछ लेखों को पढ़ना संभव नहीं हो सका है। इसलिए इस काल की घटनाओं को जानने के लिए लेखों के साथ-साथ पुरातत्त्व , खुदाई और अनुसंधान पर निर्भर करना पड़ता है । इस काल में सिंधु नदी के किनारे बसी सभ्यता एक उदाहरण है ।

दुनिया में और किन-किन स्थानों पर प्राचीन सभ्यता बसी थी, उसकी एक तालिका कीजिए।

(3) ऐतिहासिक युग :

लेखन की प्रगति होने पर मानव विभिन्न घटनाओं को शिलाओं, खंभों, ताम्बे के पट्टों (ताम्र फलक), ताड़ पत्तों, मिट्टी के पात्रों आदि पर लिख सका । इन लेखों में उस काल के सामाजिक, अर्थनैतिक और सांस्कृतिक अवस्थाओं के बारे में बहुत सारी सूचनाएँ मिलती हैं । इस काल को ऐतिहासिक युग कहा जाता है । लेकिन ये लेख काफी पुराने हो जाने पर इनमें से बहुत सारे नष्ट हो गए हैं ।

भारत की भौगोलिक अवस्था के साथ इतिहास का क्या संबंध है ?

धरती की उत्तर गोलाई में भारत अवस्थित है (ग्लोब देखिए) यह ऐशिया महादेश के दक्षिण उपकूल में लगभग बीचोंबीच स्थित है । भारत की तीन दिशाओं को सागर ने घेर रखा है । इसलिए इसको उपद्वीप कहते हैं । अफ्रीका, अस्ट्रेलिया और यूरोप से भारत की दूरी लगभग बराबर है । प्राचीन सभ्यता जिन देशों में विकसित हुई, वे सब देश भारत की सीमा के पास और भारत के नजदीक ही बसे हैं । इन देशों में से भारत की उत्तर पूर्व सीमा पर चीन है । पश्चिम को ईरान है तो ईराक, मिस्र और यूनान आदि देश हमारे निकट ही उपस्थित हैं ।

भारत का प्राकृतिक विभाग

प्राकृतिक गठन की विविधता के आधार पर भारत को छह अंचलों में विभाजित किया गया है । वे हैं - हिमालय का पहाड़ी इलाका, उत्तर का समतल क्षेत्र, केन्द्र में स्थित घाटिया मालभूमि, पश्चिम में रेगिस्तान (मरूभूमि) उपकूल का समतल अंचल और समुद्र के बीच द्वीप समूह है । इनमें से केन्द्रीय घाटी और पश्चिम की मरूभूमि क्रमशः वृहत्तम और क्षुद्रतम अंचल है ।

भारत का प्राकृतिक मानचित्र :

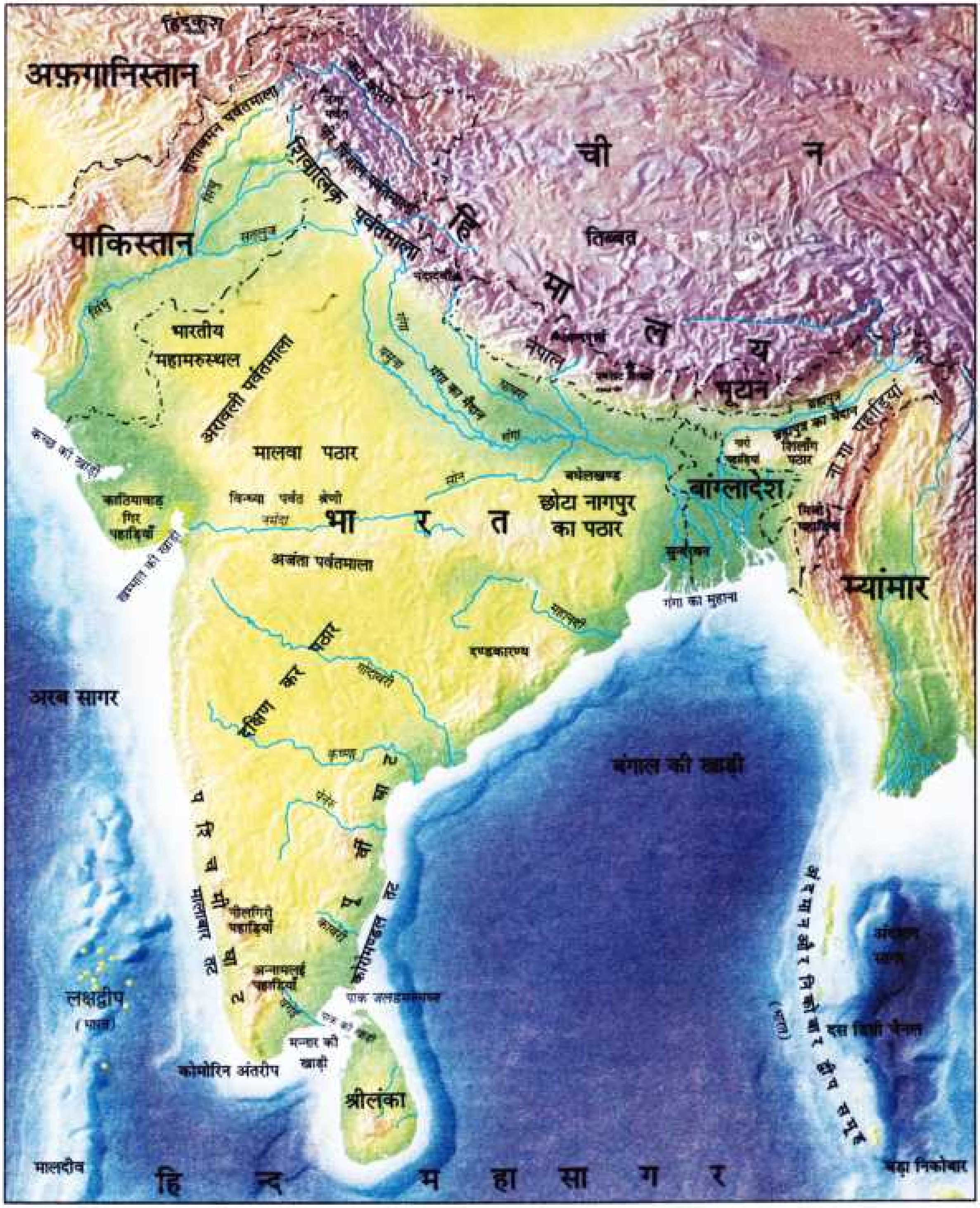

प्राकृतिक वैशिष्ट्य :

भारत के इतिहास को इसके प्राकृतिक विभाग अधिकतर प्रभावित करते आए हैं । भारत के चार मुख्य प्राकृतिक अंचल हैं - (1) पार्वत्य अंचल (2) नदी की घाटी का अंचल (3) जंगल (4) समुद्र तट का समतल अंचल।

(1) पार्वत्य अंचल :

भारत की उत्तर सीमा में अवस्थित अत्युच्च हिमालय की पर्वतश्रेणी केन्द्र एशिया से भारत को अलग कर देती है । हिमालय पर्वतमाला के पगतल का अंचल और घाटी या उपत्यका के अंचल की मिट्टी काफी उर्वर होती है और जल संपदा से परिपूर्ण हैं । इन सारी सुविधाओं के कारण इस इलाके की आबादी घनी है और मिट्टी खेती के लिए उपयोगी है ।

हिमालय की ऊँची पर्वतमाला को पार करके उत्तर दिशा से भारत में प्रवेश कर पाना कठिन है । लेकिन उत्तर पश्चिम के पार्श्ववर्ती पार्वत्य अंचल में कई सुरंगें हैं । इन गिरिपथों से होकर भिन्न-भिन्न समय में आक्रमणकारी, व्यापारी और परिव्राजक (यात्री) लोग भारत में आते रहे हैं । उनके आने से उनकी चाल-चलन, दर्शन, भाषा और साहित्य के द्वारा हमारी संस्कृति प्रभावित हुई है ।

दक्षिण भारत की मालभूमि के पूर्व के पूर्वघाट पर्वतमाला है और पश्चिमी तरफ पश्चिम घाट पर्वतमाला है। पश्चिम घाट पर्वतमाला भारत के मध्यभाग से दक्षिणी ओर तक फैली है । पश्चिमघाट पार्वत्य अचंल में काफी बारिश होती है । इसलिए यह अंचल घने जंगलों से भरा हुआ है ।

आपके गाँव /शहर को जो कुछ घिरा हुआ है उनके बारे में लिखिए।

(2) नदी उपत्यका समूह :

हमारे देश में हिमालय पार्वत्य अंचल और दक्षिण भारत की मालभूमि के बीच एक विस्तृत समतल भूमि पूर्व से पश्चिम की ओर फैल कर अवस्थित है । सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र आदि चिरप्रवाहमान नदियों की चिकनी मिट्टी के द्वारा यह समतल अंचल बना है। यहाँ की मिट्टी उर्वर और यहाँ काफी जल मिलने के कारण यहाँ काफी फसलें उगाई जाती हैं। इसलिए इस इलाके में बहुत सारे लोग रहते हैं । इन्हीं कारणों से नदी की किनारे वाले अंचलों में प्राचीन सभ्यताएँ उठ खड़ी हुई थीं।

(3) जंगल :

भारत के हिमालय पार्वत्य अंचल के पदतल और पश्चिम घाट पर्वतमाला के पश्चिम पार्श्व में काफी बारिश होन के कारण इन सभी अंचलों में घने जंगल देखे जाते हैं । इनके अलावा दक्षिण भारत के अधिकांश इलाके में और पूर्व तथा उत्तर - पूर्व भारत के कई अंचलों में जंगल देखे जाते हैं । यहाँ के रहनेवाले लोग जंगल में उत्पन्न द्रव्यों पर निर्भर करके अपनी आजीविका चलाते हैं । अरण्य का शांत और सुंदर परिवेश सभ्यता की विशेष रूप से धर्म, दर्शन और साहित्य की उन्नति में मदद करता है ।

(4) उपकूल का समतल अंचल :

हमारे देश के पश्चिम-पार्श्व में अरब सागर और पूर्व पार्श्व में बंगाल की खाड़ी के उपकूलों में समतल अंचल देखे जाते हैं । पश्चिम के समतल क्षेत्र की अपेक्षा पूर्व उपकूल का समतल अंचल ज्यादा फैला हुआ है । पश्चिम उपकूल को समतल भूमि गुजरात से केरल तक और पूर्व उपकूल की समतल भूमि ओड़िशा से लेकर तमिलनाडू तक फैली है । सावरमती, माही, नर्मदा, ताप्ती जैसी नदियों की चिकनी मिट्टी से यह समतल अंचल बना है । जबकि महानदी, कृष्णा, काबेरी, गोदावरी आदि नदियों की चिकनी मिट्टी से पूर्व उपकूल की समतल भूमि गठित हुई है । समुद्र के तटवर्ती समतलभूमि बहुत ही उर्वर है और कृषिकार्य के लिए बहुत उपयोगी भी । इसलिए इन अंचलों में घनी आबादी दिखाई देती है । उपकूल के समतल अंचलों में जो नदियों में मुहाने हैं , पहले वहाँ बहुत - से बंदरगाह बने थे, उन्हींसे सामुद्रिक वाणिज्य का कारोबार काफी होता था । इस अंचल में अनेक शहर भी बसे हुए मिलते हैं ।

भारत के पूर्व और पश्चिम उपकूल के पासवाले समतल अंचल में बसे शहरों के नाम नक्शा देखकर लिखिए।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पचास शब्दों में दीजिए ।

(क) "मनुष्य की अतीत की घटनाओं की धारावाहिक क्रमिक प्रगति इतिहास है" - यह क्यों कहा गया है, लिखिए।

(ख) इतिहास क्यों पढ़ना चाहिए ?

(ग) इतिहास जानने के विविध आधार क्या - क्या हैं, बताइए ।

(घ) कालक्रम से इतिहास को कितने विभागों में बाँटा गया है ?

(ङ) भारत की भौगोलिक अवस्था से उसका इतिहास कैसे प्रभावित हुआ है ?

(च) भारत के कौन - से दो प्राकृतिक वैशिट्य विशेष रूप से उसके इतिहास को प्रभावित करते हैं, कारण बताकर लिखिए।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 तीस शब्दों में लिखिए।

(क) प्राकृतिक गठन की विविधता के अनुसार भारत को कितने अंचलों में विभाजित किया गया है, उनके नाम लिखिए।

(ख) सँकरे गिरिपथों (सुरंग) से होकर कौन लोग भारत में आए हैं और उन्होंने कैसे हमारी संस्कृति को प्रभावित किया है ?

(ग) पश्चिम घाट पर्वतमाला कहाँ से कहाँ तक फैली है और यह अंचल किन कारणों से घने जंगल से भरा है ?

(घ) समतल अंचल कैसे बना है और उसमें किन कारणों से विविध अनाज उत्पादित होते हैं ?

(ङ) किन कारणों से नदी किनारे प्राचीन सभ्यता बसी थी ?

(च) किन अंचलों में घनी आबादी मिलती है और क्यों ?

3. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर एक एक वाक्य में दीजिए।

(क) कहाँ बहुत बंदरगाह थे ?

(ख) जंगल का शांत और सुंदर परिवेश किन - किन क्षेत्रों में प्रगति में मदद करता रहा है ?

(ग) हमारे देश में किन स्थानों पर समतल अंचल दिखाई पड़ते हैं ?

(घ) कौन - सा समतल अंचल ज्यादा फैला हुआ है ?

(ङ) पश्चिम उपकूल की समतल भूमि किसे कहते हैं ?

4. कोष्ठक में से सही शब्द / संख्या चुनकर खाली स्थनों को भरिए।

(क) आज से लगभग .... लाख साल पहले धरती पर मनुष्य पैदा हुआ था, ऐसा अनुमान किया जाता है ।

(12, 13, 14, 15)

(ख) प्राचीन काल में .... पत्ते पर लिखा जाता था ।

(वट, ताड़, कटहल, शाल)

(ग) कालक्रम से इतिहास को .... अंशों में बाँटा गया है ।

(2, 3, 4, 5)

(घ) भारत का .... वृहत्तम प्राकृतिक अंचल है ।

(हिमालय का पार्वत्य अंचल, उत्तर का समतल अंचल, पश्चिम का रेगिस्तान अंचल, केन्द्रस्थ मालभूमि उपत्यका)

5. रेखांकित पद/ पदों को न बदलकर भ्रम संशोधन कीजिए।

(क) चिंपाजि के क्रमविकाश से मनुष्य बना है ।

(ख) इतिहास शब्द लैटिन के शब्द हिष्टो से आया है ।

(ग) भुवनेश्वर के पास रत्नगिरि में 2200 साल पुराना शिलालेख देखने को मिलता है ।

(घ) बाणभट्ट एक विदेशी परिव्राजक (यात्री) हैं।

(ङ) हमारे देश के पूर्व दिशा में अरब सागर हैं ।

6. नीचे दिए गए उत्तरों में से कौन सही है, उसके सामने (✓) निशान लगाओ ।

(क) नर वानर का संबंधी है -

- बाघ
- गोह
- ऊँट
- ओरंग ओटान

(ख) मनुष्य के बौद्धिक गुण से सामंजस्य रखनेवाला प्राणी है -

- गुरिल्ला
- चिपांजि
- लाल मुँहवाला बंदर
- गीबन

(ग) हर्षचरित की रचना इन्होंने की थी-

- कौटिल्य
- पतंजलि
- पाणिनि
- बाणभट्ट

(घ) एक पुरातात्त्विक उपादान का उदाहरण है -

- उपनिषद
- मृद्भाण्ड
- वेद
- महाभारत

(ङ) ईरान देश भारत की किस दिशा में स्थित है ?

- पूर्व
- पश्चिम
- उत्तर
- दक्षिण

आपके लिए काम :

विभिन्न प्राचीन शहरों / मंदिरों का चित्र संग्रह कीजिए और वे क्यों प्रसिद्ध हैं, लिखिए।

द्वितीय अध्याय

सर्वप्राचीन समाज

एक शिक्षक विद्यालय के कुछ छात्रों के साथ एक संग्रहालय में गए थे । संग्रहालय के सभी कमरों में बच्चों ने घूम कर देखते समय एक कोठरी में बहुत से पत्थर अलग - अलग काँच के बक्सों में रखे देखा। उन्हें देखकर विकास ने शिक्षक से पूछा, "सर, इन मामूली पत्थरों को ऐसे साज-संभाल कर रखने का क्या कारण है ?" यह सुन शिक्षक ने कहा,

"आज से लगभग पंद्रह लाख साल पहले वनमानुष की तरह नर वानर से आदि मानव पैदा हुआ था । उनकी बुद्धि सिर्फ खाद्य संग्रह करना और अपनी सुरक्षा तक सीमित थी । भूख की चपेट से बचने के लिए वह जीवजंतुओं को मारकर उनका कच्चा मांस खाता था । किसी एक जगह शिकार या फलमूल का अभाव होता था तो वह दूसरी जगहों में चला जाता था । आदिम मानवों को वस्त्र का उपयोग मालूम न था । वे नंगे घूमते थे । वे बात करना नहीं जानते थे । कई तरहों के संकेतों से वे मनोभावों को व्यक्त करते थे । ऐसे यायावर की जिन्दगी जीने में उसे बड़ी तकलीफ होती थी और वह जोखिम से भरी होती थी।"

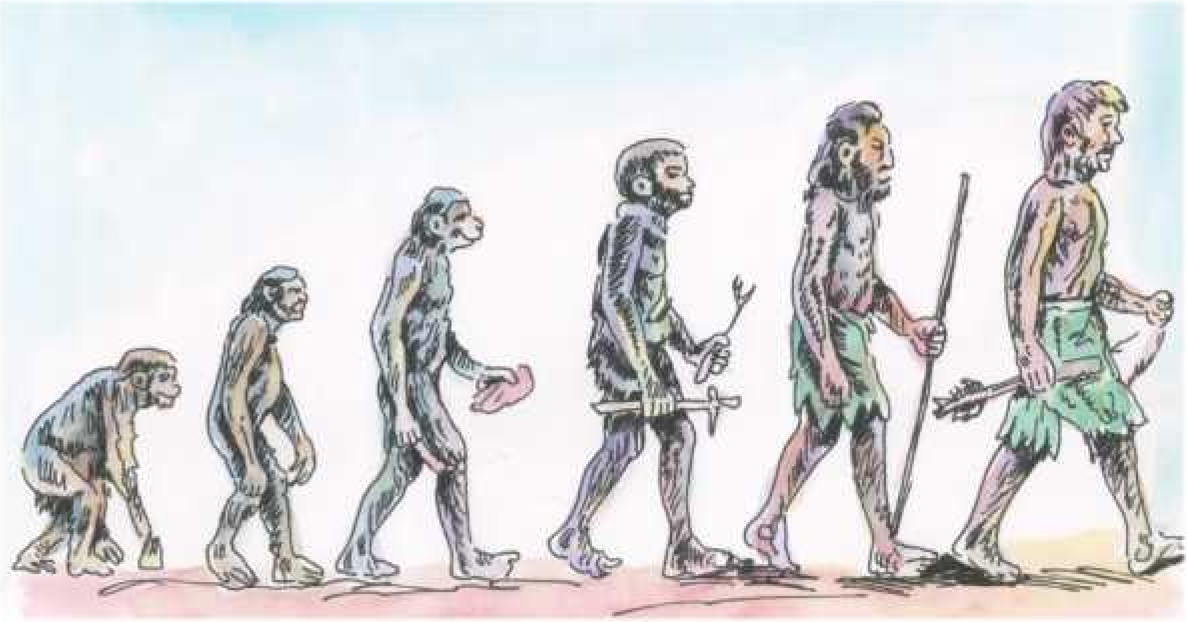

मनुष्य क्रमविकास

आप वनमानुष और आज के मनुष्यों के बीच जो-जो पार्थक्य देखते हैं, लिखिए।

अपने जीवन को सुरक्षित रखने के लिए आदि मानव ने पत्थर का इस्तेमाल किया । बहुत दिनों तक यह पत्थर ही उसके नित्य उपयोग की चीज था । यह उसका मुख्य अस्त्र था । इसलिए इस युग को 'प्रस्तर युग' कहा जाता है । पत्थर से बने औजार और हथियारों के उपयोग पर विचार करके इस युग को दो भागों में बाँटा गया है, जैसे- (क) पुरातन प्रस्तर युग (ख) नूतन प्रस्तर युग।

(क) पुरातन प्रस्तर युग :

पुरातन प्रस्तर युग में मनुष्य भोजन संग्रह करने के लिए और अपनी सुरक्षा के लिए पत्थर को ही एक मात्र माध्यम के रूप में इस्तेमाल करते थे । उनके इस्तेमाल किए जाने वाले अस्त्र-शस्त्र चिकने या सुंदर नहीं थे । इसलिए इस युग को पुरातन प्रस्तर युग कहा गया । अपने खाद्य संग्रह के लिए और यायावर जीवन के लिए इस युग के मनुष्य को कई बातों पर ध्यान देना पड़ता था । पहले, वे जिस स्थानों में कुछ दिन रहते थे, उस अंचल में फल-मूल या शिकार के अभाव होने पर वे उस स्थान को छोड़कर कहीं और चले जाते थे । दूसरा, ऋतुओं के अनुसार विभिन्न पेड़-पौधों में भिन्न-भिन्न फूल-फल दिखाई देते थे । इसलिए ऋतु परिवर्तन के अनुसार वे स्थान को बदल देते थे। तीसरा, प्रचुर जल और उर्वर चारण भूमि के लिए नदियों के कूल-किनारे ही पशुपक्षियों के वासस्थान होते थे । इसलिए पशु शिकार करने से एक नदीकूल से दूसरे नदीकूल पर चले जाते थे।

आदिमानव क्यों पत्थर से बने औजारों का इस्तेमाल करते थे, सोचकर लिखिए।

हथियार और औजार :

पंजाब की सोन नदी, उत्तर प्रदेश की बिला नदी का पठार और दक्षिण की मालभूमि के कई स्थानों से उस काल में बने पत्थर की कुल्हाड़ी, फावड़ा और बरछा आदि आविष्कृत हुए हैं । अनुमान है कि इनको वे खोदने, काटने , कूटने और शिकार करने के कार्यों में इस्तेमाल करते थे । इनके हाथ- हथियार अभी चिकने, तराशे हुए नहीं थे, मगर इन अस्त्र-शस्त्रों की मदद से आसानी से जानवरों का शिकार कर लेते ते । पेड़ों से छाल निकाल लेते थे, और जानवरों की खाल भी उतार लेते थे । बाद में, इनको एक कठिन पत्थर मिल गया । उन्होंने उसे पीटने, कूटने उन्हें घिसने के कामों में लगाया। चेन्नई के पास उस युग में बने कठिन पत्थर के हथौड़े मिले हैं ।

पुरातन प्रस्तर युग के हथियार

वस्त्र और वासगृह :

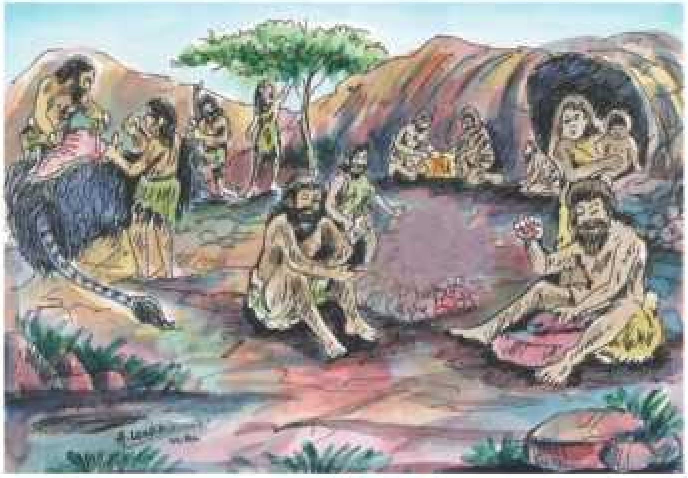

आदिमानव

पुरातन प्रस्तर युग में मनुष्य खाद्य संग्रह करता था और भोजन के लिए प्रकृति पर निर्भरशील रहता था । भूख लगने पर वह खा लेता था । जाड़े और धूप से बचने के लिए अपने शरीर को ढ़क नहीं पाता था । काल-क्रम से उसने पशुओं के चमड़ों और पेड़ों के छालों को वस्त्र की तरह इस्तेमाल करना सीखा। जानवरों के हमलों से अपने को बचाने के लिए वृक्ष के कोटर और प्राकृतिक पहाड़ी गुफा में आश्रय लेता था ।

आग का उपयोग :

इस युग के मनुष्य ने पहले देखा कि पत्थर से पत्थर घिसता है तो आग निकलती है । वैसी आग पेड़-पौधों और डालियों को जला डालती है। तब जलाने के लिए उसने यह कौशल अपनाकर आग निकाली। आग के इस्तेमाल से उसके जीवन-शैली में परिवर्तन हुआ ।

अग्नि का उद्‌भावन

1. आग से अपने शरीर को जाड़े से बचा सका।
2. आग की रोशनी से अपने को हिंस्र प्राणियों के हमले से बचाया ।
3. आग में पशु मांस भुनकर खाने लगा। कच्चे मांस से भुना मांस ज्यादा स्वादिष्ट है, यह जान गया । दाक्षिणात्य की कई गुंफाओं में जमी राख से यह अनुमान लगाया गया है कि इस युग का मनुष्य आग का उपयोग जानता था ।

चित्रकला :

विभिन्न गुफाओं से इस युग के मनुष्य जिस चित्रकला बनाते थे, उसका पता चलता है । फ्रांस, स्पेन, इटली और जर्मनी की विभिन्न गुफाओं और पहाड़ों पर पशुपक्षी, बल्गा हिरन का शिकार, दौड़ते बुनैले भैंसों आदि के चित्र अंकित हैं । ओड़िशा के गुड़हांडी, विक्रमखोल, माणिकमड़ा, योगीमठ आदि के पहाड़ों पर यह चित्रकला देखने को मिलती हैं ।

हमारे देश में कई इलाकों में आदिवासी लोग आज भी शिकार करके और फलमूल संग्रह करके यायावर जीवन जी रहे हैं । केरल में रहनेवाले पाण्डाराम, ओड़िशा के कोरापुट के बंडा जाति के आदिवासी उसी प्राचीन संस्कृति के साथ आज भी जीवन बिता रहे हैं ।

आदिमानव की चित्रकला

(ख) नूतन प्रस्तर युग :

हजारों साल के यायावर जीवन बिताने के बाद मनुष्य स्थायी रूप से बसने लगा । अचानक एक दिन उसने देखा कि बीज मिट्टी में गड़कर रहता है, और बाद में पानी में भीगकर अंखुवाता है, पेड़ उग आता है । यहीं से कृषि कार्य की शुरुआत हुई । अब उसे भोजन संग्रह करने के लिए इधर-उधर भटकना न पड़ा । कालक्रम से वह नदी किनारे झोंपड़ी बनाकर स्थायी रूप में निवास करने लगा । बाद में गेहूँ, जौ, धान, फल और सब्जियों की खेती करना सीख गया ।

पशुपालन :

कृषिकार्य में सहायता के लिए इस युग के मनुष्य ने पहले पशुपालन शुरू किया । पहले शिकार में मदद करने के लिए कुत्ते पाले । धीरे - धीरे गाय, भेड़-बकरी आदि पशुओं का पालन किया । घोड़ों और गदहों को बाद में माल ढ़ोने के लिए काम में लगाया । नदीकूलों के पास काफी जल और उर्वर मिट्टी मिल गई । अब अनाज उत्पादन के लिए आसानी हुई। पशुपालन हेतु, वह बहुत से लाभ पाता गया ।

नूतन प्रस्तर युग का पशुपालन

- पशुओं से मिलने वाले दूध और मांस को भोजन के रूप में इस्तेमाल किया ।
- पोशाक बनाने के लिए जानवरों के चमड़े और भेड़ के रोयों को काम में लाया ।
- गदहों, घोड़ों और बैलों को माल परिवहन में लगाया।
- पशुओं के गोबर को खाद के रूप में खेत क्यारियों में इस्तेमाल करने लगा ।

पहिये का इस्तेमाल :

पहिये के इस्तेमाल से नूतन प्रस्तर युग के लोगों को जीवन में जबर्दस्त परिवर्तन आया । इसकी मदद से वे तरह - तरह के मिट्टी के पात्र बना सके । फिर पहिये को गाड़ी में लगाकर माल-परिवहन जल्दी से और आसानी से कर सके । बाद में पहियों ने उनको ताँत बनाने में मदद की । इसीसे वे सूत कात सके और कपड़े बुनने लगे ।

आजकल आप पहिए को किस-किस कार्य में इस्तेमाल करते हैं, उसकी एक तालिका बनाइए।

मृद् पात्र :

भारत के कई अंचलों से इस युग के लोग उपयोग कर रहे किस्म-किस्म मिट्टी पात्रों (मृद् पात्र) का पता चला है । इनको वे बनाते थे और रोजमर्रा के कार्यों में लगाते थे । इन पात्रों से वे खाना बनाते थे और अनाज को संभाल कर रखते थे; ऐसा अनुमान किया जा सकता है ।

हथियार और औजार :

नव पाषाण काल में मनुष्यों के द्वारा इस्तेमाल किए गए अस्त्र - शस्त्र प्राचीन युग के अस्त्र - शस्त्रों की तुलना में ज्यादा अच्छे, सुंदर, धारदार और चिकने होते थे। इसलिए इस युग को नूतन प्रस्तर युग के नाम से अभिहत किया जाता है । शिकार के अलावा ये हथियार दूसरे कामों में लगाए जाते थे । पत्थर और अस्थि की मूठ लगे अस्त्र-शस्त्र, बाँस के धनु और पात के गुण आदि वे इस्तेमाल करते थे, इसकी सूचना मिलती है । इसके अलावा वे हड्डी से सुई बनाकर उसका इस्तेमाल करते थे । चमड़े से बने कपड़ों को सिलाने के लिए यह काम में आती थी । ओड़िशा के मयूरभंज जिले के कुचेइ , कुलिअणा, बइदिपुर आदि स्थानों से नूतन प्रस्तर युग के हथियार /औजार मिले हैं ।

नूतन प्रस्तर युग के औजार

अस्त्र-शस्त्र को चिकने और धारदार बनाने के लिए उस युग के लोगों ने पत्थर को क्या बनाया होगा ? लिखिए।

धार्मिक विश्वास :

नूतन प्रस्तर युग के लोग प्रकृति के उपासक थे । इसलिए प्राकृतिक विविध रूपों, जैसे-नदी, पर्वत, सूर्य, वृक्ष आदि की वे पूजा करते थे । वे परजन्म में विश्वास करते थे । कोई मर जाता था तो उसके साथ उसके द्वारा काम में लाए गए खाने की चीजें, हथियार आदि को भी गाड़ देते थे।

कालक्रम से इस युग के लोग गोष्ठी या दलों में रहने लगे । अवसर के समय अपने को विभिन्न कामों में नियोजित करते थे । इस प्रकार समय के साथ ताल मिलाते हुए मनुष्य सभ्यता के द्वार पर आ पहुँचा ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पचास शब्दों में दीजिए ।

(क) पुरातन प्रस्तर युग के लोगों की जीवनशैली कैसी थी ?

(ख) आग का उपयोग जान लेने पर पुरातन प्रस्तर युग के लोग कैसे उपकृत हुए ?

(ग) पुरातन प्रस्तर युग के लोग हथियार औजारों को किन - किन कामों में लगाते थे ?

(घ) नूतन प्रस्तर युग के औजार पुरातन प्रस्तर युग के औजारों में क्या अंतर है ? लिखिए।

(ङ) आदिमानव किन पशुओं को पालता था और उनसे उसे क्या लाभ मिलता था ?

(च) मनुष्य पहले किसी नदी किनारे बसना चाहता था, क्यों ?

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न के उत्तर तीस शब्दों में लिखिए।

(क) नूतन प्रस्तर युग के लोगो ने कैसे कृषिकार्य की शुरूआत की और वे किन चीजों की खेती करते थे ?

(ख) पहिये का उपयोग करके नुतन प्रस्तर युग के लोग क्या - क्या काम करने लगे ?

(ग) पुरातन प्रस्तर युग और नुतन प्रस्तर युग के लोगों में क्या अंतर था ?

(घ) पुरातन प्रस्तर युग के लोग एक नदीकूल से दूसरी नदी के कूल पर क्यों जाते थे ?

(ङ) नूतन प्रस्तर युग के लोग प्रकृति के उपासक थे, कैसे पता चलता है ?

3. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए।

(क) आदिमानव अपने निवास स्थान को क्यों बदलना रहता था ?

(ख) भूख से बचने के लिए आदिमानव क्या करता था ?

(ग) आदिमानव ऋतु परिवर्तन के साथ स्थान परिवर्तन करता था, क्यों ?

(घ) अपने को सुरक्षा देने के लिए पुरातन प्रस्तर युग के लोग किन चीजों का उपयोग करते थे ?

(ङ) भारत के किन - किन स्थानों से प्रस्तर युग के हाथ-हथियार - औजार आविष्कृत हुए हैं ?

(च) कठिन पत्थर का पता चलने पर आदिमानव ने उसे किस काम में लगाया ?

(छ) आदिमानव किन - किन चीजों को वस्त्र के रूप में इस्तेमाल करता था ?

(ज) जानवरों के आक्रमण से बचने के लिए आदिमानव कहाँ आश्रय लेता था ?

(झ) ओड़िशा के किन-किन स्थानों में आदिमानव के द्वारा चित्रित चित्रकला का पता मिला है ?

(ञ) ओड़िशा के लिए किस स्थान से नूतन प्रस्तर युग के हथियार और औजार मिले हैं ?

4. कोष्ठक से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो ।

(क) पुरातन प्रस्तर युग के लोगों की चित्रकला का पता .... से मिला है ।
(पत्थर, गुफा, पहाड़, कुटिया)

(ख) आजकल केरल के .... यायावर का जीवन बिताते हैं ।
(पाण्डाराम, बण्डा, परजा, जुआंग)

(ग) नूतन प्रस्तर युग में माल परिवहन के लिए ....को इस्तेमाल करते थे ।
(भैंस, घोड़ा, हाथी, हिरन)

(घ) प्रस्तर युग के मनुष्य पहिये का इस्तेमाल .... काम में मदद करता था ।
(कृषि, शिकार, परिवहन, गृहनिर्माण)

(ङ) मनुष्य पहले .... स्थान में स्थायी होकर रहना सीखा ?
(पार्वात्यांचल, नदीकूल, जंगल, बर्फ से ढ़का स्थान)

5. 'क' स्तंभ में दिए शब्द के साथ 'ख' स्तंभ से सही शब्द चुनकर जोड़िए।

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
गुफा	पोशाक
कुत्ता	खाद
पशु का चमड़ा	गृह निर्माण
गोबर	शिकार करना
पहिया	परिवहन
	आश्रय

आपके लिए काम :

आज के जमाने में पहिए को हम किन - किन कार्यों में इस्तेमाल करते हैं? उसकी तालिका बनाइए ।

तृतीय अध्याय

प्रथम कृषक और पशुपालन

पिताजी के साथ आलोक एक बार रेलगाड़ी से जा रहा था । रास्ते में बहुत से गाय - बैल, भेड़-बकरी आदि को चरते देखा । उनको कुछ लोग निगरानी कर रहे थे । वे चरवाहे थे । उसने देखा कि बीच-बीच में खेत क्यारियाँ भी थीं। इन सब के बारे में जानने के लिए आलोक ने पिताजी से कई सवाल पूछे। पिताजी ने क्या जवाब दिया, आइए जानें।

आज से 10,000 वर्ष पूर्व इस्राइल के ज़ेरिको नाम के स्थान में लोगों ने सबसे पहले कृषिकार्य की शुरूआत की थी । इसके प्रमाण मिले हैं । लगभग 12,000 वर्ष पहले मौसम में एक बड़ा परिवर्तन हुआ था । मौसम की तब्दीली के साथ आदमी अपने चारों ओर की स्थिति के बारे में ज्यादा ज्ञान प्राप्त कर सका । ये सारी घटनाएँ नूतन प्रस्तर युग की हैं ।

किसी एक जगह स्थायी रूप में निवास करने से लोगों को क्या - क्या उपकार मिले, अपने साथियों से चर्चा करके लिखिए।

कृषिकार्य कैसे आरंभ हुआ, उसके बारे में ठीक से कुछ पता नहीं चलता । अनुमान लगाया जाता है कि मनुष्य ने बीज को मिट्टी पर पड़ने के बाद उससे अंकुर निकल देखकर खुद काम शुरू किया होगा । खेती करने से लोग कई तरह की फसलें पैदा करने लगे । गेहूँ और जौ की खेती पहले शुरू हुई थी । नूतन प्रस्तर युग का जो हँसिया मिला है, उसे देखकर यह अनुमान किया जा सकता है, फसल काटने में इसे लगाया जाता था । कृषिकार्य करने के बाद स्थान परिवर्तन न करके एक ही स्थान पर घर बनाकर रहने को लोगों ने पसंद किया होगा ।

आपके अंचल में खेती करने के लिए जो औजार (मशीन) काम में लाए जाते हैं, उनकी एक तालिका बनाइए।

जलवायु तापमात्रा बढ़ने के कारण तृण जाति के पौधे दिखाई दिए । हिरन, बकरी, भेड़, गाय-बैल जैसे पशु वहाँ रहने लगे । खेती करने के साथ-साथ लोग पशुपालन करने लगे । कुत्ते को पहले पालतू जानवर के रूप में

रखा गया था। फिर लोगों ने सूअर, भेड़ , गाय गदहा आदि भी पालने लगे। जरूरत के मुताबिक मवेशियों (पशुओं) को दल या झुंडों में रखा गया । पालतू जानवरों को हिंस्र जानवरों से बचाने के लिए कोशिश की जाने लगी । लिहाजा पशुपालन एक नियमित काम बन गया ।

बहुत सारे पशु-पक्षी हमारे उपकार करते हैं । उनकी देखभाल और सुरक्षा के लिए आप क्या कर सकते हैं ? लिखिए।

भारत में नूतन प्रस्तर युग विलंब से शुरू हुआ, ऐसा अनुमान लगाया जाता है । भारत में नव पाषाण काल के लोगों के कई निवास स्थान मिले हैं । दक्षिण और पूर्व भारत में नव पाषाण युग उत्तर भारत से बहुत देर में शुरू हुआ है । ऐसा विश्वास किया जाता है ।

इस समय इस्तेमाल में लाए गए हथियार-औजार काफी चिकने, धारदार और सुंदर थे । पशुओं की हड्डी से भी अस्त्रशस्त्र का निर्माण किया जाता था । मूठवाले अस्त्रशस्त्र भी उपयोग में थे । कई तरह के मृद्भांड बनाना भी लोगों का एक दूसरा पेशा था । लोग अनाज, पीने का पानी, पशुओं के दूध को संभाल कर रखने और रसोई के लिए कई तरह से मिट्टी के पात्रों का इस्तेमाल करते थे। पहले हाथ से मिट्टी के पात्र बनाते थे। बाद में कुम्भार के पहिए से उनको बनाया गया। मिट्टी के पात्रों को खूबसूरत करने के लिए उन्हें चिकने और चित्रित किया जाता था।

नूतन प्रस्तर युग से अंतिम भाग में एक बड़ा परिवर्तन आया । पाषाण से बने और जानवरों की हड्डियों से बने कई तरह के हथियार इस्तेमाल करते हुए लोग धातु का इस्तेमाल करना सीख गए । ताँबे की धातु को पहले मनुष्य इस्तेमाल करते थे । ताँबे के साथ टीन और दस्ता मिलाकर ब्रोंज या काँसे की धातु बनाई गई । इसलिए इस काल को ताम्र पाषाण काल कहते हैं । इस युग में पत्थर और धातु दोनों से हाथ के बने हथियार इस्तेमाल किए जाते थे । कर्णाटक के मैसूर के पास ब्रह्मगिरि में इस धातु से बने चाकू और हथौड़ी देखने में आई हैं ।

ताँबा और काँसे को हम किस किस कार्य में लगाते हैं, ध्यान से देखिए और लिखिए।

पुरातत्त्वविदों ने भारत के विभिन्न स्थानों में खनन करके पहले खेती करनेवाले लोगों के बारे में कुछ तथ्य प्राप्त किए हैं । जला हुआ अनाज, गेहूँ , जौ के साथ मसूर जैसे कई दालों के बचे-खुचे अंश जम्मू और कश्मीर के बुरजाहम और पाकिस्तान के मेहेरगढ़ से आविष्कृत हुए हैं ।

मेहेरगढ़ :

पाकिस्तान देश के मेहेरगढ़ के लोगों ने सर्वप्रथम कृषिकार्य करके स्थायी रूप से निवास करने का उद्यम किया था। यहाँ लोग गाँव बसा कर रहने लगे। जले अनाज और कई तरह के जानवरों की हड्डी यहाँ से मिली है । लगभग 7000 वर्ष ई.पू. यहाँ खेती का काम, पशुपालन, स्थायी निवास की बातों का पता चला है ।

मेहेरगढ़ के सभी घर मामूली किस्म के हैं । मिट्टी से गृहनिर्माण हुआ था । घर सब वर्गाकार या समकोणी चतुर्भुज आकार वाले हैं । यहाँ से पत्थर की बनी हथौड़ी, सीप से बने गहने, चूने का पत्थर, नीलकांत मणि, गाढ़े नीले रंग का पत्थर और बालू पत्थर का आविष्कार हुआ है । पहले मृत् पात्रों का उपयोग कम होता था, लेकिन कालक्रम से उसमें बढ़ोत्तरी आई । काँच की माला भी बनाई जाती थी । मिट्टी पात्रों को अनेक चित्रों से सुंदर बनाया जाता था । वहाँ से हिरन, सूअर, भेड़ - बकरी आदि पशुओं की हड्डियाँ पाई गई हैं ।

आप जहाँ रहते हैं या देखे हुए किसी ग्राम का दृश्य वर्णन कीजिए।

इस काल में मृत व्यक्तियों को समाधि (दफनानादी) जाती थी । मृत शरीर का सयत्न संस्कार करना मेहेरगढ़ के आदिवासियों की एक विशेषता थी । शायद वे विश्वास करते थे कि मरने के बाद आदमी कभी जिन्दा हो सकता है । इसलिए हर मृत शरीर का वे बड़ी सावधानी से समाधि में रखते थे । मृत शरीर के साथ पशुओं को भी समाधि दी जाती थी । कई समाधियों से कुत्ते की हड्डियाँ मिली हैं ।

बुरजाहम :

संप्रति जम्मू कश्मीर के श्रीनगर से लगभग 20 कि.मी. दूर बसे बुरजाहम में नवपाषाण युग की बस्ती थी । यहाँ लोगों ने गड्ढ़ा खोद कर घर बनाते थे, जिसे हम 'गर्भगृह' कह सकते हैं । मिट्टी के भीतर बने प्रदेश द्वार का आकार गोल होता था और सीढ़ियों की मदद से नीचे जाने का इंतजाम था । इस 'गर्भगृहों' का आकार काफी बड़ा था। जली हुई राख, लकड़ी, कोयला और चिकने पात्रों के भग्नावशेष उस स्थान में देखने को मिलते हैं ।

गर्त्तगृह

जाड़े से बचने के लिए लोग इन गर्भगृहों में रहते थे । अस्थि से बने कई औजार यहाँ से मिले हैं ।

उत्तर - पूर्व भारत में नूतन प्रस्तर युग का प्रमाण :

भारत के उत्तर - पूर्व हिस्से में कई स्थानों पर नूतन प्रस्तर युग की बस्तियाँ आविष्कृत हुई हैं। उनमें से असम का पार्वत्य अंचल एक है । असम के दुजालि हाडिंग नव पाषाण काल का एक प्रसिद्ध स्थान है । यहाँ से चिकने पत्थर से बने औजार, मिट्टी के पात्र, रसोई सामग्री आदि चीजें आविष्कृत हुई। जेड़ नाम का एक कीमती पत्थर चीन देश से आया हुआ लगता है । जीवों के अवशिष्टांश से बने कई तरह के हथियार भी यहाँ से मिले हैं । पेषण

यंत्र भी आविष्कृत हुआ है । रसोई बनाना, अनाज को संभाल कर रखने के लिए अनेक मिट्टी के पात्र इस्तेमाल किए गए हैं । मेघालय की गारो पर्वतमाला और त्रिपुरा के कई स्थानों में नूतन प्रस्तर युग के अवशेष देखने को मिलेंगे ।

इन सबसे मालूम पड़ता है कि एक ग्रामीण सभ्यता भारत और पाकिस्तान के कई स्थानों में विकसित हुई थीं । उसके बाद शहरी सभ्यता शुरू हुई ।

नूतन प्रस्तर युग के कई महत्त्वपूर्ण स्थान

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों में दीजिए।

(क) जलवायु तापमात्रा के परिवर्तन से कैसे मनुष्यों के जीवन-यापन की प्रणाली प्रभावित हुई ?

(ख) नूतन प्रस्तर युग के अंतिम भाग में किस तरह का परिवर्तन हुआ ?

(ग) ग्रामीण सभ्यता पहले पाकिस्तान के किस स्थान पर उठ खड़ी हुई थी ? इस तथ्य के पक्ष में कुछ सूचनाएँ दीजिए।

(घ) उत्तर - पूर्व भारत में कैसे नूतन प्रस्तर युग के संकेत मिले हैं ?

2. संक्षेप में उत्तर 30 शब्दों में दीजिए।

(क) आदिमानव कैसे कृषक और पशुपालक हो सका ?

(ख) मेहेरगढ़ से नूतन प्रस्तर युग के बारे में आप क्या जान सके ?

(ग) कौन - कौन सी धातुओं का उपयोग मनुष्य पहले जान गया ?

(घ) बुरजाहम में आविष्कृत नूतन प्रस्तर युग के बारे में लिखिए ।

3. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए।

(क) नूतन प्रस्तर युग में क्या - क्या परिवर्तन देखे गए ?

(ख) आदिमानव ने कैसे कृषिकार्य का आरंभ किया ?

(ग) कृषिकार्य की क्या उपयोगिता थी ?

(घ) तृण जाति के उद्भिदों के आविर्भाव के बाद क्या परिवर्तन हुआ ?

(ङ) आप ताम्र प्रस्तर युग का क्या मतलब समझते हैं ?

(च) बुरजाहम के गर्भगृह किस काम में आते थे ?

(छ) किस स्थान से जीवावशेषों से बने अस्त्रशस्त्र मिले हैं ?

(ज) असम के अलावा भारत के किन और दो स्थानों में नूतन प्रस्तर युग के विषय में पता चला है ?

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) लगभग .... वर्षों पूर्व घरती के मौसम में बड़ा परिवर्तन आया था ?

(ख) नूतन प्रस्तर युग में मिले .... फसल काटने में मददगार हुआ ।

(ग) नूतन प्रस्तर युग में .... को मनुष्य ने प्रथम पालतू जानवर बताया।

(घ) पहले भारत के ....अंचल में नूतन प्रस्तर युग आरंभ हुआ ।

(ङ) नूतन प्रस्तर के अस्त्रशस्त्र .... और .... थे।

(च) कश्मीर के .... में नूतन प्रस्तर युग की मानव बस्ती का सुराग मिला है ।

(छ) दुजालि हांडिम में मिले जेड कीमती पत्थर .... से आया था, ऐसा विश्वास किया जाता है ।

(ज) मेहेरगढ़ के घर .... या .... आकार में निर्मित होते थे ।

आपके लिए काम

ताँबे और काँसे हम किस-किस काम में लगाते हैं ? ढूंढ कर लिखिए ।

भारत का प्रथम शहरीकरण

सुरेखा ने अपने पिताजी के कमरे में एक पुस्तक देखी । उस पुस्तक पर एक पुराने अखबार का एक आवरण पृष्ठ था । उसमें एक खबर लिखी हुई थी - "भारतीय पुरातत्त्वविदों ने हरियाणा के बेबुआ ग्राम से हरप्पा सभ्यता के लोगों के दसकंकाल आविष्कार किया है ।" सुरेखा ने पिताजी से पूछा - हरप्पा सभ्यता क्या है / उत्तर में पिताजी ने जो कुछ कहा, आइए सुनें ।

नूतन प्रस्तर युग में कृषिकार्य और पशुपालन के कारण लोग धीरे - धीरे स्थायी रूप से एक जगह निवास करने लगे। फलस्वरूप ग्रामीण जीवन का शुभारंभ हो गया । भारतीय उपमहादेश में नूतन प्रस्तर युग की बस्तियाँ पहले सिंधु नदी की पश्चिम दिशा में शुरू हुआ । फिर दूसरे अंचलों को फैलने लगीं । पुरातत्त्वाविद् यह विश्वास करते हैं कि पाकिस्तान के मेहेरगढ़ में नूतन प्रस्तर युग की संस्कृति का पहले विकास हुआ था। कृषि के विकास और धातुओं के इस्तेमाल होने से कई बस्तियाँ शहर और नगर बनती गईं । खास कर कांसे धातु का इस्तेमाल के समय भारत के उत्तर - पश्चिम में कई नगर उठ खड़े हुए । हर नगर को विस्तृत खेती की जमीन, जंगल और नदियाँ घिर कर थीं । कालक्रम से वे नगर ध्वस्त होकर जमीन में गड़ गईं । पुरातत्त्वविदों ने जमीन खोद कर उनको मिट्टी के नीचे से बाहर निकाला है । उन्होंने सिंधु नदी की घाटी में कई स्थानों पर खुदाई करके दो प्राचीन शहरों का आविष्कार किया था । ये दो शहर हैं, हरप्पा और मोहेंजोदारो । अब ये दोनों स्थान पाकिस्तान में हैं । इस सभ्यता का आरंभ लगभग ईसा पूर्व 5000 वर्ष पहले हुआ था, ऐसा इतिहासकार और पुरातात्त्विक विद्वान अनुमान करते हैं ।

1921 ईस्वी में पुरातत्त्वविद् दयाराम साहणी जमीन के नीचे से हडप्पा शहर का आविष्कार किया था । यह सिंधु नदी की एक उपनदी रावी के किनारे है । उसी प्रकार 1922 ईस्वी को पुरातत्त्वविद् राखलादास बनर्जी ने सिंधु नदी के किनारे वसे मोहेंजोदाडो को धरती के नीचे से आविष्कार किया था । मोहेंजोदाडो का अर्थ है "मृत नगरी" । हडप्पा से मोहेंजोदाडों को दूरता लगभग 350 कि.मी. है । लेकिन इन दो शहरों में काफी सामंजस्य है ।

हर्प्पा और मोहेंजादारो, ये दोनों शहर सिंधु नदी (उपत्यका में अवस्थित है, इसलिए इसे सिंधु सभ्यता का नाम दिया गया है । हरप्पा में पहले खुदाई हुई थी, इसलिए इसे हरप्पा सभ्यता कहा जाता है । इस हरप्पा

सभ्यता का काल निरूपण निश्चित रूप से स्थिर नहीं किया जा सका है । इस संबंध में कई ऐतिहासिकों का मत है कि मेसोपोटोमिया सभ्यता के पहले इस हरप्पा सभ्यता का विकास हुआ था । क्योंकि हरप्पा की सील और मुहर मेसोपटोमिया की 'उर' और 'किश' स्थानों पर देखने को मिलती हैं । यह सभ्यता ईसापूर्व 2500 से ईसापूर्व 500 के बीच विकसित हुई थी । ऐसा कई पुरातत्त्वविदों का अनुमान है । पुरातत्त्वविदों ने भारत के दूसरे अंचलों से कई प्राचीन नगरों का ध्वंसावशेष उद्धार किया है । इन सभी ध्वंसावशेषों में आपसी सामंजस्य है । इसलिए वे सब हरप्पा सभ्यता के अंतर्गत हैं । उनमें से पंजाब का रोपड़, गुजरात का लोथाल और धोलाबीरा, राजस्थान का कालिबनगाँव, हरियाणा का बनवाली आदि प्रमुख हैं ।

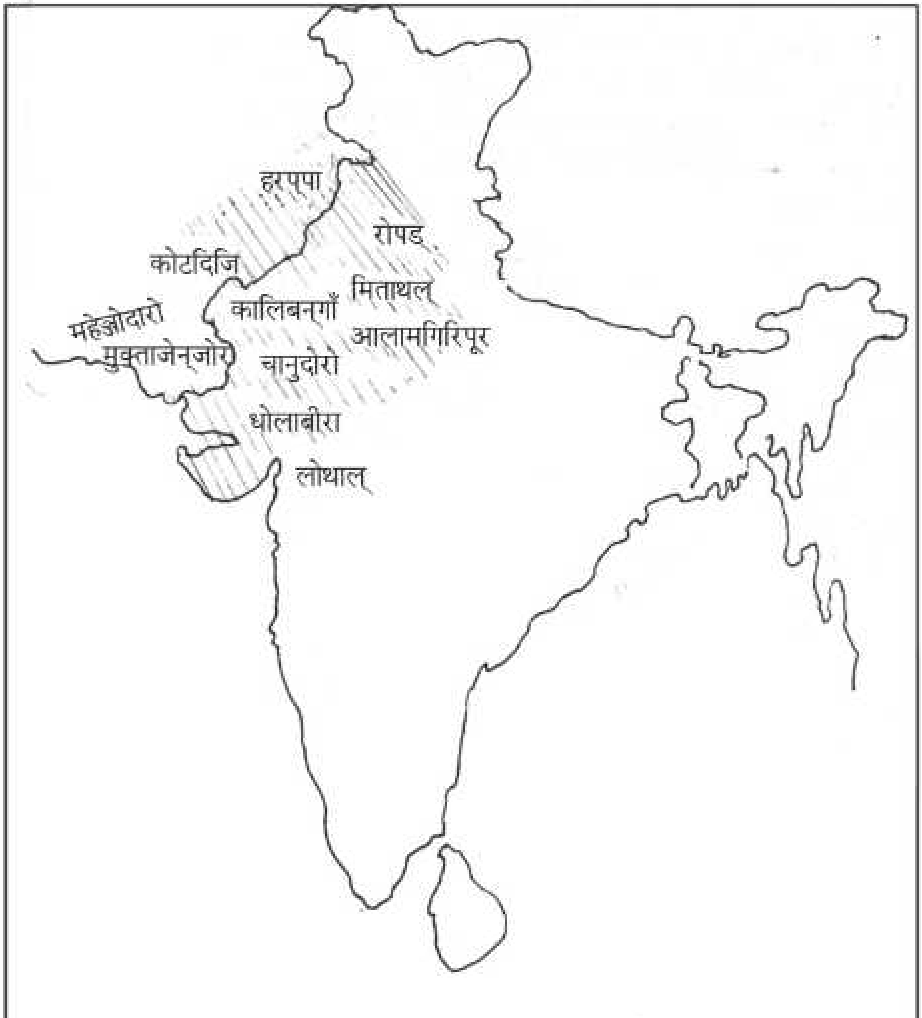

हरप्पा सभ्यता के मुख्य स्थान समूह

महानदी किनारे कई शहरों के नाम मानचित्र देखकर तालिका कीजिए।

नगर परिकल्पना :

हरप्पा सभ्यता की मुख्य विशेषता है, नगर निर्माण। योजना के अनुरूप नगरों का निर्माण होता था। प्रत्येक नगर को दो भागों में विभाजित कर दिया जाता था। एक भाग, ऊँचे स्थान पर निर्मित होता था। चारों तरफ चहार-दीवारी से घिर कर यह एक किले की तरह सुरक्षित होता था । इस स्थान में शासक, राजकर्मचारी, धर्मयाजक और वणिक लोगों का निवास होता था। ऐसा अनुमान किया जाता है । यहाँ साधारण कक्ष, धर्मानुष्ठान और अनाज के बखार होते थे । दूसरा भाग इसके नीचे की तरफ अर्थात् पगतल में बसाया जाता था । यहाँ आम जनता, कृषक, श्रमिक जैसे लोगों के लिए घर होते थे ।

सहर की उपरभाग का सुरक्षित स्थान

नगर की परिकल्पना आधुनिक नगरों की तरह काफी उन्नत थी । शहर के बीचोंबीच लंबे चौड़े रास्ते सीधे चले जाते थे । इस रास्ते के शाखा रास्ते आपस में समकोण में काटते थे। रास्ते उत्तर से दक्षिण की ओर पूर्व से पश्चिम को फैले होते थे। मोहेंजोदारो में मुख्य रास्ता 800 मीटर लंबा और 10 मीटर चौड़ा था । रास्ते के दोनों तरफ जल और कचरे जाने के लिए पक्के नाले बने होते थे । रास्तों की वजह से पूरा शहर वर्गक्षेत्र या आयतक्षेत्र में विभाजित रहता था ।

नगर गठन प्रणाली

वासगृह :

रास्ते के दोनों ओर वासगृहों का निर्माण योजनाबद्ध से होता था । ये मकान एक या दो तल्लों के होते थे । घर के अंदर प्रकाश और वायु आने जाने के लिए खिड़कियाँ और दरवाजे होते थे । ऊपर के तल्ले को जाने के लिए लकड़ी से बनी सीढ़ियाँ होती थीं । हर मकान के अंदर एक आंगन होता था । आंगन के पास स्नानागार होता था। हर घर से गंदा पानी और कचरा निकल जाने के लिए घर के अंदर एक छोटा नाला रहता था । उस नाले का संयोग रास्ते के मुख्य नाले से किया जाता था ।

इससे मालूम पड़ता है कि लोग तन्दरूस्ती के लिए कितने सचेतन थे । लकड़ी से बनी घर की छत समतल होती थी। मजदूर वर्ग के लोग एक कमरेवाले छोटे घरों में रहते थे ।

स्नानागार :

महेंजोदारो का बड़ा स्नानागार

हरप्पा सभ्यता का मुख्य आकर्षण था, एक बड़ा स्नानागार । मोहेंजोदारो में आविष्कृत जो एक स्नानागार आयताकार वाला था; इसकी लंबाई 55 मीटर और चौड़ाई 33 मीटर थी । यह 8 मीटर गहरा था । इसकी दीवारें और सीढ़ियाँ पक्की ईंटों से बनी थीं। सीढ़ियाँ जल के निचले स्तर तक फैली थी । ये सीढ़ियाँ काफी चौड़ी थीं । स्नानागार के ऊपरी हिस्से में एक बड़ा कुआँ था । इस कुएँ से पानी नल की मदद से स्नानागार में भर दिया जाता था । स्नानागार से जल निकल जाने का इंतजाम भी था । स्नानागार के निचले हिस्से से एक नाला मिट्टी के नीचे बहुत दूर तक फैला हुआ था। उसीमें से गंदा पानी बाहर चला जाता था । स्नानागार के चारों ओर छोटी-छोटी कोठरियाँ थीं।

आप महेंजोदारों के स्नानागार और आजकल इस्तेमाल हो रहे स्नानागार में क्या-क्या फर्क देखते हैं? लिखिए।

अनाजों का भण्डार :

हरप्पा के सुरक्षित हिस्से की उत्तर दिशा में एक विशाल शस्यागार आविष्कृत हुआ है । इसकी लंबाई 66 मीटर और चौड़ाई 16 मीटर । इसके दो कमरे थे । दोनों के बीच एक चौड़ा द्वार था । इस वृहत् शस्यागार की दक्षिण दिशा में कई गोलाकार फर्श देखने को मिलते हैं । ये फर्श अनाज को निकालने के लिए इस्तेमाल होते थे । मोहेंजोदारो में एक विशाल शस्यागार मिलता है । वह 48 मीटर लंबा और 15 मीटर चौड़ा था । कालिबनगाँ में भी एक शस्यागार देखने में आता है ।

आपके घर में अनाज कहाँ और कैसे संभाल कर रखा जाता है? लिखिए।

सभागृह :

मोहेनजोदारो नगर के बीचों-बीच एक विशाल गृह देखने को मिलता है जो 70 मीटर लंबा और 23 मीटर चौड़ा है । इसमें 25 खंभे हैं जो पक्की ईंटों से बने हैं । इस घर में पाँच कोठरियाँ थीं । पुरातत्त्वविदों का विश्वास है कि यह घर सभा या प्रार्थना के लिए इस्तेमाल किया जाता था ।

सामाजिक जीवन :

हरप्पा सभ्यता के लोगों का सामाजिक जीवन या राजनैतिक जीवन के बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं चल पाया है । लेकिन आजीविका के अनुसार उनकी सामाजिक व्यवस्था परिचालित होती थी, ऐसा अनुमान होता है ।

कृषिकार्य :

हरप्पा सभ्यता के अधिवासियों ने कृषि को मुख्य आजीविका के रूप में स्वीकारा था । नदी किनारे उर्वर समतलभूमि कृषिकार्य के लिए काफी उपयोगी थी । वे एक नई तरह का लंगल इस्तेमाल करके कृषिकार्य करते थे। गेहूँ और जौ से आटा बनाकर उससे रोटी बना कर खाते थे । इसके अलावा फल, मछली, मांस, अंडा भी खाते थे। खजूर उनका प्रिय खाद्य था ।

खेती काम के लिए किन औजारों की जरूरत होती है, उसकी एक तालिका बनाइए।

पोशाक, वेशभूषा और गहने :

हरप्पा सभ्यता के अधिवासी कपास और ऊन के कपड़े पहनते थे । खास कर कपास की खेती करके उससे सूत काट कर कपड़ा बुनते थे । यह कपड़ा पुरुष और स्त्रियाँ दोनों इस्तेमाल करते थे । ऊनके वस्त्र भी बनाते थे । पुरुष लोग लुंगी की तरह पहनते थे तो स्त्रियाँ घाघरे की तरह कपड़े पहनती थीं । नारी - पुरुष दोनों विभिन्न प्रकार के गहने पहनते थे। हार, मूदरी, मोवला, बाजूबंद, कड़ा, कानफूल, बेसर आदि गहने चलते थे। धनिक और वणिक व्यवसायी सोने, चाँदी और हड्डी के बने गहने पहनते थे । गरीब लोग ताँबा, हड्डी, गुरिया और मिट्टी से बने गहने पहनते थे । पुरुष लंबे केश और दाढ़ी रखते थे । स्त्रियाँ हाथी के दाँत और सींगों से बनी कंघियाँ तथा सिरके काँटे इस्तेमाल करते थे ।

महेञ्जोदारो से उपलब्ध अलंकार

उद्योग या शिल्पकला :

हरप्पा सभ्यता के लोग मिट्टी उद्योग और धातु उद्योग में निपुण थे । सोना, चाँदी, टीन और दस्ते जैसे धातुओं से वे किस्म-किस्म के पदार्थ बनाते थे । घर के अनेक उपकरण , जैसे - थाली, पात्र , मगरा, कुंड , सुई, हँसिया, बाण, बरछा आदि विभिन्न धातुओं से बनाते थे । कई कारीगर काँसे की मूर्तियाँ और गहने बनाते थे । मोहेंजोदारो में एक ब्रोंज या काँसे से बनी नृत्यरता नारी मूर्त्ति मिली है ।

काँसे से निर्मित नृत्य करनेवाली नारी मूर्त्ति

हरप्पा सभ्यता का मुख्य उद्योग था मृत् पात्रों का निर्माण । पहिए के जरिए वे कई तरह के खूबसूरत मिट्टी के पात्र बना लेते थे । मिट्टी की हाँडी, घड़ा, सुराही, कलसी, थाली, प्याला अदि विभिन्न उपकरण गढ़ते थे । इन मिट्टी पात्रों पर तरह-तरह के चित्र आँक लेते थे । उनको कई रंगों से चित्रित करते थे । बच्चों के खिलौने मिट्टी से बनते थे। पहिए वाली छोटी-छोटी गाड़ियाँ, कई तरह के मवेशी, पशुपक्षी, मनुष्य , ह्विसिल आदि मिट्टी से बने सामान पर विभिन्न रंगों से रंगते थे ।

मिट्टी का पात्र

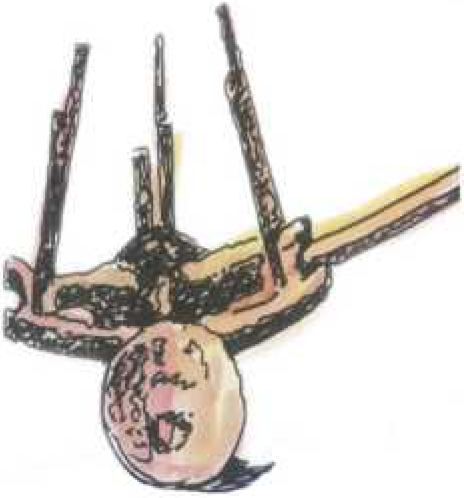

मिट्टी से बना शकट

आपके घर में जो मिट्टी के पात्र हैं, उनके नाम लिखिए।

मुहरें :

हरप्पा सभ्यता के विभिन्न स्थानों से बड़ी संख्या में पक्की मिट्टी की मुहरें मिली हैं । इन मुहरों से लोगों की जीवन-शैली के बारे में बहुत-सी बातें जानी जाती हैं । इन मुहरों पर वृष, भैंस, हाथी, साँप , नीलगाय , नारी मूर्त्तियाँ , योगासन

चित्र और लिपि मुद्रित मोहर

की मूर्त्तियाँ देकने को मिलती हैं। मुहरों पर एक तरह की लिपि (लिखावट) उकेरी गई हैं । अभी तक इनको ठीक से पढ़ा नहीं जा सका है । ये उनके धर्म, व्यापार और सामाजिक व्यवस्था की सूचना देती है ।

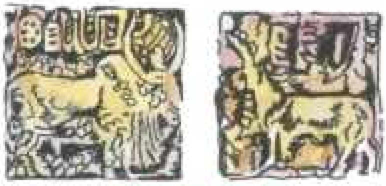

सिन्धु प्रदेश का मोहर

व्यापार बनिज :

हरप्पा सभ्यता की कई मुहरों पर नाव की छबियाँ मिलती हैं । उससे मालूम पड़ता है कि ये लोग नौवाणिज्य करते थे । वे बचे हुए अनाज, गहनों और मिट्टी के पात्रों को लेकर व्यापार करते थे । गुजरात के लोथाल में बंदरगाह का अवशेष मिला है । वे भारत के अन्दर और बाहरी देशों जैसे- अफगानिस्तान, मेसोपटामिया आदि के साथ व्यापार संबंध रखते थे । ऐसे प्रमाण मिले हैं ।

गुजरात के लोथाल का बंदरगाह

लिपि :

हरप्पा सभ्यता के अधिवासी भाषा और लिपि के बारे में अच्छी तरह से हमें पता नहीं चल पाया है । मुहरों पर खुदे निशानों को देखकर कहा जा सकता है कि वे छवि लिपि का इस्तेमाल करते थे । अब 800 से ज्यादा चिह्न या छवि आविष्कृत हुई हैं। वे इन छवियों के जरिए मन के भाव अभिव्यक्त करते थे ।

देवी मूर्त्ति

धर्म :

हरप्पा सभ्यता में कोई मंदिर नहीं मिला है । पत्थर की मूर्त्तियाँ, ताँबे या पक्की मिट्टी की मुहरों पर उकेरी गई विभिन्न मूर्त्तियों को देखकर अनुमान लगाया जा सकता हैं कि वे पशुपति, देवी, वृषभ, सर्प, वृक्ष आदि

की पूजा करते थे । कई मुहरों पर मातृका मूर्त्ति देखने में आई है । अतएव, लोग देवीपूजा करते थे ।

हरप्पा सभ्यता के लोग मृत व्यक्ति का जीवन बचा हुआ मानते थे । इसलिए शवों को उत्तर दिशा की ओर सिर रखकर समाधि देते थे । मृत व्यक्ति के साथ उसके गहने, इस्तेमाल में आए पात्र, आईना, लाठी आदि चीजों को भी गाड़ देते थे ।

पशुपति मूर्त्ति

हरप्पा सभ्यता का पतन :

प्रायत: ईसा पूर्व 2000 वर्ष के समय हरप्पा सभ्यता का पतन शुरू हो गया । इसके पतन के कई कारण हैं, जैसे -

- विशेषज्ञों का विचार हैं कि प्राकृतिक दुर्घटना की वजह से इस सभ्यता का अंत हो गया । सिंधु नदी की बाढ़ से लोग नगर छोड़ कर भाग गए । जहाँ गए वहाँ ऐसे सभ्यता का आरंभ किया ।
- कुछ ऐतिहासिक कहते हैं कि बार-बार भूकंप के कारण यह सभ्यता मिट्टी के नीचे दब गई ।
- अनेक यह राय देते हैं कि आर्यों के आक्रमण से यह सभ्यता लुप्त हुई । मोहेंजोदारों में गणहत्या के प्रमाण मिले हैं। वहाँ मिले कंकालों को धारदार अस्त्रों से आघात करने के निशान हैं, जिससे यह अनुमान लगाया गया है।
- कुछ ऐतिहासिक कहते हैं कि महामारी प्लेग हरप्पा सभ्यता के पतन का कारण है क्योंकि विभिन्न रास्तों पर कंकाल पड़े हुए मिले हैं ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित पप्रश्नों के उत्तर 50 शब्दों में दीजिए।

(क) हरप्पा सभ्यता के निशान भारत में कहाँ मिले हैं ?

(ख) हरप्पा और मोहेंजोदारो - ये दो शहर कब और किनके द्वारा जमीन के अंदर से आविष्कृत हुए थे ?

(ग) हरप्पा सभ्यता को क्यों भारत की प्रथम नगर सभ्यता कहते हैं ?

(घ) मोहेंजोदारो शहर से आविष्कृत स्नानागार का आकार कैसा था ?

(ङ) हरप्पा नगर की गठन प्रणाली के बारे में लिखिए।

(च) हरप्पा सभ्यता के लोगों के घरों की गठन-शैली कैसी थी ?

(छ) मोहेंजोदारो में आविष्कृत स्नानागार की निर्माण-शैली कैसी थी ?

(ज) हरप्पा के शस्यागार के बारे में कुछ बताइए।

(झ) हरप्पा सभ्यता के लोगों की वेशभूषा और गहने कैसे थे ?

(ञ) हरप्पा सभ्यता के लोग मिट्टी और धातु उद्योग में निपुण थे, यह कैसे पता चला ?

(ट) हरप्पा सभ्यता के लोग किन-किन देवी - देवताओं की पूजा करते थे ?

(ठ) हरप्पा सभ्यता के पतन के कारण बताइए। आप किस कारण को अधिक जिम्मेदार मानते हैं और क्यों ?

(ड) किन तथ्यों के आधार पर हरप्पा सभ्यता के लोगों के धर्म विश्वास और पूजा पद्धति के बारे में जान सकते हैं ? लिखिए।

2. प्रत्येक प्रश्नों का उत्तर 30 शब्दों में दीजिए ।

(क) मोहेंजोदारो में जो स्नानागार था उसमें जल का प्रवेश और निकासी कैसे होती थी बताइए ?

(ख) हरप्पा सभ्यता के सभागृह की गठन-प्रणाली कैसी थी ?

(ग) हरप्पा सभ्यता के लोग किन उद्योग कला में निपुण थे और वे किन धातुओं का उपयोग जानते थे ?

(घ) हरप्पा सभ्यता के लोग किन उपायों से शव संस्कार करते थे ?

(ङ) हरप्पा सभ्यता के लोग क्या खाते थे ?

3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक वाक्य में लिखिए ।

(क) हरप्पा और मोहेंजोदारो सभ्यता को 'सिंधु सभ्यता' क्यों कहते हैं ?

(ख) हरप्पा सभ्यता के लोग कौन-सी लिपि इस्तेमाल करते थे ?

(ग) 'मोहेंजोदारो' का क्या अर्थ है ?

(घ) हरप्पा सभ्यता के लोग मुख्यत: किस की खेती करते थे ?

(ङ) हरप्पा सभ्यता का मुख्य उद्योग क्या था ?

4. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए।

(क) हरप्पा सभ्यता के घर .... से बने थे ।

(पक्की ईंट, पत्थर, मिट्टी, चूने का पत्थर)

(ख) हरप्पा शहर अब .... में विद्यमान है ।

(भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बलूचिस्तान)

(ग) हरप्पा सभ्यता के लोग .... धातुओं का उपयोग नहीं जानते थे ।

(ताँबा, काँसा, टीन, लोहा)

(घ) हरप्पा सभ्यता के लोग .... का खेती करते थे ।

(धान, बाजरा, कपास, जूट)

5. 'क' स्तंभ के शब्दों के साथ 'ख' स्तंभ के शब्दों को चुनकर जोड़िए।

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
लोथाल	स्नानागार
मोहेंजोदारो	रावी नदी
छविलिपि	समतल
हरप्पा	मुहर
घर की छत	भारत

6. रेखांकित पदों को बदल कर भ्रम संशोधन कीजिए।

(क) हरप्पा सभ्यता के लोगों का मुख्य भोजन भात था ।

(ख) शस्यागारों में सामान्यत: अनाज निकालने का काम होता था ।

(ग) हरप्पा के घरों में ऊपर तल्ले को जाने के लिए पत्थर से बनी सीढ़ियाँ थीं।

(घ) हरप्पा सभ्यता के आदिवासियों ने व्यापार बनिज को मुख्य जीविका के रूप में स्वीकारा था ।

आपके लिए काम :

आपके घर पर अनाज कहाँ और कैसे संभाल कर रखते हैं ? अनुध्यान कीजिए और लिखिए।

पंचम अध्याय

विभिन्न जीवनधारण प्रणाली

गर्मी की छुट्टियों में मानस अपने मामा के यहाँ कटक गया था । उसके मामा उसे वहाँ की लाईब्रेरी में ले गए थे । उस लाइब्रेरी के एक कमरे में बहुत सारी पुरानी किताबें रखी थीं । उनमें से वेदों के चार ग्रंथ उसकी नजर में पड़े । वेद क्या है ? जानने के लिए उसने मामा से पूछा, उत्तर में मामा ने क्या क्या कहा, अब ध्यान से सुनिए।

हमारे देश भारत के सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद हैं । 'वेद' शब्द का मतलब है 'ज्ञान' । वेद चार हैं-ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्व वेद । इनमें से सब से पहले ऋगवेद की रचना पंजाब में हुई थी । बाद में दूसरे वेदों की रचना गंगा नदी के समतल अंचल में हुई थी । वेद आर्यों के ग्रंथ हैं । इनके मंत्रों को मुनिऋषियों ने संस्कृत भाषा में मौखिक रूप में रचना की थी । बहुत दिनों के बाद, जब लोगों ने लिखना सीखा, तब इन वेदों को लिख लिया गया । पहले इन मंत्रों को लोग सुन - सुन कर याद रखते थे, इसलिए वेद का दूसरा नाम है, 'श्रुति' ।

लगभग ईसापूर्व 1500 साल पहले अर्थात् प्रायत: 3500 वर्ष पूर्व ऋग्वेद की रचना हुई थी, ऐसा विश्वास किया जाता है । यह दस भागों या मंडलों में विभाजित है । इसमें इन्द्र, वरुण, अग्नि, मित्र आदि देवताओं के उद्देश्य से प्रार्थनाएँ लिखी गई है । ऋगवेद के साथ ईरान के सबसे प्राचीन ग्रंथ 'अवेस्ता' का बहुत सामंजस्य है । 'साम' शब्द का अर्थ है 'गान'। साम में बहुत सी संगीतमूलक प्रार्थनाएँ हैं तो यजुर्वेद में धर्म और पूजाकर्म की पद्धतियाँ हैं। अथर्व वेद में भूतप्रेत आदि को दूर भगाने के विभिन्न मंत्र हैं ।

ऋगवेद का रचना समय अन्दाजन ईसापूर्व 1500 से 1000 ईस्वी है और दूसरे वेदों का समय ईसापूर्व 1000 से 600 ईस्वी के बीच है । प्रथम को ऋग्वेदीय काल और दूसरे को परवर्ती या उत्तर वैदिक काल कहा जाता है ।

वेद जैसे कई दूसरे प्राचीन धर्मग्रंथ के नाम संग्रह करके एक तालिका बनाइए।

उपनिषद वेद का एक अंश है । इसमें आत्मा, परमात्मा या ब्रह्म, मोक्ष आदि विषयों में लिखा गया है । वैदिक साहित्य से हम लोग आर्यों के सामाजिक जीवन, अर्थनीति, धर्म और शासन व्यवस्था के बारे में जान सकते हैं ।

वैदिक साहित्य के अलावा पुरातात्त्विक खुदाई से उस युग की सभ्यता के विषय में पता चला है । हस्तिनापुर, अतरंजिखेरा, नोह आदि स्थानों में जो मृद् पात्र मिले हैं, उनसे परवर्ती वैदिक युग की संस्कृति के बारे में मालूम पड़ता है। उन पात्रों में धूसर रंग की चित्रित मिट्टी के पात्र और लाल और काले रंग के मिट्टी के पात्र भी हैं ।

भारत का मानचित्र बनाकर उसमें वैदिक सभ्यता के मूल स्थानों को चिह्नित कीजिए।

शासन व्यवस्था :

आर्य लोग बड़ी संख्या में गाय, भैंस, घोड़ा जैसे पशुओं के साथ भिन्न-भिन्न दलों में भारत आए । पहले तो यायावर जीवन बिताते थे, पर बाद में कृषिकार्य में अपने को नियोजित किया । 'जन' और 'विश'–ये दो शब्द ऋग्वेद में अनेक बार प्रयुक्त हुए हैं । दल के सभी लोगों को 'जन' के रूप में स्वीकार किया गया है तो 'विश' दल कई संगठनों को समझा जाता था । दल के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति को 'राजन' माना जाता था । कई परिवार और कुलों को लेकर ग्राम की सृष्टि हुई थी । परिवार और ग्राम के मुख्य लोगों को क्रमश: 'कुलप' और 'व्रजपति' या 'ग्रामणी' कहा जाता था । राजतंत्र ही मुख्य शासन व्यवस्था थी और राजा बड़े शक्तिशाली थे ।

आजकल के ग्रामांचल की शासन व्यवस्था के साथ ऊपर वर्जित व्यवस्था का क्या सामंजस्य या पार्थक्य है, साथियों से चर्चा करके लिखिए।

ग्राम्य जीवन :

आर्य लोग दल बनाकर गाँवों में निवास करते थे । परिवार के सभी सदस्य एक साथ रहते थे । कृषि उनका मुख्य पेशा था । साथ में पशुपालन भी करते थे । गाय को संपत्ति माना जाता था । परिवार में पिता ही मुख्य होते थे । उनको 'कुलप' कहा जाता था । समाज में नारी का स्थान काफी ऊँचा था । नारियाँ पुरुषों के साथ विभिन्न कार्यों, याग-यज्ञादि में योगदान करती थीं । घोष, लोपामुद्रा जैसी नारियाँ वैदिक मंत्रों की रचना और पाठ करती थी ।

वैदिक युग के आरंभ के साथ भारत में घोड़ों का आना खास बात थी । घोड़ों के द्वारा चालित रथों का इस्तेमाल युद्ध में किया जाता था ।

आर्यों को तीन श्रेणियों में बाँटा गया था । शासक श्रेणी में राजा, उनके कर्मचारी, योद्धा थे । दूसरी श्रेणी के लोग थे, पुरोहित और तीसरी श्रेणी में सामान्य जन थे । ऋग्वेद के अंतिम काल में समाज को चार भागों में विभाजित किया

गया। वे थे - ब्राह्मण (धर्मकार्य के लिए), क्षत्रिय (शासन और युद्ध कार्य के लिए) , वैश्य (कृषि और वस्तुओं के उत्पादन के लिए) और शूद्र (इन तीन वर्णों की सेवा के लिए) ।

लोग दूध और दूध से बने खाद्य ज्यादा परिमाण में खाते थे । इसके अलावा फलमूल, सब्जियाँ, दलहन और मांस आदि भोजन के रूप में उपयोग करते थे । गेहूँ और जौ मुख्य खाद्य पदार्थ थे । परवर्ती काल में धान उत्पादन करना सीखा। ऋग वेद में सोमरस या सुरा का उल्लेख है ।

आर्य लोग प्रकृति की विभिन्न शक्तियों की पूजा करते थे । प्रकृति की दृश्यावली के पीछे देवताओं की सत्ता है। ऐसा उनका विश्वास था, धारणा थी । वे उषा, सूर्य, अग्नि , वरुण, इन्द्र आदि देवताओं की उपासना करते थे । धरती को मातृदेवी के रूप में पूजते थे । देवी-देवताओं को संतुष्ट करने के उद्देश्य से यज्ञानुष्ठान आयोजित किए जाते थे । उसके लिए घी, दूध आदि द्रव्य अग्नि में आहुति दी जाती थी ।

समसामयिक ताम्र प्रस्तर युग की मानव बस्ती :

इनामगाँव :

महाराष्ट्र प्रदेश की भीमानदी की शाखानदी घोद के पास इनामगाँव स्थित है । जब उत्तर पश्चिम दिशा में पंजाब अंचल और गंगा नदी की घाटी में आर्यों ने सभ्यता की स्थापना की थी, सभी इनाम गाँव में ताम्र प्रस्तर युग की सभ्यता विकसित हुई थी । पुरातत्त्वविदों का विश्वास है कि वह सभ्यता लगभग ईसा के पहले 1500 से 600 ईस्वी में अर्थात् 900 सालों तक विभिन्न दिशाओं में विकसित हुई थी और स्थापित थी । वहाँ पर पुरातात्त्विक खनन से लगभग 134 मिट्टी के चौकाने घर आविष्कृत हुए हैं । साधारणतया, घर में एक या दो कोठीयाँ होती थी। पाँच कोठरियों बाले घरों में शासक रहते थे । ऐसा विश्वास किया जाता है । हडप्पा जैसे वहाँ भी शस्यागार मिले हैं ।

अण्डे के आकार का या दीर्घवृत्ताकार गड्ढ़े को चूल्हे के लिए इस्तेमाल किया जाता था । घर के अंदर और बाहर इस तरह के चूल्हे देखने को मिलते हैं । लोग गड्ढ़े खोदकर जमीन के अंदर अनाज को संभाल कर रखते थे । कई गड्ढ़ों में वे कूड़े-कचरे फेंकते थे । वे लाल और काले रंग के मृद्पात्रों का इस्तेमाल करते थे । पत्थर से बने अस्त्रशस्त्रों द्वारा पेड़ काटना, पशुमांस को टुकड़े करना और उनके चमड़े का इस्तेमाल करना जैसे काम किए जाते थे । इनाम गाँव के लोग राजस्थान से ताँबा लाते थे।

लोथाल से मिलते थे मिट्टी घोड़े

वहाँ से छेनी, चिमटा, बनसी काँटा, बाण की नोंक आदि चीजें मिली हैं । माला, चूड़ी, पाँवज आदि गहने भी मिले हैं । वे सब ताँबे से बनते थे । बादामी लाल रंग के मिट्टी पात्र, हाथी दाँत, सीप की मालाएँ यहीं से मिली हैं । उसी प्रकार मिट्टी की बनी मूर्त्तियाँ आविष्कृत हुई हैं । पक्की ईंटों से बनी पशुओं की छोटी-छोटी मूर्त्तियाँ मिली हैं। उनको खिलौने के रूप में या फिर धर्म कार्य में इस्तेमाल किया जाता था । वृषभ चित्रवाले मृद्पात्र भी मिले हैं ।

आजकल किसान जमीन से अमल किए अनाज को कैसे संभाल कर रखते हैं, दूसरों से बात करके लिखिए।

समाधि स्थान :

इनाम गाँव में कई समाधियाँ मिली हैं। अधिकतर समाधियों से पुरुषों की हड्डियाँ मिली हैं। मृत शरीर के मस्तक को उत्तर दिशा की ओर रखा गया था । घर के भीतर भी समाधि दी जाती थी । खाद्य और जलपात्रों को भी मृत शरीर के साथ रखा गया था । लोग मातृ उपासना करते थे, ऐसा विश्वास किया जा सकता है ।

लोग गेहूँ, जौ, मसूर , मटर , मकई , बाजरा, धान, सेम आदि उत्पादन करते थे । इसके प्रमाण मिले हैं । गाय, भैंस, भेड़, बकरी, कुत्ता, घोड़ा, गदहा, सूअर, हिरन, गिलहरी आदि प्राणियों की हड्डियाँ मिली हैं । मगर, कच्छप, केकड़ा और मछली आदि के काँटे भी मिले हैं । मांस, मछली, गाय का दूध, जामुन, खजूर और दूसरी तरह के बेर भी वे खाते थे । इनाम गाँव में खेती की अच्छी प्रगति हुई थी ।

लगभग 900 साल तक विकास होने के बाद इस सभ्यता का विलय शुरू हो गया । अनुमान किया गया है कि जमीन की उर्वरता कम हो गई, इसलिए कृषि उत्पाद की कमी हुई । इसलिए खेती का काम छोड़ लोग पशुओं का शिकार और खाद्य संग्रह करने में जुट गए । घर का आकार काफी छोटा हो गया ।

लगभग ईसा पूर्व 1800-1200 ईस्वी के बीच बेबिलोन और उसके नजदीक स्थानों में डिटाइट नामक लोगों को लोहे के पत्थर से लोहा निकालने का कौशल मालूम हो गया था । लोहे के पत्थर को गलाकर उसी से लोहा निकालते थे। कालक्रम से इसी कौशल को फारस के लोग जान गए । जो आर्यदल ने फारस से हिन्दुकुश पार कर के भारत में प्रवेश किया था, वे भी शाचद लोहे का इस्तेमाल करना जानते थे । ईसा पूर्व 1000 ईस्वी तक भारत के उत्तर पश्चिमांचल, खास कर गांधार इलाके में लोहे का इस्तेमाल होता था, इसके प्रमाण मिलते हैं । बाद में वैदिक युग में गंगानदी की अववाहिका अंचल को लोहे का इस्तेमाल प्रसारित हुआ था । उस अंचल में जंगल साफ करने के लिए शायद लोहे की कुल्हाड़ी इस्तेमाल होता था । क्योंकि बाद वाले वेद में श्याम या कृष्ण आयस (लोहा) का उल्लेख है।

लौह युग या बाद के या उत्तर वैदिक काल का आरंभ एक ही समय हुआ था । ऐसा बहुत लोग विश्वास करते हैं । उत्तर भारत के कई स्थानों से, जैसे हस्तिनापुर, भगवानपुरा, अतरंजिखेरा से एक तरह का राख रंगवाला चित्रित

मिट्टी पात्र मिला है । पुरातत्त्वविद् इसी को चित्रित धूसर पात्र नाम देते हैं । इसी में लोहे का अंश था, यह मालूम पड़ा है। ऐसे पात्रों का उपयोग उत्तर वैदिक काल में खूब होता रहा । इसके अलावा लाल और काले रंग के मिट्टी पात्रों का इस्तेमाल की वजह से भारत में दो बड़े परिवर्तन हुए । लोहे के औजारों से आर्य लोग कृष्णकाय मूल भारतवासियों को आसानी से पराजित करके कुल्हाड़ी से जंगल साफ करके ज्यादा खेती करने लगे । इसी से अनाज का पैदावार काफी बढ़ गया ।

आर्यों का मूल वासस्थान और उनका परिचय आज भी रहस्य बना हुआ है । अनेक लोगों का विश्वास है कि वे सर्वप्रथम एशिया महादेश के केन्द्राञ्चल में रहते थे । कालान्तर में उनका एक दल पश्चिम की ओर गया और यूरोप के विभिन्न स्थानों में निवास किया । एक दूसरा दल ईरान की ओर आया । इसी ईरान से वे कई दलों में बँट कर उत्तर पश्चिम के गिरिपथों से होकर भारत में आए। जिन लोगों ने भारत में प्रवेश किया उनको भारतीय आर्य कहा गया । जिस भाषा में वे भाव विचारों का आदान-प्रदान करते थे, उसे संस्कृत भाषा कहा गया । वह भाषा आज की संस्कृत भाषा से काफी अलग थी । विभिन्न दलों में आए आर्य सिंधु, वितस्ता (झेलम), चन्द्रभामा(चेनाब), इरावती (रावी), विपाशा(बेआस) और शतद्रु (सतलेज) आदि नदियों के तटवर्ती इलाकों में रहना शुरू किया । इन नदियों को वे 'सप्तसिंधु' कहते थे । इस अंचल का नाम उन्होंने 'ब्रह्मावर्त्त' रखा ।

जनपद और महाजनपद :

ऋग्वेदीय युग की जनजाति राष्ट्र व्यवस्था बाद वाले वैदिक युग में क्षेत्रीय राष्ट्र व्यवस्था में बदल गई । ये राष्ट्र निश्चित भौगोलिक सीमाओं में बँधे थे । इनको जनपद कहा गया । जनपदों के नाम वहाँ रहनेवाली प्रमुख जाति के नामों के अनुसार रखे गए । ऋग्वेदीय युग में राष्ट्र के मुख्यों को राजन कहा जाता था । यह पद वंशानुक्रमिक था । उनके अधिकार सीमित थे । सभा, समिति, विधाता और गण आदि जनजाति के परिषदों के हेतु राजन् का अधिकार सीमित था। बाद में वैदिक युग में इन परिषदों का महत्त्व कम हो जाने से राजन की क्षमता बढ़ गई ।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में जनपद ने अपनी सीमा को बढ़ने का प्रयास शुरू किया । सीमा प्रसारित हुई । जनपद को महाजनपद कहा गया । बौद्धग्रंथों से यह सूचना मिलती है कि ईसा पूर्व 600 शती में उत्तर भारत में ही 16 जनपद थे। उनमें कोशल, मगध, वत्स और अवन्ती बड़े शक्तिशाली थे । इनके अलावा तब कई गणराज्य भी स्थापित हो चुके थे। परवर्ती काल में राजा बिम्बिसार और अजातशत्रु के अधीन मगध तथा अन्य महाजनपदों पर अधिकार जमा करके एक शक्तिशाली राष्ट्र बना ।

हमारे देश में जो राज्य हैं, उनके नाम तथा उनकी राजधानियों के नाम लिखिए।

प्रत्येक जनपद की राजधानी के साथ कुछ और प्रमुख स्थान या शहर थे । कई महाजनपदों में दुर्ग भी स्थापित किए गए थे । विभिन्न शक्तिशाली सेनावाहिनी का गठन किया गया था । अनेक राजा अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए राजसूय और अश्वमेध आदि यज्ञ अत्यंत आड़ंबर से कराते थे ।

अभ्यास

1. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए।

(क) वेद का दूसरा नाम क्या है ?

(ख) चार वेदों के नाम लिखिए।

(ग) किस वेद में भूत प्रेत भगाने के मंत्र हैं ?

(घ) 'जन' और 'विश' का क्या अर्थ है ?

(ङ) यज्ञानुष्ठान में कौन से पदार्थ उपयोग किये जाते थे ?

(च) ऋक् वेद के मंत्र किस अंचल में रचे गए थे ?

(छ) परवर्ती वैदिक युग का समय क्या था ?

(ज) इनाम गाँव में कौन-सी सभ्यता आविष्कृत हुई है ?

(झ) कृष्ण आयस का क्या मतलब है ?

2. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर संक्षेप में दीजिए।

(क) चार वेदों में क्या - क्या लिखा गया है, बताइए।

(ख) ऋग्वेदीय सभ्यता की शासन व्यवस्था के बारे में लिखिए।

(ग) वैदिक युग में नारियों का क्या स्थान था, लिखिए।

(घ) वैदिक सभ्यता के धर्म के बारे में लिखिए।

(ङ) इनमा गाँव से जो मिट्टी की मूर्त्तियाँ निकली; उनके बारे में लिखिए ।

(च) इनाम गाँव से कौन कौन प्राणियों की अस्थियाँ मिली हैं ?

(छ) लौह युग के संबंध में एक विवरणी प्रदान कीजिए।

३. 'क' स्तंभ के शब्दों को चुन कर 'ख' स्तंभ के शब्दों के साथ जोड़िए।

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
वेद	परिषद
सभासमिति	राष्ट्रमुख्य
व्रजपति	महाजनपद
राजन	मगध
कोशल	ग्राम का मुख्य
बिम्बिसार	श्रुति
	परिवार का मुखिया

आपके लिए काम

हमारे देश के कई विशिष्ट नारियों की तस्वीरें संग्रह करके उनकी प्रसिद्धि क्यों हुई है ? लिखिए।

नई विचारधारा का उदय

सुरेश ने स्कूल से लौटते वक्त रास्ते में देखा कि उनके पड़ोसी बुलू चाचा के घर के सामने लोगों का एक दल इकट्ठा हैं। घर से रोनी की आवाज आ रही है । उसने बात का पता लगाना चाहा । मालूम हुआ कि बुलू चाचा की माँ मर गई है । वे लोग उनको मसान ले जाने को जमे हैं । सुरेश के मन में एक सवाल उठा । आदमी मरने के बाद कहाँ जाता है, मरने के बाद उसकी क्या हालत होती है ? अब हम इन सवालों के जवाब जानेंगे ।

इन प्रश्नों के उत्तर हम उपनिषदों से जान सकेंगे । इसमें भारतीय दर्शन के मौलिक तथ्यों पर चर्चा की गई है ।

जब मनुष्य निराश हो जाता है, तब वह ईश्वर के बारे में सोचता है । अपने को ईश्वर के सामने समर्पित कर देना चाहता है। ब्रह्मज्ञान तत्त्व के लिए व्याकुल होता हैं, मन में आध्यात्मिक भाव जागृत होता है। इसको जागृत करने में उपनिषदों की भूमिका महत्त्वपूर्ण हैं । एक आदर्श शिष्य अपनी श्रद्धा, भक्ति, निष्ठा, दृढ़ मनोबल और सेवा के द्वारा असाध्य साधन कर सकता है । जैसे 'श्रीमद् भगवद् गीता' ग्रंथ में अर्जुन अपने गुरु कृष्ण से ब्रह्मज्ञान पा सके थे । ब्रह्म परमात्मा या परमेश्वर है । इसी ब्रह्मज्ञान के बारे में उपनिषदों में सविशेष चर्चा की गई है ।

महाभारत युद्ध में श्रीकृष्ण अर्जुन के साथ किस भूमिका में थे, दूसरों से बात करके लिखिए।

उसी प्रकार का एक दूसरा उदाहरण मिलता है कठोपनिषद के नचिकेता उपाख्यान में । नचिकेता ने कैसे अपनी श्रद्धा, भक्ति , निष्ठा और सेवा के बल पर धर्मराज यम से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था, वह बात उसमें वर्जित है ।

पुस्तक से पढ़ कर नचिकेता उपाख्यान के बारे में जानिए।

उपनिषद वेद का अंश हैं । इनमें बहुत जटिल तथ्यों यथा - जीवात्मा, परमात्मा, पृथ्वी की सृष्टि जैसे अनेक रहस्यात्मक विषयों में चर्चा की गई है । वैदिक युग के अंतिम समय में उपनिषदों की रचना हुई थी ।

उपनिषद की विषयवस्तु :

गुरु शिष्य के बीच कथोपकथन के जरिए ब्रह्मतत्त्व के गूढ़ रहस्य वर्णित हैं । उपनिषदों की संख्या अनेक है । मगर अब लगभग 200 उपनिषद मिलते हैं । उनमें से 16 मुख्य हैं । हर उपनिषद की विषयवस्तु अलग है।

भारत के दार्शनिकों ने उपनिषदों की चिंताधारा को विभिन्न ढ़ंग से व्याख्या की है । पंडित लोग शंकराचार्य द्वारा लिखित अद्वैतमूलक व्याख्या को ज्यादा सम्मान देते हैं । शंकराचार्य की व्याख्या संसार से ज्यादा जुड़ी हुई है । बल्लभाचार्य, मध्वाचार्य, रामानुज जैसे दार्शनिकों ने भी उपनिषदों को भिन्न-भिन्न रूप में प्रस्तुत किया है ।

कई उपनिषदों के नाम संग्रह करके एक तालिका बनाइए।

जैन धर्म और बौद्ध धर्म

महावीर और जैनधर्म :

एक बार विद्यालय के छात्र-छात्राएँ शिक्षक के साथ भुवनेश्वर घूमने गए । वहाँ उन्होंने उदयगिरि और खण्डगिरि में जैनगुफा और धौली स्तूप देखे । बच्चे जानना चाहा कि जैनगुफा और बौद्धस्तूप क्या है । उत्तर में इतिहास शिक्षक ने उनको जो कुछ कहा था, आओ जानें ।

आज से लगभग 2500 वर्ष पहले ईसा पूर्व छठी शताब्दी में भारत में दो महापुरुषों ने जन्म लिया था । उन्होंने नई विचारधारा के आधार पर दो धार्मिक मतवादों का प्रचार किया था । वे हैं महावीर जैन और गौतम बुद्ध ।

उदयगिरि और खण्डगिरि पहाड़ियों में जो जैनगुफाएँ हैं, उनके बारे में तथ्य संग्रह करके लिखिए।

महावीर जैनधर्म के प्रचारक थे । जैनधर्म की परंपरा के अनुसार उनके पहले 23 तीर्थंकरों ने अपनी वाणी का प्रचार किया था । उनमें से ऋषभनाथ हैं प्रथम तीर्थंकर और महावीर हैं 28वें तीर्थंकर । महावीर के ठीक पहले

तीर्थंकर पार्श्वनाथ हुए जो काशीराज अश्वसेन के पुत्र थे । उनका आविर्भाव महावीर के 250 साल पूर्व हुआ था । उन्होंने जैन धर्मकी चार नीतियों का प्रचार किया था। वे हैं - जीव के प्रति हिंसा आचरण न करना, मिथ्या न कहना, चोरी न करना और संपत्ति के लिए लालच न रखना । इसलिए पार्श्वनाथ द्वारा प्रचारित धर्म को 'चतुर्याम धर्म' कहा जाता था । महावीर ने उसमें एक और नीति जोड़कर उसे 'पंचयाम धर्म ' बना दिया । इन पाँच नीतियों को जैन लोग 'पंच महाव्रत' के रूप में पालन करते हैं ।

महावीर पार्श्वनाथ के धर्म के संस्कारक और प्रचारक थे । उन्होंने वैशाली नगर के कुंदग्राम के एक क्षत्रिय परिवार में जन्म लिया था । जन्म के समय उनका नाम था, बर्द्धमान । उनके पिता का नाम था सिद्धार्थ और माता का नाम था, त्रिशला। बर्द्धमान ने यशोदा नाम की एक कन्या से विवाह किया था । उनकी एक बच्ची थी । उन्होंने 30 साल की उम्र में घर छोड़ दिया और 12 सालों तक कठोर साधना की थी । जब उन्हें 42 साल की उम्र हो गई, तब उन्हें दिव्यज्ञान मिला । चूँकि वे वास्तव ज्ञान के अधिकारी थे इसलिए उनको 'जिन' कहा गया । इसी जिन शब्द से उनके द्वारा प्रचारित धर्म को जैन धर्म कहा जाता है । उन्होंने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की थी, इसलिए उनको महावीर कहा गया ।

महावीर जैन

धर्म प्रचार :

महावीर अनेक स्थानों में घूम-घूम कर जैन धर्म का प्रचार किया । वे मगधराज बिम्बिसार और अजातशत्रु को जैन धर्म की ओर आकृष्ट कराया । लंबे 30 सालों तक वे मगध, अवन्ती, वैशाली, मिथिला और श्रावस्ती आदि स्थानों में जैन धर्म का प्रचार करते रहे । 72 साल की उम्र में उनका देहांत हुआ ।

धर्मनीति :

महावीर सरल और सीधासादा जीवन बिताने में विश्वास करते थे । वे ईश्वर की स्थिति, यागयज्ञ, धर्मविधि, पशुबलि और जातिभेद में विश्वास नहीं करते थे । वे कहते थे , प्रत्येक जीव के प्रति श्रद्धा और दया करना मनुष्य का धर्म है । अहिंसा जैन धर्म का मूलमंत्र था । जैन धर्म के लोग अहिंसा को अति कठोरता से पालन करते हैं । यहाँ तक कि वे रात को दीप न जलाना, मुँह और नाक को कपड़े से लपेटे रखना, आहिस्ते चलना आदि पर विश्वास करते हैं । क्योंकि इससे कीटपतंग आदि न मारे जाएँ ।

महावीर पुनर्जन्म में विश्वास करते थे । पुनर्जन्म से मुक्ति पाने के लिए वे तीन मार्गों का अवलंबन करने का उपदेश देते थे । वे हैं - सत् विश्वास, सत् ज्ञान और सत् कार्य । इसी को जैन 'त्रिरत्न' कहा जाता है ।

महावीर कर्मवाद के ऊपर ज्यादा महत्त्व देते थे । प्रत्येक व्यक्ति के सुकर्म और कुकर्म के ऊपर उसका पुनर्जन्म निर्भर करता है । सुकर्म करने से पुनर्जन्म नहीं होगा । आत्मसंयम, पवित्र आचरण, नीतिमय जीवन के द्वारा आत्मा मुक्ति पाती है । आत्मा की कर्मबंधन से मुक्ति ही निर्वाण है । जैन धर्मावलम्बी का मुख्य लक्ष्य यह निर्वाण प्राप्त करना है । यह केवल उपवास, ध्यान और कठोर संयम द्वारा संभव हो सकता है।

जैन लोग अहिंसा नीति का कैसे पालन करते हैं, सोचकर लिखिए।

धर्मप्रसार :

महावीर जैन धर्म कालक्रम से बहुत लोकप्रिय हुआ । यह भारत के विभिन्न अंचलों को प्रसारित हुआ । इस धर्म की नीतियाँ पालि और प्राकृत भाषाओं में लिखी गई थीं, इसलिए लोग उसे आसानी से जान सकते थे । जैन धर्म के प्रचारक भारत के विभिन्न स्थानों में जाकर इसका प्रचार और प्रसार किया था । यह धर्म सिर्फ भारत में ही नहीं विदेशों में भी गया। मगध के सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य और कलिंग के राजा खारबेल ने जैन धर्म ग्रहण करके इसकी पृष्ठपोषकता की। आजकल गुजरात और राजस्थान में जैन धर्मावलंबी लोग अधिक संख्या में पाये जाते हैं ।

जैन धर्म की कीर्ति :

भारत के विभिन्न स्थानों में जैन धर्म की कीर्तियाँ बनाई गई थीं । उनमें से कर्णाटक में श्रावणबेलगोला की, महाराष्ट्र के एलोरा पहाड़ में विद्यमान जैन गुफाएँ और राजस्थान के आबू पर्वत का जैन मंदिर बहुत सुंदर है । ओड़िशा के भुवनेश्वर में उदयगिरि और खण्डगिरि पहड़ियों पर जैनमंदिर, रानी गुंफा, हाथी गुंफा स्थित हैं ।

जैनधर्मावलंबी कैसे जीवन बिताते हैं, चर्चा करके लिखिए।

महावीर के बाद जैनधर्म दो श्रेणियों में बाँट गया - एक श्वेताम्बर और दूसरा दिगम्बर । जो जैन संन्यासी सफेद वस्त्र परिधान करते उन्हें श्वेताम्बर और जो किसी प्रकार का वस्त्र नहीं पहने, उन्हें दिगम्बर कहा गया ।

गौतम बुद्ध और बौद्ध धर्म :

नेपाल देश के हिमालय के पगतल में कपिलबस्तु नाम की एक नगरी है । शाक्यवंश का एक क्षत्रिय राजा शुद्धोधन वहाँ के शासक थे । उनकी रानी मायादेवी में लुम्बिनी उद्यान में एक पुत्र संतान को जन्म दिया था । उसके सात दिन बाद मायादेवी की मृत्यु हो गई ।

उस सात दिन के शिशुपुत्र को उनकी मौसी गौतमी ने लालन पालन किया था । गौतमी के हाथों पलने के कारण उस पुत्र का नाम पड़ा - गौतम । गौतम का दूसरा नाम था, सिद्धार्थ । बोधि या ज्ञान प्राप्त होने के कारण वे बुद्ध हुए । गौतम बुद्ध महावीर के समकालीन थे ।

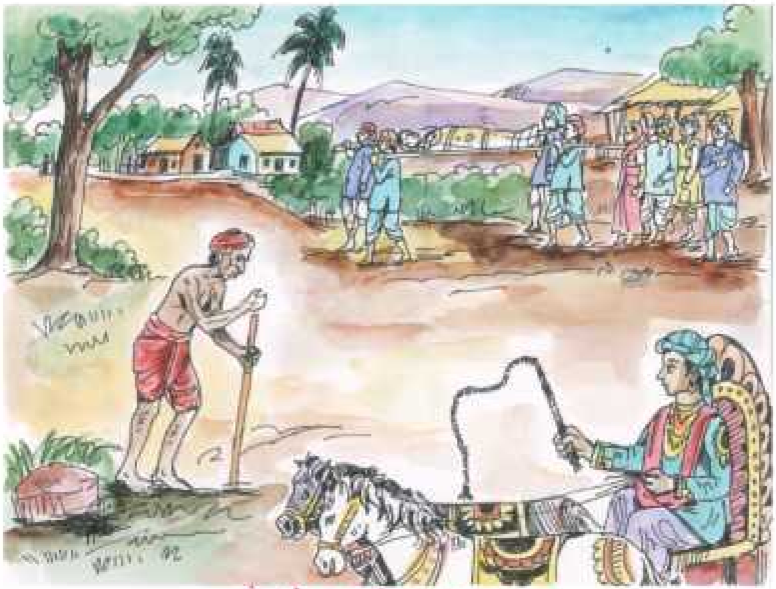

गौतम के नगर परिक्रमा का एक दृश्य

एक सभ्रांत राजवंश में जन्म लेकर भी गौतम संसार के प्रति विरागी हो गए । वे राजसी ठाट से दूर रहते थे । पुत्र के ऐसे अनाग्रह भाव देख पिता शुद्धोदन ने यशोधरा नामक एक सुंदरी कन्या के साथ उनका विवाह करा दिया । राहुल नामक उनका एक पुत्र हुआ । लेकिन संतान, विवाह, राजसुख कोई भी गौतम को संसार बंधन में बाँध न सका । एक दिन गौतम नगर में घूम रहे थे । उन्होंने एक वृद्ध , एक रोगी और एक शव को देखा । इस दृश्यों को देककर उनके मन में वैराग्य भाव पैदा हुआ । उन्होंने सोचा कि संसार में रहोगे तो ये सारे दु:ख भोगने होंगे ।

गौतम के नगर परिक्रमा का दूसरा दृश्य

इसके बाद एक दिन उन्होंने एक भगवा वेशधारी साधु को देखा । तब उनको लगा कि संसार के दु:ख कष्टों से छुटकारा पाने का संन्यास ही अकेला मार्ग है । इसी मार्ग ने उनको आकर्षित किया । इसलिए उनतीस साल की उम्र में एक सुनसान रात को वे अपनी पत्नी, पुत्र और राजप्रासाद को छोड़कर निकल गए । इसी संसार त्याग को बौद्धग्रंथ में 'महाभिनिष्क्रमण' कहा गया है ।

बुद्धदेव

घर छोड़कर गौतम छह सालों तक विभिन्न स्थानों में घूम कर ज्ञान आहरण का मार्ग खोजते रहे । वे आरादकालाम और रुद्रक रामपुत्र नामक संन्यासी के शिष्य हुए । मगर उसमें संतुष्ट न हो सके । इसलिए गया जाकर निरंजना नदी के किनारे एक अश्वत्थ वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान मग्न हुए । बहुत दिन बीत गए । तब उनको ज्ञान की प्राप्ति हुई । तब वे 'बुद्ध' नाम से प्रसिद्ध हुए । जिस अश्वत्थ वृक्ष के मूल में बैठकर वे ध्यान करते थे, उसे 'बोधिद्रुम' और उस स्थान को बुद्धगया कहा गया । यह आजकल बिहार के 'बोधगया' नाम से प्रख्यात है ।

धर्मप्रचार :

ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्धदेव ने सर्वप्रथम सारनाथ के हिरन उद्यान में पाँच व्यक्ति को धर्मवाणी का प्रचार किया । इसी प्रथम धर्म प्रचार को बौद्ध धर्म में 'धर्मचक्र परिवर्तन' कहा जाता है ।

बुद्धदेव अपने दिव्यज्ञान को वितरण करने के लिए भारत के विभिन्न स्थानों में गए थे । वे मगध गए और राजा बिम्बिसार और अजातशत्रु को अपने धर्म में दीक्षित कराया । फिर कोशल पहुँचे और वहाँ के राजा प्रसेनजित और रानी मल्लिका को अपना शिष्य बनाया । कपिलबस्तु जाकर पिता शुद्धोदन, पुत्र राहुल को बौद्धधर्म में दीक्षित कराया। बाद में श्रावस्ती, नालन्दा, कौशाम्वी, चम्पा, पावा, कुशीनगर आदि स्थानों का भ्रमण करके अपने धर्ममत को सरल भाषा में समझाया । ऐसे 45 सालों तक बुद्धदेव ने अपने धर्म का प्रचार विभिन्न स्थानों में करके 80 साल की उम्र में उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में आखिरी साँस ली ।

बौद्ध कीर्त्तिवाले ओड़िशा के कई स्थानों का नाम संग्रह करके लिखिए ।

बौद्धधर्म की नीतियाँ :

बुद्धदेव ने चार सत्य का प्रचार किया था । इसी को 'चतु: आर्य सत्य' कहा जाता है । वे हैं मनुष्य का जीवन दु:खमय है । इस दु:ख का कारण है - कामना । कामना का विनाश होगा तो दु:ख का विनाश होगा । आर्य अष्टांग के माध्यम से कामना का विनाश हो सकेगा । कामना का विनाश हो जाए तो निर्वाण की प्राप्ति हो जाएगी।

वह आर्यअष्टांग मार्ग है - 1. सत्, 2. विश्वास, 3. सत् चिंता, 4. सत् कर्म , 5. सत् आचार, 6. सत् उद्यम , 7. सत् जीविका, 8. सत् संकल्प । यह ब्राह्मण धर्म की कोमलता और जैन धर्म की कठोरता के बीच का रास्ता है । इसलिए इसे 'मध्यम पथ' कहा जाता है ।

गौतम अहिंसा के आचरण पर जोर देते थे। इसलिए किसी को किसी और मनुष्य अथवा प्राणी की हत्या करना उसे कष्ट देना सही नहीं है, यह बात बुद्ध ने अपने शिष्यों को समझाते थे ।

बुद्धदेव ईश्वर की पूजा के पक्षधर नहीं थे । मूर्त्तिपूजा याग-यज्ञ और बलि प्रथा को मना करते थे । वे नीतिसम्मत जीवन जीने पर जोर देते थे ।

बौद्धसंघ :

बुद्धदेव संघ गठन पर ज्यादा जोर देते थे । वे अपने शिष्यों को लेकर बौद्ध संघ का गठन किया था । इस बौद्धसंघ में अंतर्भुक्त लोग संघबद्ध होकर बौद्ध विहारों में रहते थे । बौद्धविहारों में रहकर बौद्ध संन्यासी लोग धर्मचर्चा और ध्यान करते थे । ये बौद्ध विहार शिक्षादान के केन्द्रों के रूप में भी काम करते थे । यहाँ बौद्धों को शिक्षा का दान किया जाता था और बौद्ध धर्म का प्रचार भी किया जाता था । बौद्ध संघ में योगदान करने के लिए व्यक्ति को सिर घुटाकर गेरुआ वस्त्र पहन कर यह तीन बार उच्चारण करना होता था -

"बुद्धं शरणं गच्छामि
धम्मं शरणं गच्छामि
संघं शरणं गच्छामि ।"

सारनाथ की बौद्धस्तूप

बौद्धधर्म के ग्रंथ को "त्रिपिटक" कहा जाता है ।

बौद्धधर्म की प्रगति के लिए कई राजे और व्यापारी लोग धन दान करके विहार (मठ) और कीर्तियाँ बनाई थीं । भारत के सारनाथ, साँची, बोधगया और ओड़िशा के धौली, रत्नगिरि, उदयगिरि, ललितगिरि, लांगुड़ि आदि पहाड़ों पर बौद्धस्तूप और विहार विद्यमान हैं । स्तूप बौद्ध शिल्पकला का एक मुख्य निदर्शन है ।

बौद्ध धर्म पूरे भारत में और भारत के बाहर तिब्बत , चीन, जापान, श्रीलंका, मियाँमार, इण्डोनेसिया, कोरिया जैसे देशों में प्रसारित हुआ था । ये बौद्धाधर्मावलंबी बाद में हीनयान और महायान इन दो संप्रदायों में बँट गए थे ।

स्तूप का आकार कैसा है ? उसे बौद्ध किस काम में लगाते हैं, तथ्य संग्रह कीजिए।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों का 50 शब्दों में उत्तर दीजिए ।

(क) 'उपनिषद' से हम क्या जान पायेंगे ?

(ख) उपनिषदों में किस विषय पर चर्चा की गई है ?

(ग) कठोपनिषद में कि विषय का उल्लेख है ?

(घ) पार्श्वनाथ कौन हैं ? उन्होंने क्या किया था ?

(ङ) महावीर का जन्म परिचय दीजिए ।

(च) जैन धर्म का प्रचार किन कारणों से हो पाया था ?

(छ) महावीर जिन ने कर्मवाद पर क्या कहा है ?

(ज) जैन 'पंचमहाव्रत' क्या है ?

(झ) बुद्धदेव के जन्म और बाल्यावस्था का वर्णन कीजिए ।

(ञ) गौतम का गृहत्याग करने का क्या कारण था ?

(ट) गौतम क्यों बुद्ध नाम से परिचित हुए ?

(ठ) बुद्धदेव ने अपना धर्म कैसे प्रचार किया ?

(ड) बौद्धधर्म के सत्य क्या क्या है ?

(ढ़) 'आर्य अष्टांग मार्ग' क्या है ?

2. निम्नलिखित हर प्रश्न के लिए चार संभाव्य उत्तर दिए गए हैं । उनमें से सही उत्तर चुनकर शून्यस्थान की पूर्ति कीजिए।

(क) अर्जुन श्रीकृष्ण से .... प्राप्त किया था ।

(क) कर्मज्ञान (ख) शास्त्रज्ञान (ग) ब्रह्मज्ञान (घ) सृष्टिज्ञान

(ख) जिसका अध्ययन करने से ब्रह्मप्राप्ति होती है उसे .... कहते हैं ।

(क) ब्राह्मण (ख) उपनिषद (ग) अरण्यक (घ) वेद

(ग) भारतीय दार्शनिक .... अद्वैतवाद के प्रवर्त्तक हैं ।

(क) शंकराचार्य (ख) बल्लभाचार्य (ग) माध्वाचार्य (घ) रामानुज

(घ) जैनधर्म के प्रसार के लिए राजा .... कई कदम उठाए थे ।

(क) बिन्दुसार (ख) अजातशत्रु (ग) अशोक (घ) खारबेल

(ङ) .... श्रेणी के जैन संन्यासी श्वेत वस्त्र पहनते हैं ।

(क) दिगम्बर (ख) श्वेताम्बर (ग) अजीबीक (घ) निर्गंथ

(च) सारनाथ में बुद्धदेव ने..................... शिष्यों को बौद्धधर्म में दीक्षित कराया ।

(क) 2 (ख) 5 (ग) 11 (घ) 13

(छ) ओड़िशा में बौद्धकीर्ति .... स्थान में हैं ।

(क) रत्नगिरि (घ) खण्डगिरि (ग) नियमगिरि (घ) महेंद्रगिरि

3. निम्न प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दो वाक्यों में दीजिए ।

(क) भारतीय कृषि और महर्षियों ने उपनिषद की व्याख्या कैसे की है ?

(ख) महावीर के पहले कितने जैन तीर्थंकर थे ? प्रथम और महावीर के पूर्व वाले तीर्थंकरो के नाम लिखिए।

(ग) 'जिन' शब्द का क्या अर्थ है ? महावीर द्वारा प्रचारित धर्म को क्या कहा गया है ?

(घ) महावीर का देहांत किस स्थान में हुआ था ?

(ङ) महावीर कर्मवाद के बारे में क्या कह गए हैं ?

(च) बुद्ध का नाम गौतम क्यों हुआ ?

(छ) बुद्धदेव ने कोशल राज्य और कपिलवस्तु राज्य में किन लोगों को अपने दर्म में दीक्षित किया था ?

(ज) त्रिपिटक क्या है ?

4. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक - एक वाक्य में लिखिए।

(क) उपनिषद में चर्चित जटिल तत्त्व क्या है ?

(ख) उपनिषद में ब्रह्मतत्त्व का कथोपकथन किन के बीच हुआ है ?

(ग) जैन धर्म का मूलमंत्र क्या था ?

(घ) जैन धर्मावलंबी कितने भागों में विभाजित हुए थे ?

(ङ) 'महाभिनिष्क्रमण' क्या है ?

(च) 'धर्मचक्रप्रवर्त्तन' का क्या मतलब है ?

5. ‘क’ स्तंभ के शब्दों के साथ ‘ख’ स्तंभ के संबंधित शब्दों को रेखा खींचकर जोड़िए।

‘क’स्तंभ	‘ख’स्तंभ
मध्यम पथ	जैन मंदिर
आबू पर्वत	जैन धर्म
नचिकेता	उपनिषद
	बौद्धधर्म

आपके लिए काम

विभिन्न बौद्ध कीर्तियों के चित्र संग्रह करके एक एलबम बनाइए।

पारसी और ग्रीक आक्रमण

सुमित अपने पिताजी के साथ दिल्ली घूमने गया । वहाँ उसे लालकिले के स्वतंत्रता दिवस का परेड़ देखने को मौका मिला। उसने देखा कि हमारी सेनावाहिनी के जवान परेड़ में मार्च करते हैं। फिर उन जवानों के बारे में जानने की उसे बड़ी इच्छा हुई । तब उसने पिताजी से पूछा, "यह सेनावाहिनी क्या काम करती है ?" पिताजी ने समझाया, वे जवान हमारे देश को विदेशी आक्रमण से बचाते हैं । हमारे देश पर प्राचीन काल से ही हमले होते आ रहे हैं । सुमित ने उन प्राचीन काल के हमलावारों के बारे में जानना चाहा तो पिताजी ने कहा- अब सुनो ।

अतीत में भारत को सोने का देश कहा जाता था । क्योंकि इस देश में विपुल धनसंपत्ति भरी थी । इस धनसंपत्ति को पाने और अपने साम्राज्य को विस्तार करने के लिए कई वैदेशिक शक्तियों में भारत पर हमला किया था। उनमें पारसी और ग्रीक भी थे ।

पारसी आक्रमण :

ईस्वी पूर्व छठी शताब्दी के पहले चरण में मध्यएशिया के फारस देश में (अब ईरान) एक विशाल साम्राज्य उठ खड़ा हुआ था । यह देश आकामेनिन शासकों द्वारा शासित होता था । पारस का सम्राट डेरायस प्रथा ई.पू. 522 में फारस का शासन संभाला । धन के लोभ से खंच कर उसने भारत के उत्तर पश्चिम अंचल पर हमला कर दिया । उस अंचल में कोई ताकतवर शासक नहीं था ।

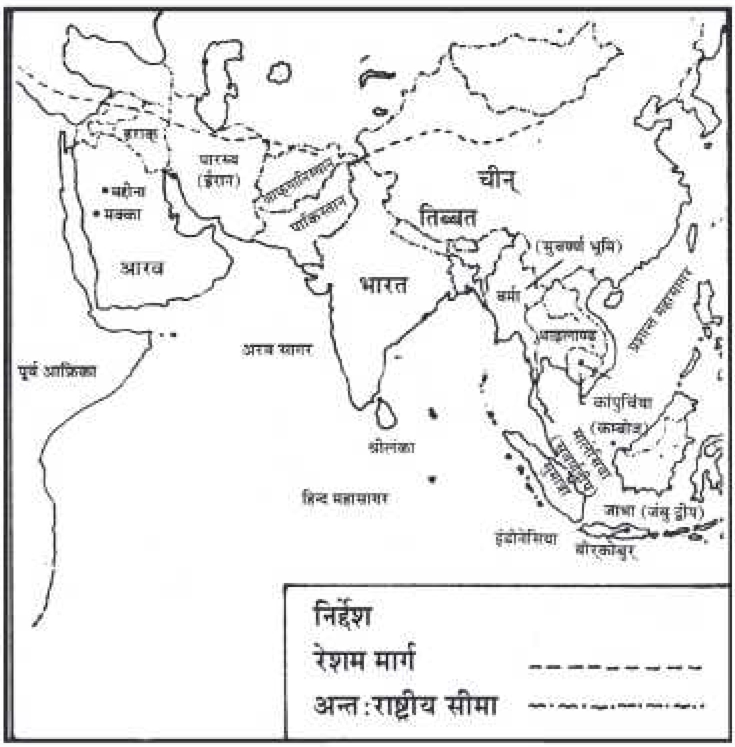

इसलिए डेरायस ने पंजाब, सिंधु प्रदेश, सिंधु नदी के पश्चिम अंचल पर कब्जा जमा लिया और उसे पारस साम्राज्य में शामिल कर लिया । फारसों के द्वारा दखल किया गया यह अंचल सबसे ज्यादा उर्वर और घनी आबादी वाला था । पारस के राजा लोग इस अंचल से काफी राजस्व वसूल करते थे । सिकंदर द्वारा पारस आक्रमण होने तक यह अंचल पारस राजाओं के अधीन था । डेरायस के बाद राजा जेरकसस ने भारतीयों को पारसी सेनावाहिनी में नियुक्ति देकर ग्रीकों के विरुद्ध युद्ध का ऐलान किया ।

पारसिक आक्रमण का प्रभाव :

भारत के साथ पारस देश का संबंध 200 सालों तक रहा । इन दो देशों के बीच व्यापारिक संबंध स्थल और जलपथ दोनों से चलता था । परंतु सांस्कृतिक क्षेत्र में पारसियों का ज्यादा प्रभाव था । पारसियों से भारतीयों ने एक एक नई लिपि सीखी थी, जिसका नाम था खरोष्टी । यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी । उत्तर पश्चिमेंचल में अशोक के कई शिलालेख इसी खरोष्टी लिपि में लिखे गए हैं ।

अशोक के द्वारा बनाए गए स्तंभों पर पारसी सभ्यता का प्रभाव देखा जाता है । अशोक के अनुशासन में फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ है । अनुमान है कि पारसियों से ही भारत में विपुल संपत्ति होने की सूचना पाकर ग्रीकों ने भारत पर आक्रमण किया था ।

एशिया महादेश का नक्शा देखकर पारस देश कहाँ था, चिह्नित कीजिए और उस देश के बारे में ज्यादा तथ्य संग्रह कीजिए।

ग्रीक आक्रमण :

सिकंदर (अलेकजण्डर) ईसापूर्व 356 ईस्वी में ग्रीस देश के मेंसिडोनिया (मकदुनिया) नामक एक छोटे से राज्य में जन्मा था । उसके पिता फिलिप मेसिडोनिया राज्य के राजा थे । बचपन में सिकन्दर ग्रीक दार्शनिक अरिस्टोटल से शिक्षा प्राप्त की थी । बीस साल की उम्र में 6 सिहांसन आरोहण करने के कुछ दिनों बाद उसने एशिया माइनर, पारस, सिरिया, मिशर, अफगानिस्तान आदि अंचलों पर विजय हासिल की थी । उनकी वीरता और साहस के कारण उन्हें दिग्विजयी वीर कहा जाता है । उन्होंने सारी पृथ्वी पर विजय पाने का सपना देखा था ।

ईसा पूर्व 334 को अपने चालीस हजार सैनिकों के साथ सिकन्दर ने एशिया माइनर पर आक्रमण किया। यहाँ से पारस की ओर चला और पारस के सम्राट डरोयस - 3 को पराजित किया । सिकंदर ने सिरिया और मिस्त्र पर भी हमले किए । पारसों से मिस्त्र को अलग करके वहाँ पर 'अलेकजाण्ड्रिया' नामक नगर स्थापित किया था ।

ईसा पूर्व 326 को सिकन्दर ने भारत की ओर अभियान शुरू किया ।

उसने खैबर गिरिपथ से होकर भारत में प्रवेश किया और उत्तर पश्चिम में स्थित सीमांत प्रदेशों पर आक्रमण किया । तब भारत के उत्तर - पश्चिम में गांधार, कम्बोज जैसे बहुत सारे छोटे - छोटे राज्य थे । इन राज्यों के बीच एकता नहीं थी । वे आपस में बराबर लड़ते रहते थे । सिंधु और वितस्ता नदी के बीच तक्षशीला नगर तब गांधार राजा की राजधानी थी। इस नदी के आरपार एक राज्य था जिस पर पौरव वंश राज करता था । इस राज्य का नाम और राजधानी क्या था, अभी तक पता नहीं चल पाया है ।

भारत के उत्तर पश्चिम में स्थित राज्यों में से कई राज्य सिकंदर की अधीनता स्वीकार कर ली । तक्षशीला का राजा अम्बि ने भी सिकंदर का विरोध न करके आत्मसमर्पण कर दिया था । पौरव राज्य के राजा पुरु लेकिन सिकंदर के गतिपथ को रोक कर खड़े हुए । लिहाजा पुरु भी सेना और सिकंदर सेना के बीच भीषण घमासान युद्ध हुआ । इसी को हाइदास्पेस युद्ध कहा जाता है ।

इस युद्ध में सिकंदर विजयी हुए । पुरु को जबर्दस्त चोट पहुँची । फिर भी वे आखिरी वक्त तक लड़ते रहे । आखिरकार वन्दी हुए । जब सिकंदर ने सामने खड़े वन्दी पुरु से पूछा, "मुझ से कैसे बर्ताव का आशा करते हो"तो निर्भीक पुरु ने जवाब दिया "जैसे एक राजा के साथ दूसरा राजा बर्ताव करता है, वैसा ।"

इस तरह एक भारतीय राजा के साहस और वीरता ने सिकंदर के दिल को जीत लिया । उन्होंने न केवल पुरु की जान बचाई, अपितु सम्मान के साथ उनका राज्य भी लौटा दिया । वहाँ से सिकन्दर आगे बढ़ कर दूसरे राज्यों पर विजय प्राप्त करना चाहते थे । लेकिन उनके थके- माँदे सैनिक और लड़ाई नहीं करना चाहते थे । तैयार नहीं हुए । उसके अलावा मगध का शक्तिशाली नन्द साम्राज्य का मुकाबला करने के लिए ग्रीक सेना हिम्मत नहीं कर पायी। इसलिए मजबूरन सिकंदर विजय की आशा छोड़ स्वदेश लौट गए । वे स्वदेश लौटते हुए,बेबीलोन में ज्वर रोग की चपेट में आ गए और ईसा पूर्व 323 को 32 साल की उम्र में इस दुनिया से चल बसे ।

सिकंदर जैसे कुछ दूसरे दिग्विजयी वीरों के नाम संग्रह कीजिए और एक तालिका बनाइए।

सिकंदर के आक्रमण का प्रभाव :

सिकन्दर के हमले का भारत पर जबर्दस्त प्रभाव पड़ा । उनके हमले ने भारतीय समाज को दूर तक और गहराई से प्रभावित किया । जैसे -

- सिकंदर के हमले ने भारत में राजनैतिक एकता लाने में मदद की । उनके बाद भारत में एक विशाल मौर्य साम्राज्य गठित हो पाना संभव हुआ ।
- इस आक्रमण से भारत और यूरोप के बीच व्यापारिक संबंध प्रसारित हुआ ।
- भारत और ग्रीस के साथ सांस्कृतिक संपर्क स्थापित हुआ ।
- पहले भारत और ग्रीस के बीच सिर्फ स्थल पथ था। इस आक्रमण के बाद जल-पथ भी आविष्कृत हुआ ।
- भारत और ग्रीक कला के मिश्रण से गांधार कला पैदा हुई ।
- मोटे तौर पर सिकंदर के आक्रमण से प्राच्य पाश्चात्य देशों के बीच संपर्क स्थापित हुआ ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50 शब्दों में दीजिए।

(क) पारस के सम्राट प्रथम डेरायास ने भारत पर क्यों हमला किया ?

(ख) सिकंदर का भारत पर हमला करने का क्या कारण है ?

(ग) पुरु कौन हैं ? सिकंदर के साथ उनका क्या संबंध था ?

(घ) सिकंदर के आक्रमण का क्या नतीजा हुआ ?

(ङ) ईसा पूर्व छठी सदी में पारस के किस राजा ने भारत पर हमला किया था और क्यों ?

2. कोष्ठक में सही शब्द चुनकर खाली स्थानों को भरिए।

(क) तक्षशीला —— राज्य की राजधानी थी ।

(कंबोज, मगध, गांधार, पंजाब)

(ख) डेरायस ने —— में पारस का शासन हाथ में लिया ।

(ई.पू. 468, ई.पू. 522, ई.पू. 322, ई.पू. 427)

(ग) सिकंदर —— उम्र में गद्दी पर बैठे ।

(17 साल, 18 साल, 19 साल, 20 साल)

3. एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

(क) फिलिप किस राज्य के राजा थे ?

(ख) सिकंदर के शिक्षागुरु कौन थे ?

(ग) सिकंदर ने किस नगर की स्थापना की थी ?

(घ) अम्बि किस देश के राजा थे ?

(ङ) उत्तर भारत के सबसे शक्तिशाली राजा कौन थे ?

(च) भारतीयों ने पारसियों से कौन-सी लिपि सीखी थी ?

आपके लिए काम :

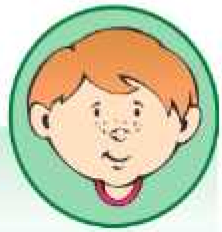

विभिन्न दिग्विजयी सम्राटों के चित्र संग्रह कर उनके बारे में विवरण प्रस्तुत कीजिए।

मौर्य साम्राज्य का उत्थान

मिताली ने अपनी टेबिल पर एक रुपया, दो रुपए, पाँच रुपए की मुद्राओं के साथ पाँच का नोट, दस का नोट बिखेर कर रखा था । उसके बाबूजी कमरे में आ गए और मिताली से सवाल किया - "मिता, इन रुपयों को क्यों ऐसे रखी हुई हो। " मिताली बोली, "बाबा, मैं देख रही हूँ कि हर मुद्रा और नोट पर तीन शेरों के निशान हैं । यह चित्र कहाँ से आया है और क्यों सभी मुद्रा और रुपयों में हैं ?" मिताली को समझाने के लिए पिताजी बोले -

प्राचीन काल में उत्तर भारत में मगध नामक एक शक्तिशाली साम्राज्य था । यह साम्राज्य दो सौ सालों तक कायम रहा । वहाँ मौर्य वंश के राजा लोग राज करते थे । मौर्यवंश के शासन से पहले वहाँ नन्द वंश का राज चलता था । नन्दवंश के शासक वर्ग बड़े क्रूर और अत्याचारी थे। उनके कुशासन से लोग परेशान हो गए थे । इसलिए उन्होंने लोकप्रियता खो दी थी । चाणक्य नामक एक ज्ञानी पंडित मगध से नन्दवंश को मिटा देने की शपथ ली थी । उस शपथ को कार्यान्वित करने के लिए वे किसी मौके की ताक में थे । ठीक उसी समय वे चंद्रगुप्त नाम के एक युवक से मिले। वे मौर्यवंश में जन्मे थे । चन्द्रगुप्त की बुद्धि, साहस और चतुराई को देखकर चाणक्य आर्श्चन्वित हो गए । उन्होंने चन्द्रगुप्त की मदद से मगध से नन्द राजत्व को मिटा देने का निश्चय किया । उन्होंने चंद्रगुप्त को मगध पर हमला करने को उकसाया। आज के पंजाब अंचल की कई दुर्द्धर्ष जाति और उपजातियों के लोगों को इकट्ठे करके चन्द्रगुप्त ने एक शक्तिशाली फौज गठन की। उस सेनावाहिनी की मदद से नन्दराजा को पराजित करके चंद्रगुप्त ने मगध पर कब्जा किया और मौर्यवंश के शासन की स्थापना की ।

कोई शासक किन कारणों से लोकप्रियता खो देते हैं, साथियों से चर्चा करके लिखिए।

इस मौर्य साम्राज्य के बारे में सारे तथ्य मेगास्थिनिज के द्वारा लिखित "इण्डिका" में , चाणक्य के "अर्थशास्त्र" नामक ग्रंथ से और अशोक के शिलालेखों से मिलते हैं ।

चन्द्रगुप्त मौर्य :

चन्द्रगुप्त ने नन्दराज धननन्द को परास्त करके मगध में मौर्य शासन का आरंभ किया। इसी समय सिकंदर के सेनापति सिल्युकस निकतार भारत में ग्रीक अधिकृत अंचल के शासक थे ।

चन्द्रगुप्त ने सिल्युकस से लड़ाई करके उन्हें पराजित किया था । युद्ध में हारकर सिल्युकस बेबस होकर चन्द्रगुप्त से संधि की थी । संधि के मुताबिक ग्रीक के दखल में जो इलाके अफगानिस्तान (काबुल, कंदाहार और हेरात), बलूचिस्तान आदि भारत के उत्तर पश्चिम अंचल थे वे चन्द्रगुप्त साम्राज्य में शामिल हो गए । फलत: वहाँ से ग्रीक शासन का अवसान हो गया । उन्होंने पश्चिम भारत के गुजरात के सौराष्ट्र तक के इलाकों को अपने साम्राज्य से मिला लिया था ।

चन्द्रगुप्त मौर्य के समय मौर्य साम्राज्य उत्तर पश्चिम में पारस तक, पूर्व में बिहार, पश्चिम में सौराष्ट्र और दक्षिण में कर्नाटक तक व्याप्त था । उनके साम्राज्य की राजधानी थी पाटलिपुत्र, जिसे आज के बिहार के पटना के रूप में चिह्नित किया गया है । चन्द्रगुप्त लंबे 25 सालों तक राज किया था । ईसा पूर्व 298 ईस्वी को उनकी मृत्यु हुई ।

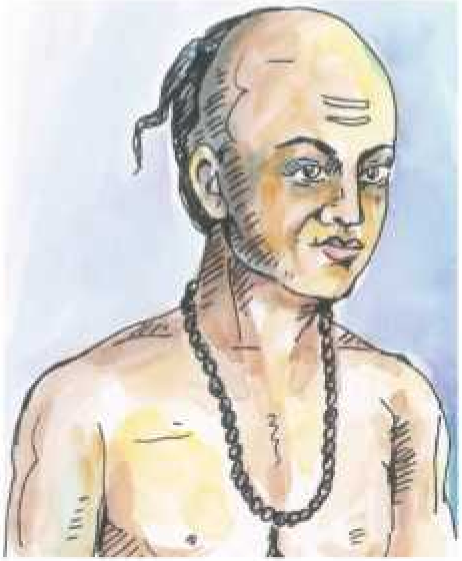

चाणक्य :

चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने मुख्य उपदेष्टा के रूप में चाणक्य को नियुक्त किया था । चाणक्य का एक दूसरा नाम भी था कौटिल्य । उन्होंने "अर्थशास्त्र" नामक एक ग्रंथ की रचना की थी । इस ग्रंथ में मौर्य साम्राज्य की शासन प्रणाली और राजनैतिक, सामाजिक और अर्थनैतिक व्यवस्था पर चर्चा की गई है ।

मेगास्थिनिस :

ग्रीक राज सिल्युकस निकतार के निर्देश पाकर ग्रीक राजदूत के रूप में मेगास्थिनिस चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आए थे । वे मौर्य दरबार में लंबे पाँच साल रहे । इस अवधि में उन्होंने भारत के बहुत से अंचल घूम कर देखा था । भारत के बारे में उन्होंने जो विवरणात्मक पुस्तक लिखी थी, उसका नाम है "इण्डिका" । उसमें मौर्य राजत्व और शासन व्यवस्था, खास करके पौर शासन (स्वायत्त शासन) के बारे में बहुत सी बातें लिखी हैं । इसके अलावा उन्होंने मौर्य राजप्रासाद और पाटलिपुत्र नगर का भी वर्जन किया है ।

बिन्दुसार :

चन्द्रगुप्त के बाद उनके पुत्र बिन्दुसार राज गद्दी पर बैठे । वे एक पराक्रमी सम्राट थे । पिता के विशाल साम्राज्य पर वे दक्षतापूर्वक शासन करते रहे । ग्रीक ने उन्हें "अमृतघात" की उपाधि दी थी । उन्होंने अपने बाहुबल से 16 राजाओं को पराजित कर उनके राज्यों को मौर्य साम्राज्य में शामिल किया था ।

अशोक :

ईसा पूर्व 273 में विन्दुसार के बाद अशोक मौर्य साम्राज्य के शासक हुए । अशोक बचपन से बड़ी ही निडर, साहसी और क्रूर थे । उनके निष्ठुर और भयानक स्वभाव के लिए उनको "चण्डाशोक" कहा जाता था । विन्दुसार के शासन काल में तक्षशीला में विद्रोह हुआ था । उस विद्रोह को दमन करने के लिए राजकुमार अशोक को वहाँ भेजा गया था । विद्रोह दमन करने के लिए अशोक को तक्षशीला और उज्जैन का प्रादेशिक शासक नियुक्त किया गया था। अशोक बिन्दुसार की मृत्यु के बाद मगध सिंहासन पर बैठे थे, लेकिन उनका अभिषेक चार साल बाद हुआ था।

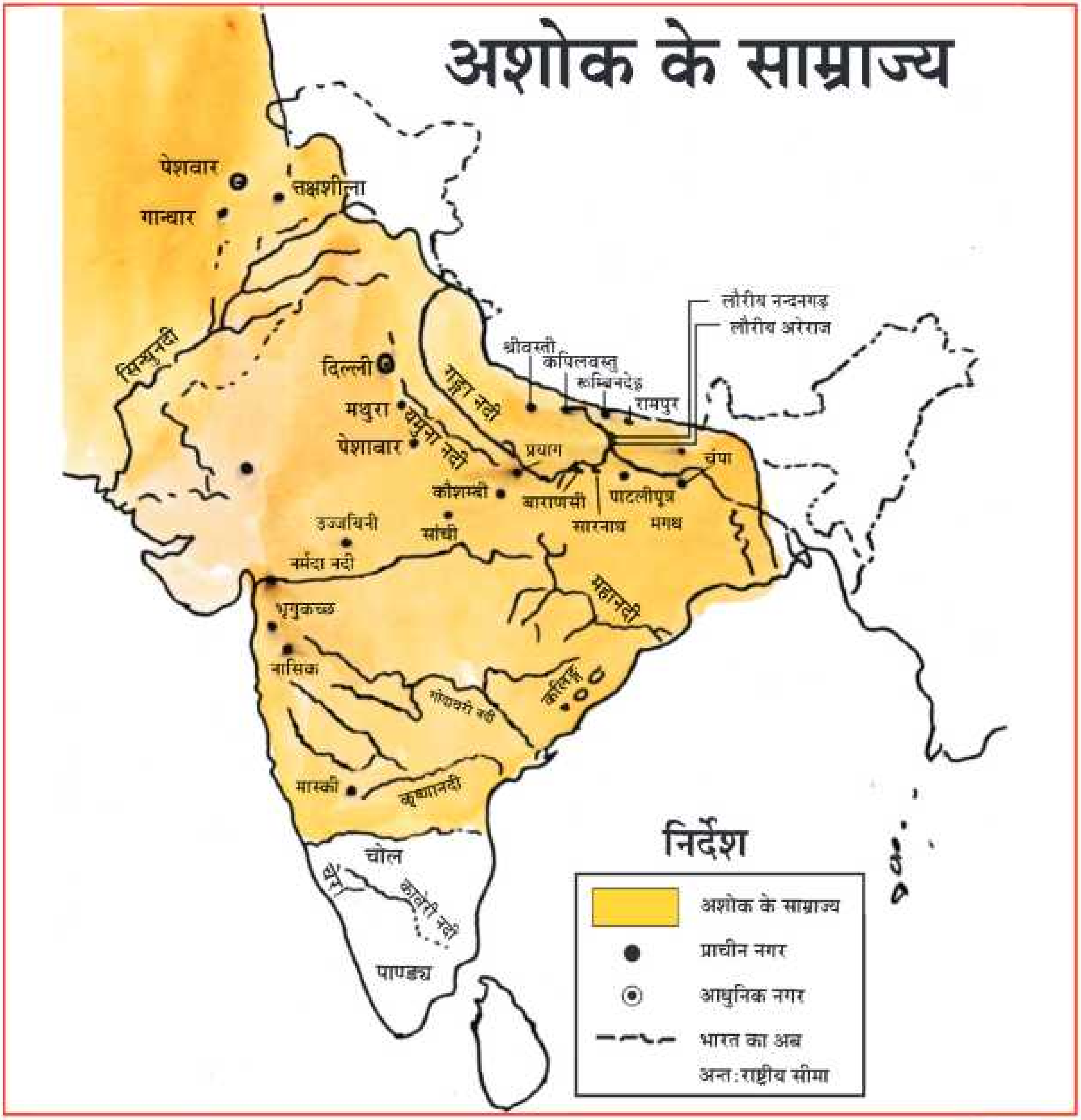

कलिंग युद्ध :

सुवर्णरिखा नदी से गोदावरी नदी तक अत्यंत विस्तृत पूर्व सागर के तट पर कलिंग राष्ट्र फैला हुआ था । यह प्राचीन भारत का एक शक्तिशाली राष्ट्र था । अशोक अपने साम्राज्य के नजदीक एक स्वतंत्र और शक्तिशाली राष्ट्र की अवस्थिति को सहन नहीं कर सके । यह कलिंग राष्ट्र (वर्तमान में ओड़िशा राज्य) विपुल ऐश्वर्य का अधिकारी था और व्यापार वाणिज्य का पीठस्थान था । मगध साम्राज्य की अर्थनीतिकी स्थिति को दृढ़ करने के लिए अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया । ईसापूर्व 261को अशोक ने कलिंग पर हमला कर दिया । बहुतों का विश्वास है कि शक्तिशाली कलिंग सेनावाहिनी ने भुवनेश्वर की दयानदी के किनारे स्थित धौली पहाड़ के पास अशोक की सेनावाहिनी का प्रतिरोध किया था । लेकिन प्रबल पराक्रमशाली अशोक की सेना द्वारा कलिंग सेना पराजित हुई । इस लड़ाई में एक लाख सैनिक मारे गए । देढ़ लाख लोग वन्दी बनाए गए । युद्ध के कारण जितनी मौतें हुई ; जैसा रक्तपात हुआ , जितना नुकसान हुआ और आहत सैनिको का जो आर्त्तनाद उठा, उसी से अशोक का हृदय व्यथित हो उठा । उनका हृदय परिवर्त्तन हो गया । वहाँ उन्होंने अस्त्र त्याग दिया और यह तय किया कि फिर से जीवन में कोई जंग नहीं लड़ेंगे ।

आजकल भुवनेश्वर के धौली के पास अशोक के समय की जो कीर्ति देखने को मिलती है , उसके बारे में पूछताछ करके लिखिए।

अशोक द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार और प्रचार :

कलिंग युद्ध ने अशोक की जीवनधारा को पूरी तरह बदल दिया । कलिंग युद्ध में हुए रक्तपात ने ही अशोक को 'चण्डाशोक' से 'धर्माशोक' में बदल दिया । इस युद्ध के बाद अशोक बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए और उसके प्रचार-प्रसार के लिए अपने को लगा दिया । बौद्ध धर्म की अहिंसा नीति के प्रति वे काफी आकृष्ट हुए उसकी प्रगति के लिए उद्यम किए।

अशोक धर्म के प्रचार के लिए लुम्बिनी, सारनाथ, कुशीनगर (कुशीनारा) आदि स्थानों में स्वयं गए । उनकी इस यात्रा को धर्मयात्रा कहते हैं । बौद्ध धर्म की मुख्य पीठस्थलियों की यात्रा करने से बहुत लोग बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित हुए । उस धर्म में दीक्षित भी हुए ।

शिलालेख :

बौद्धधर्म के प्रसार के लिए अशोक ने अनेक स्तंभ, स्तूप, विहारों की स्थापना अपने साम्राज्य के विभिन्न स्थानों में की थी । भुवनेश्वर के पास धौली पहाड़ में उनका एक शिलालेख है । एक दूसरा शिलालेख गंजाम जिले के जौगढ़ में है । उनके निर्देश से शिला और स्तंभों पर खुदे लेखों की विषयवस्तु प्रजा और राजकर्मचारियों के लिए अनुशासन है। यह उनके द्वारा प्रवर्तित "धम्म" नीति के संकेत देते हैं । अशोक अपने अनुशासन में जनता को उनके कर्तव्य के प्रति सचेतन कराने के लिए नीतिवाणियों का खोदन करवाया था । वे नीतियाँ हैं - (1)जीवों की हत्या से निवृत्त रहना, (2) जीवों के प्रति अहिंसा भाव दिखाना, (3) माता-पिता और गुरुजनों की आज्ञा का पालन करना (4) गुरुजनों की भक्ति करना (5) वंधुवर्ग , आत्मीय स्वजन, ब्राह्मण , वृद्ध विपत्ति में फंसे लोगों के प्रति अच्छा आचरण करना (6) दास-दासी नौक-चाकरों के प्रति दया करना (7) सच बोलना (8) कुछ संचय (वचत) करना आदि । प्रेम और मित्रता के जरिए हृदय जीता जा सकता है । इसलिए आपस में भाईचारा बनाए रखें ।

धर्म महापात्र :

अशोक ने धर्म महापात्र नामक अनेक कर्मचारियों को नियुक्त किया था । वे धर्म महापात्र पूरे देश में घूम-घूम कर जनसाधारण को "धम्म" नीति सुनाते थे और उनको बौद्ध धर्म के प्रति आकृष्ट करते थे । "धम्म" नीति समझाते थे। इसके अलावा अशोक ने राजुक, प्रादेशिक और युक्त नामक कर्मचारियों को नियुक्त किया था । ये लोग प्रजाजनों को प्यार करते थे और उनके मंगलविधान के लिए काम करते थे ।

जनमंगल कार्य :

अशोक ने प्रजाओं के हित के लिए बहुत जनमंगलकारी कदम उठाए थे । लोगों के यातायात के लिए बहुत सारे रास्ते बनवाए गए और पथिकों की सुविधा के लिए रास्ते के किनारे छायादार पेड़ लगवाए थे । लोगों के स्वास्थ्य के प्रति नजर रखकर बहुत से स्थानों में औषधि जाति के पेड़-पौधे लगाने के लिए उद्यान बनवाए थे । लोगों को पेयजल मुहैया करने के लिए बहुत से कुएँ खुदवाए थे और पथिकों के विश्राम के लिए पांथशालाएँ बनवाई थीं । मनुष्य और पशुओं के लिए अनेक अस्पताल स्थापित किए थे ।

अशोक के शिला और स्तंभों के लेखों से क्या पत्ता चलता है कि वे किस प्रकार के राजा थे ? अपने विचार लिखिए ।

भारत के बाहर देशों के साथ संबंध :

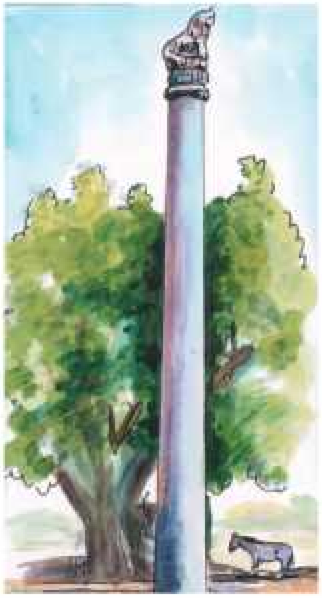

मौर्य शासकों ने भारत के बाहर अनेक देशों से बराबर संबंध रखा था । अशोक की प्रचेष्टा से पश्चिम एशिया के लोगों के बीच भाईचारा, अहिंसा और शांति आदि मानवीय नीतियों की नींव पड़ी थी । वे अपने पुत्र और कन्या को श्रीलंका में भेज कर वहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार कराने के साथ भाईचारे को बढ़ावा दिया था । उसी प्रकार ब्रह्मदेश का शोण और डभ्र् नाम के दो बौद्ध भिक्षुओं को भेजा था ।

अशोक स्तंभ :

अशोक कला और स्थापत्य के पक्षधर थे । उन्होंने अनेक प्रासाद, स्तूप, स्तंभ, बौद्ध विहारों का निर्माण कराया था । इनमें से सारनाथ स्तंभ मुख्य है । इस स्तंभ के शीर्ष पर चार शेर के सिर बने हैं । ये चार दिशाओं की ओर मुँह करके बैठे हैं । भारत सरकार ने इसी सिंह को राष्ट्रीय संकेत के रूप में स्वीकार किया है । इस (अशोक स्तंभ) के सिंह को भारतीय मुद्राओं में स्थान मिला है और इसके चक्र को राष्ट्रध्वज में स्थान दिया गया है । इस स्तंभ की ऊँचाई 2.15 मीटर है । इस अशोक स्तंभ में चार सिंह, एक घोड़ा, एक हाथी और एक साँड़ का चित्र है । इसमें जो चक्र हैं, वह सत्य का प्रतीक है । इसमें 24 आरे हैं ।

हमारे राष्ट्रध्वज का चित्र बनाकर रंग भरिए।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50 शब्दों में दीजिए।

(क) चंद्रगुप्त मौर्य ने कैसे नन्दवंश लोप करके मगध में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी ?

(ख) सिल्यूकस निकतार कौन है ? चन्द्रगुप्त के साथ उनके युद्ध की क्या परिणति हुई थी ?

(ग) चाणक्य द्वारा लिखित "अर्थशास्त्र" में किन विषयों का उल्लेख है ?

(घ) मेगास्थिनिस कौन हैं ? उनके विवरणों में क्या लिखा है ?

(ङ) कलिंग युद्ध के कारण और परिणाम क्या थे ?

(च) कलिंग युद्ध से अशोक के मन में क्यों परिवर्तन हुआ ?

(छ) अशोक का "धम्म" नीति क्या थी ?

(ज) अशोक ने कौन सा धर्म ग्रहण किया था ? उसके प्रसार के लिए उन्होंने क्या - क्या कदम उठाए थे ?

2. संक्षेप में इनके संबंध में लिखिए।

अशोक के शिलालेख, अशोक स्तंभ, धर्म महापात्र

3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दो वाक्यों में लिखो ।

(क) चन्द्रगुप्त ने किन लोगों को लेकर एक सेनावाहिनी गठित की थी ?

(ख) अशोक द्वारा कलिंग आक्रमण करने के दो कारण क्या हैं ?

(ग) बिन्दुसार तक्षशीला के विद्रोह को दमन करने किसे भेजा था ?

(घ) चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य का विस्तार कहाँ से कहाँ तक था ?

4. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक एक वाक्य में दीजिए।

(क) अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र-कन्या को कहाँ भेजा था ?

(ख) अशोक स्तंभ में जो चक्र है, उसे क्या कहा जाता है ?

(ग) अशोक के निष्ठुर स्वभाव हेतु उन्हें क्या कहा जाता था ?

(घ) कलिंग युद्ध कब हुआ था ?

(ङ) चन्द्रगुप्त मौर्य ने किसे पराजित करके मगध के शासक बने थे ?

5. हर उक्ति के भ्रम का संशोधन कीजिए ।

(क) ग्रीक वीर सिकन्दर के सेनापति थे मेगास्थिनिज ।

(ख) चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य को सेनापति नियुक्त किया था ।

(ग) अशोक ने धर्म महापात्रों को युद्ध कार्य में नियुक्त किया था ।

(घ) अशोक स्तंभ में चार बाघों के चित्र हैं ।

6. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

(क) मगध के नंदवंश का लोप करने के लिए .... शपथ ली थी ।

(चन्द्रगुप्त ने, अशोक ने, चाणक्य ने, सिल्यूकस, निकतार ने)

(ख) मेगास्थिनिज ग्रीस देश का .... थे ।

(राजदूत, राजा, सेनापति, धर्मप्रचारक)

(ग) अशोक कलिंग युद्ध में .... लोगों को वन्दी बनाया था ।

(पचास हजार, एक लाख, डेढ़ लाख, दो लाख)

(घ) सत्य के प्रतीक धर्मचक्र में .... आरे हैं ।

(12, 24, 20, 21)

7. 'क' स्तंभ के शब्दों को 'ख' स्तंभ के शब्दों से जोड़िए।

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
इण्डिका	चन्द्रगुप्त
धम्म	मेगास्थिनिज
कौटिल्य	अशोक
	चाणक्य

आपके लिए काम

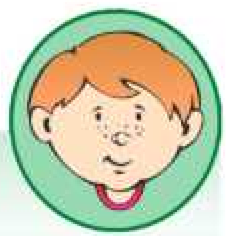

ओड़िशा का मानचित्र अंकन कीजिए ।

और उसमें कलिंग युद्ध का स्थान दिखाइए ।

नवम अध्याय

ईसा पूर्व 200 से 300 के बीच में भारत

आज रविवार है । बबलू सवेरे उठा । नाश्ता किया तभी अखबार वाले ने अखबार के साथ एक साप्ताहिक भी दे गया । साप्ताहिक में मौर्य सम्राट अशोक के बारे में एक बढ़िया गप्प थी । उसी कहानी से बबलू जान गया कि अशोक एक सम्राट और सुशासक थे । इसके साथ अशोक के बाद उसके दुर्बल उत्तराधिकारियों ने उनके विशाल साम्राज्य की रक्षा नहीं कर पाई, यह जानकर उसके मन में सवाल उठा कि अशोक के बाद भारत की क्या अवस्था हुई होगी ? इस सवाल के जवाब के लिए अगले दिन वह विद्यालय के पुस्तकालय में गया । इतिहास की पुस्तक उठाकर देखा तो उसे अपने सवाल का जवाब मिल गया ।

बबलू को जो उत्तर मिले वे हैं - भारत में ईसा पूर्व 200 में मौर्य साम्राज्य जैसे बड़ा साम्राज्य गठित नहीं हो पाया। मगर तभी केन्द्र एशिया और भारत के बीच बहुविध संपर्क स्थापित हुआ था। मौर्य शासन के बाद पूर्व, भारत और दक्षिण भारत में शुंग, काण्व और सातवाहन आदि वंश के राजा लोग शासन करते थे। तबी पश्चिम भारत में केन्द्र एशिया के कई शासक शासन करते थे ।

भारतीय ग्रीक लोगों का शासन :

ईसा पूर्व दूसरी शती में उत्तर पश्चिम भारत पर एकाधिक वैदेशिक हमले हुए थे । इन हमलावरों में अफगानिस्तान की आमुदरिया नदी के दक्षिण में अवस्थित व्याकट्रिया राज्य में राज करने वाले ग्रीक लोगों ने पहले हिन्दूकुश पर्वत पार किया था । ये आक्रमणकारी विभिन्न समय में आए थे । उनमें से कुछ लोगों ने वहाँ स्वयं शासन किया था तो कुछ औरों ने वहाँ अपनी तरफ से शासक नियुक्त किए थे।

शक जाति के लोगों के जबर्दस्त दबाव की वजह से इस अंचल के शासक बाद में यहाँ शासन नहीं चला सके । इसी समय चीन में बड़ी चहारदीवारी बन गई थी । अत: शक चीन की ओर नहीं जा सके । नतीजा यह था कि उन्होंने अपने पड़ोसी देश में शासन करने वाले ग्रीक और पल्लवों पर नजर डाली । शकों के दबाव से बैकट्रिया पर शासन करने वाले ग्रीक लोग भारत की तरफ आने लगे ।

ग्रीक लोग किस दिशा से भारत आए होंगे, नक्शा देख कर तय कीजिए।

अशोक के दुर्बल उत्तराधिकारी उस समय ग्रीकों का प्रतिरोध नहीं कर सके । फलस्वरूप बेकट्रिआ के ग्रीक शासकों ने पहले भारत को उत्तर पश्चिमांचल पर अपना कब्जा जमा लिया फिर उन्होंने अयोध्या और पाटलिपुत्र तक धावा बोल दिया, ऐसा कहा जाता है । मगर ग्रीक लोग समग्र रूप से भारत पर अपना शासन नहीं जमा सके थे ।

ग्रीक शासकों में मेनेण्डर (ईपू 165-145) मुख्य थे । कुछ लोग उन्हें 'मिलिन्दि' भी कहते हैं । उन्होंने 'शाकल' (आधुनिक पंजाब का स्यालकोट) में अपनी राजधानी बसायी थी । मेनेण्डर बौद्ध गुरु नागार्जुन के द्वारा बौद्धधर्म में दीक्षित हुए थे । उन्होंने नागार्जुन से बौद्धधर्म के विषय में बहुत से प्रश्न पूछे थे । मेनेण्डर के प्रश्नों और नागार्जुन के उत्तरों को 'मिलिन्दपन्ह' नामक ग्रंथ में लिखा गया है ।

पहले भारतीय ग्रीक ने भारत में अनेक मुद्राएँ जारी की थीं । बाद की सदियों में दूसरे राज्यों की मुद्राएँ भी जारी हुई थीं । इसके अलावा उन्होंने भारत में बौद्ध शिल्पकला की पृष्ठपोषकता की थी, जिसे गांधार कला भी कहते हैं ।

भारत में राज करने वाले ग्रीक लोगों ने क्रमश: भारतीय संस्कृति और धर्म स्वीकार कर लिया । इसके अलावा आपसी संबंध बढ़ाने के लिए उन्होंने वैवाहिक संपर्क स्थापित करके भारतीय नाम भी रख लिए । इसी के फल स्वरूप वे भारतीय माने जाने लगे और उनका मूल परिचय लुप्त हो गया ।

चित्र में जो ग्रीक मुद्राएँ दिखाई गई हैं, उनमें और हमारी मुद्राओं में आप क्या फर्क देखते हैं?

शक लोगों का शासन :

भारतीय ग्रीकों के बाद उत्तर पश्चिम भारत में शक लोगों का शासन चला । ग्रीकों की तुलना में शकों ने भारत के ज्यादा अंचलों में अपना शासन स्थापित किया था । शक लोग मंगोलीयों की एक शाखा थे । वे पहले सरदरिया नदी के पश्चिम में निवास करते थे । उनको वहाँ से यू-बी जाति के लोगों ने खदेड़ा तो वे भारत की ओर आगे बढ़े । फिर भारतीय ग्रीक राज्य पर विजय हासिल कर अपनी हुकूमत कायम की । शक लोगों ने पाँच भागों में विभाजित होकर भारत और अफगानिस्तान में अपना राज जमाया था । इनमें से पहला दल अफगानिस्तान में और दूसरा दल भारत की तक्षशीला में अपनी राजधानी स्थापित कर सके थे ।

तीसरे दल ने मथुरा में रहकर 200 सालों तक उस पर शासन किया । चौथे दल ने पश्चिम भारत में बस कर ईस्वी चौथी शताब्दी तक शासन किया था और पाँचवें दल ने दक्षिण भारत में अपना शासन स्थापित किया था ।

भारतीय राजा और जनता से शकों को कोई विरोध का सामना नहीं करना पड़ा । लेकिन किम्बदन्ती से पता चलता है कि उज्जयिनी के एक राजा उनका सफल प्रतिरोध कर उनको निकाल देने में समर्थ हुए थे । उन्होंने ईपू 58 में शकों को परास्त करके अपने को विक्रमादित्य की उपाधि से भूषित करके विक्रम संबत या अब्द का प्रचलन किया था । उनके बाद दूसरे कई राजाओं ने विक्रमादित्य उपाधि धारण करके शासन किया था । यह प्रथा 1400 ईस्वी तक बराबर चलती थी।

शक लोग भारत के विभिन्न भागों में शासन करते हुए भी सिर्फ पश्चिम भारत में उनका शासन चार सौ सालों तक अपना शासन चलाए रखा था । शक राजाओं में रुद्रदामन (ईस्वी 130 से 150) श्रेष्ठ शासक थे । उन्होंने मालवा, सौराष्ट्र, गुजरात, उत्तर कोंकण उपकूल इलाके और नर्मदा नदी की घाटी (उपत्यका) में अवस्थित कुछ राज्यों पर विजय प्राप्त कि थी। उन्होंने मौर्य शासन काल में सिंचाई के लिए बहुत दिनों से उपयोग ने होंनेवाले सुदर्शन झील की मरम्मत कर यश अर्जन किया था ।

कृषिक्षेत्र की सिंचाई कैसे होती है, देखिए और अपने साथियों से चर्चा करके लिखिए।

रुद्रदामन को संस्कृत भाषण पर बड़ा प्रेम था । उसमें उनकी विद्वत्ता भी बहुत थी । वे विद्वान और पंडितों को सम्मानित और आदर करते थे। इसके अलावा उनका व्याकरण, राजनीति, संगीत और दर्शन में बहुत ज्ञान था, ऐसा उनके प्राचीन शिलालेख से स्पष्ट पता चलता है । उन्होंने भारत में शासन करने वाले सातवाहन, लिच्छिवी आदि राजपरिवारों से वैवाहिक संपर्क स्थापित किया था । शक लोग भारतीय लोगों के रीतिरिवाज , चालचलन में शामिल हुए थे और भारतीय संस्कृति को स्वीकार कर ग्रीकों की भाँति पूरे भारतीय हो गए थे।

कुशाण राज :

ईसा पूर्व दो सौ वर्षों में पश्चिम एशिया भूखंड में विभिन्न जातियों के लोग आए थे । उनमें से तीन मुख्य हैं - शक, पल्लव और यू-ची । इन जातियों के लोगों के आने से पश्चिम एशिया के विभिन्न अंचलों पर पहले से प्रभाव जमाकर बैठे ग्रीकों की हुकूमत खत्म हो गई । इन जातियों में से यू-ची जाति पाँच गोष्ठियों में विभाजित हुई थी। उनमें से कुशाणों का दल ज्यादा मशहूर था।

कुशाणों की उत्पत्ति के संबंध में चीन भाषा में लिखित प्राचीन ग्रंथों से बहुत से तथ्य मिलते हैं । इन तथ्यों के अनुसार ईपू. दूसरी शती में चीन देश के पश्चिम भाग में एक शक्तिशाली यायावर जाति निवास करती थी।

कुशान एवं सातवाहन राज्य

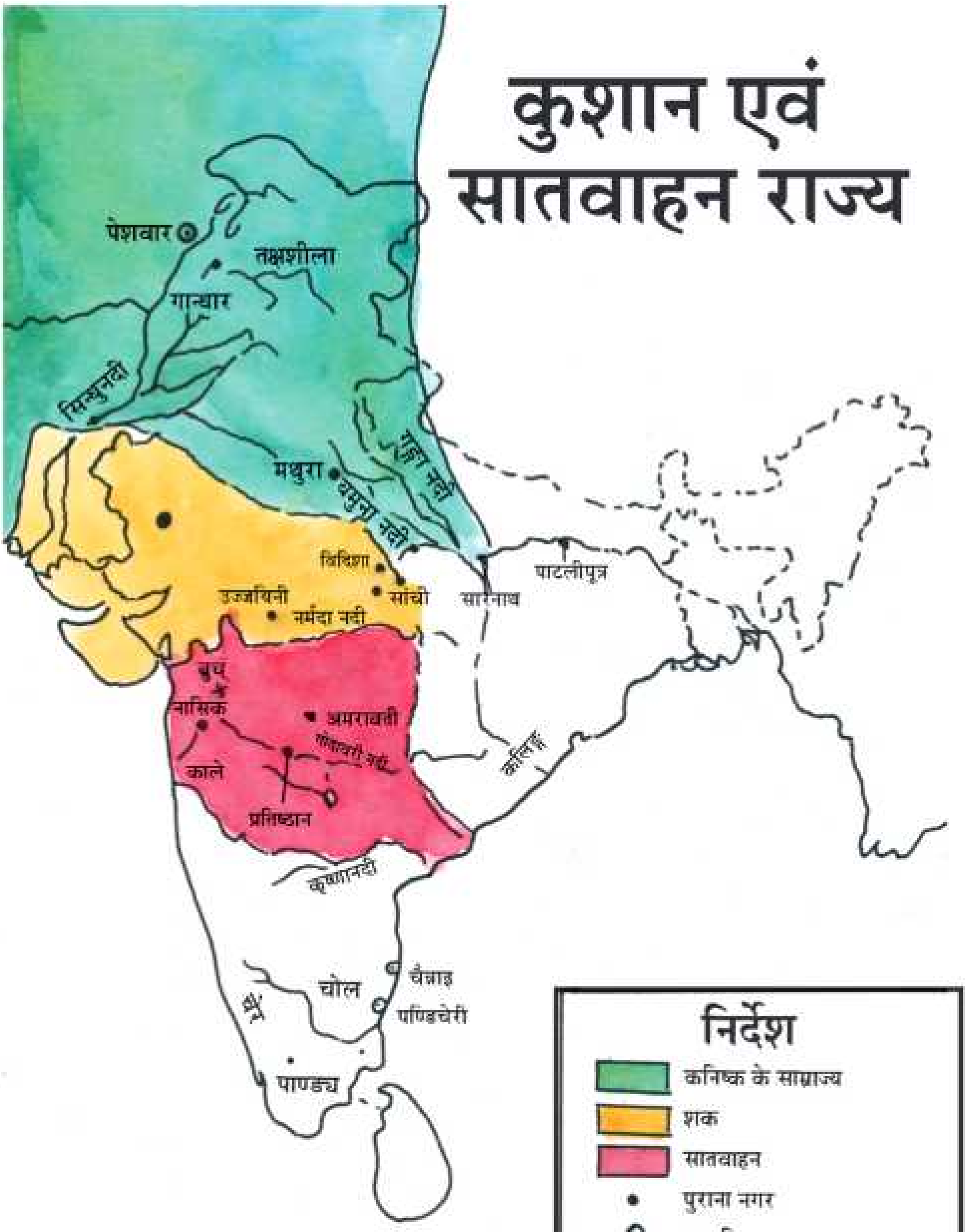

हुण नामक एक दूसरी शक्तिशाली यायावर जाति ने इनको वहाँ से भगा दिया । यू-ची लोग पश्चिम एशिया में चले आए और शक लोगों को निकाल बाहर करके बाकट्रिया या उत्तर अफगानिस्तान पर दखल जमाया । उसके बाद उन्होंने हिन्दुकुश पर्वत पार कर के निचली सिंधु अववाहिका और विस्तीर्ण गांगेय अववाहिका में अपना दखल बढ़ाया ।

कुशाणों का साम्राज्य आमुदरिया से गंगा तक और केन्द्र एशिया से खोरासन से उत्तर प्रदेश के वाराणसी तक फैला हुआ था । केन्द्र एशिया के कुछ हिस्से अफगानिस्तान के कुछ इलाके और पाकिस्तान और भारत के अधिकतर अंचल कुशाण साम्राज्य के अंतर्गत था ।

मानचित्र बनाकर उसमें कुशाण साम्राज्य चिह्नित कीजिए।

कुशाण शासकों ने भारत में बड़ी सफलता से अपना राज स्थापित किया और चलाया । उनमें से प्रमुख थे- प्रथम कड़फिसेस और द्वितीय कड़फिसेस । ये दोनों राजाओं ने अपने राज्य में अनेक मुद्राएँ चलायीं । द्वितीय कडफिसेस तो स्यर्णमुद्रा चलायी । यह भारत में प्रचलित प्रथम स्वर्णमुद्रा है । कुछ मुद्राओं में शिवमूर्त्ति का निशान है । इसलिए उनको शिव का उपासक अनुमान किया जाता है ।

कुशाण सम्राट कनिष्क :

कनिष्क कुशाण राजवंश के तृतीय और सर्वश्रेष्ठ राजा थे । वे 78 ईस्वी को गद्दी पर बैठे । इसी वर्ष से शकाब्द गणना होती है ।

राज्य जय :

जब कनिष्क सिंहासन पर बैठे तब, उनका राज्य अफगानिस्तान , सिंधु प्रदेश का बड़ा - सा अंश, पंजाब और पथियार, बैकट्रिया के कुछ अंचलों तक विस्तृत था । कनिष्क ने खोटान, कश्मीर, गंगा की घाटी, मालव आदि पर विजय हासिल करने अपने साम्राज्य का विस्तार किया था । उनका साम्राज्य पश्चिम में पारस (ईरान) से पूर्व में पाटलिपुत्र (बिहार का पटना) तक विस्तृत हो गया था । पुरुषपुर(पाकिस्तान का पेशावार) उनकी राजधानी थी ।

अश्वघोष से प्रभावित होकर कनिष्क ने बौद्धधर्म ग्रहण किया था । और इसी धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत से कार्य किए थे । उन्होंने अनेक स्तूप और बौद्ध विहारों का निर्माण कराया । तब तक बौद्ध धर्म 'हीनयान' और 'महायान' इन दो वर्गों में विभाजित हो गया था । कनिष्क महायान बौद्धधर्म के पक्षधर थे। उनके द्वारा चौथा बौद्ध सम्मेलन आयोजित हुआ । इस सम्मेलन में बौद्ध पंडितों ने बौद्ध ग्रंथों का अनुध्यान और व्याख्या की थी । उन व्याख्याओं को 'महाविभाषा ' नाम से जाना जाता है । इसके अलावा बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के लिए उन्होंने मध्यएशिया को अनेक प्रचारकों को भेजा था । कनिष्क ने अनेक मुद्राओं का प्रचलन कराया था । उन मुद्राओं पर विभिन्न ग्रीक और भारतीय देवी-देवताओं की मूर्तियाँ होने के कारण वे अन्य धर्मों के प्रति सहनशील थे, यह पता चलता है ।

कनिष्क अपने साम्राज्य के वाणिज्य की बढ़ोत्तरी के लिए उद्यम करते रहे । चीन और रोम के साथ उनके साम्राज्य का व्यापारिक संबंध था । कनिष्क ने बुद्धदेव और उनके शिष्यगणों के देहावशेषों के संरक्षण के लिए स्तूपों का निर्माण कराया था । उनकी राजसभा में चरक, अश्वघोष, नागार्जुन जैसे बड़े - बड़े विद्वान विराजमान थे । कनिष्क के समय में संस्कृत भाषा में अनेक ग्रंथ रचित हुए । मथुरा से कनिष्क की एक मस्तकहीन मूर्ति मिली है ।

कनिष्क का राज्यकाल 23 साल था । इस समय में कुशाण साम्राज्य की विविध प्रगति हुई थी । उनके बाद उनके उत्तराधिकारी कमजोर पड़ गए । लिहाजा कुशाण साम्राज्य टूट गया ।

दक्षिण का सातवाहन साम्राज्य :

मुद्राओं, शिलालेखों और मत्स्यपुराण से सातवाहन साम्राज्य के बारे में बहुत सारे तथ्य मिलते हैं । इन तथ्यों के आधार पर मालूम होता है कि ईपू. प्रथम और द्वितीय शती में नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी और कृष्णा नदी के मध्यवर्ती अंचल में सातवाहन साम्राज्य स्थापित हुआ था । यह साम्राज्य पूर्व में बंगोपसागर से लेकर पश्चिम में अरब तक फैला था । सातवाहन साम्राज्य की राजधानी का नाम था, प्रतिष्ठान । आजकल महाराष्ट्र के पैठान के नाम से इसे जाना जाता है ।

पुराणों में सातवाहनों को आंध्र कहा गया है । पुराण के अनुसार सातवाहन वंश के प्रतिष्ठाता थे, सिमुक । उन्होंने शुंग काण्व शासन का लोप करके इस वंश का प्रभाव बढ़ाया था । उनके भाई कृष्ण इस वंश के परवर्ती शासक थे । उनके बाद के राजा सातकर्णी मालव पर विजय पाई थी और इस विजय के स्मारक के रूप में अश्वमेध यज्ञ कराया था । लेकिन शक राजा ने सातकर्णी को पराजित करके सातवाहन साम्राज्य के बहुत से अंचल अपने अख्तियार में लिया था । सातकर्णी के बाद उनकी रानी ने अपने दो नाबालिक पुत्रों के अभिभावक के रूप से कुछ दिन राज किया था ।

आपने जो यज्ञ देखा है, उसके बारे में लिखिए।

ईसा की दूसरी सदी के प्रथम भाग में गौतमी पुत्र सातकर्णी या दूसरे सातकर्णी ने सातवाहन वंश के यश को बढ़ाया था । उन्होंने शक, यवन और पल्लवों को पराजित करके शकों द्वारा कब्जे में किए गए अंचलों को अपने अधीन किया था । उनके बाद वशिष्ठ के पुत्र पुलमावि और उनके बाद यज्ञश्री सातकर्णी सातवाहन वंश की कीर्ति में चारचाँद लगाए।

यज्ञश्री सातकर्णी के काल से ही सातवाहन साम्राज्य का पतन शुरू हो गया । आखिर में शक, पल्लव और कुशाणों के आक्रमण से सातवाहन साम्राज्य मिट गया ।

सातवाहनों की शासन प्रणाली :

राजा समस्त क्षमताओं के अधिकारी थे । साम्राज्य के कई प्रदेशों में और प्रदेशों को जनपदों में विभाजित किया गया था ।

प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से हमारे राज्य को कैसे विभाजित किया गया है लिखिए।

सातवाहन साम्राज्य का मध्य एशिया और रोम साम्राज्य के साथ व्यापार संबंध था । आयात की तुलना में नियति ज्यादा होता था । सातवाहन ब्राह्मण थे । राजा दूसरे धर्मों के प्रति सहनशील थे । वणिक लोग बौद्धगुंफा, चैत्य गृह और स्तूपों का निर्माण करवाते थे । सातवाहन लोग शकों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करते थे । उन्होंने राज्य के सड़कों की अच्छी उन्नति की थी ।

खारबेल :

ईसापूर्व प्रथम शती में कलिंग (आज का ओड़िशा) में एक महान राजवंश का उत्थान हुआ था। यह वंश महामेघवाहन वंश के रूप में परिचित है । उनके पूर्वज चेदि थे, ऐसा विश्वास किया जाता है । इस राजवंश के सर्वश्रेष्ठ राजा थे, महामेघवाहन ऐर खारबेल । उन्होंने कलिंग को एक अत्यंत शक्तिशाली राज्य बनाया था। सारे भारतवर्ष में कलिंग का गौरव काफी बढ़ गया था। खारबेल एक दिग्विजयी वीर, प्रजावत्सल शासक और कलासंस्कृति के प्रगाढ़ अनुरागी थे । उन्होंने जैन धर्म ग्रहण किया था, फिर भी दूसरे धर्मां को सम्मान देते थे ।

खारबेल महामेघवाहन वंश के द्वितीय राजा थे । पिता के देहांत के बाद जब उन्होंने शासन भार हाथ में लिया तब उनकी उम्र थी सिर्फ 15 साल । भुवनेश्वर के उदयगिरि पहाड़ पर जो हाथीगुंफा है, उसमें उनके तेरह साल के राजकरण का विवरण खुदी है । उसमें पता चलता है कि खारबेल बचपन में विभिन्न विद्याओं की शिक्षा के साथ युद्धविद्या के भी पारंगम थे । ईसापूर्व 40 में कलिंग सिंहासन पर बैठे थे ।

खारबेल के शासन काल के विभिन्न कार्य :

खारबेल ने अपने शासन के प्रथम वर्ष में चक्रवात् से टूटे हुए राजधानी कलिंग नगरी के तोरण, प्राचीर आदि का पुर्ननिर्माण कराया । नगरी के सौंदर्य बर्द्धन के लिए शीतलनल से परिपूर्ण जलाशय और उद्यानों का पुनरुद्धार कराया था।

खारबेल की राज्य विजय :

खारबेल ने अपने राज्य शासन के द्वितीय वर्ष से अपना दिग्विजय अभियान आरंभ कर दिया था । खारबेल पश्चिम में कृष्णानदी तक जाकर राष्ट्रिक और भोजकों को पराजित किया । उत्तर भारत की ओर अभियान करके मगधराज को परास्त किया ।

इसके अलावा आक्रमणकारी यवनों को मथुरा तक भगा दिया था । दक्षिण दिशा में पिथुण्ड पर अधिकार जमाया और शक्तिशाली तमिल राष्ट्रसंघ को ध्वस्त कर दिया था । मगध के राजा वृहस्पति मित्र को परास्त कर पहले नन्दराजा कलिंग पर हमला करके जो 'कलिंग जिन' ले गए थे, उसे वापस लाए ।

खारबेल का शासन :

मौर्य शासन काल में कई राजकर्मचारियों के पद खारबेल का समय में भी कायम थे । मौर्य महापात्रों को उस समय महामद कहा जाता था । नगर अखदंस और कम्म नामक उच्च राजकर्मचारी कर्म विभाग के दायित्व में रखे गए थे।

आजकल हमारे राज्य शासन में नियुक्त कई मुख्य कर्मचारियों के नाम संग्रह करके लिखिए।

खारबेल एक कुशल प्रशासक थे । प्रजाजनों के हित के लिए उन्होंने राजकोष से काफी धन खर्च करके कलिंग नगर के दुर्ग, प्रासाद, उद्यान, जलाशयों का उन्नति साधन करवाया था । नन्दराजा के द्वारा खुदवायी गई नहर को मरम्मत करके कलिंगनगरी तक बढ़ा दिया था । भुवनेश्वर के पास शिशुपालगढ़ ही उनकी राजधानी कलिंगनगर थी, ऐसा अनुमान किया जाता है । राजत्व के नौवें वर्ष में उन्होंने महाविजयप्रासाद का निर्माण कराया था ।

नहर से लोगों का क्या उपकार होता है, लिखिए।

खारबेल ने जैनधर्म को स्वीकार किया था। जैनधर्मावलंबी होकर भी वे अन्य धर्मों के प्रति उदार नीति अपनाते थे । विभिन्न धर्मों के उपासना पीठों के संस्कार उन्होंने करवाया । भुवनेश्वर के उदयगिरि पहाड़ में जैन संन्यासियों के सामयिक आश्रय के लिए अनेक गुंफाओं को खुदवाया था ।

दक्षिण भारत का संगम युग :

दक्षिण भारत में जिस समय तमिल कवि और विद्वान, सभा में जमा होकर बहुत सारी उत्कृष्ट कविताओं की रचना की थी, उस काल को संगम युग कहते हैं । ये कविताएँ पाण्डय, चोल, चेर राजाओं के उत्साह से विशिष्ट कवियों और पंडितों के द्वारा रची गई थीं । तमिल कवियों और पंडितों की सभा को संगम कहा जाता था । तमिलनाडु के मदुरै शहर में ऐसे तीन संगम आयोजित हुए थे ।

संगम साहित्य :

संगम युग में तमिल साहित्य के काफी प्रगति हुई थी । सैकड़ों उत्कृष्ट कविया अनेक कवियों द्वारा संगम में बहुत स्त्री कविताएँ लिखी गई थीं। इसके अलावा इस युग में 'तोलकापियम' नामक एक तमिल व्याकरण भी लिखा गया था। साहित्य की ये कविताएँ आठ भागों में विभाजित हैं ।

आपके अंचल के विशिष्ट कवि और लेखकों की एक तालिका बनाइए।

संगम युग को तामिल साहित्य का 'सुवर्ण युग' कहा जाता है । संगम साहित्य से तमिल राज्य के लोगों की संस्कृति, परंपरा और चालचलन आदि के बारे में बहुत से तथ्य मिलते हैं। इन तथ्यों मे सामाजिक, अर्थनैतिक और व्यापारिक व्यवस्था शामिल हैं ।

सामाजिक अवस्था :

समाज में ब्राह्मणों की अपेक्षा अरिभार (ज्ञानी) लोगों को ज्यादा महत्त्व दिया जाता था । कृषकों को भलाभार कहा जाता था । समाज में शिकारी, जड़ेरिये, मछुआरे सब निवास करते थे । स्त्रियों को परिवार का आलोक कहा जाता था। धनी लोग ईंटों से बने घरों में और गरीब लोग झोपड़ियों में रहते थे ।

अर्थनैतिक अवस्था और व्यापार :

तमिल राज्य की जमीन काफी उपजाऊ थी । अर्थनीति खेती पर निर्भर थी। कृषि के अलावा लोग गोपालन, वस्त्रवयन, मछली पकड़ कर और व्यापार करके पैसे कमाते थे । एक चीज को पाने के लिए दूसरी चीज देनी पड़ती थी।

तमिल लोग दरिया पार के देशों के साथ बनिज करते थे । रोम साम्राज्य के साथ व्यापार में काफी प्रगति हुई थी । जल जहाजों से सागर के पथ पर विदेशों के साथ व्यवसाय चलता था । तमिल राज्य से बाहर देशों को मसाले, कालीमिर्च, रेशम आदि चीजें भेजी जाती थीं और बाहर के देशों से तमिल राज्य को सोना चाँदी का आयात होता था ।

अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50 शब्दों में दीजिए ।**
   (क) बेकट्रिया के ग्रीक शासक भारत पर हमला करने को मजबूर हुए, क्यों ?
   (ख) शकों ने भारत में कैसे अपना साम्राज्य स्थापित किया था ?
   (ग) कनिष्क को कुशाण वंश का श्रेष्ठ राजा क्यों कहा जाता है ?
   (घ) सातवाहन की शासन प्रणाली कैसी थी ?
   (ङ) खारबेल को एक दिग्विजयी सम्राट और अच्छे शासक क्यों कहते हैं ?
   (च) संगम युग में दक्षिण भारत की सामाजिक अवस्था कैसी थी ?
2. **संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।**
   (क) मेनेण्डर (मिलिन्द)
   (ख) रुद्रदामन

(ग) यू-ची

(घ) द्वितीय काडाफिसेस

(ङ) महाविभाषा

(च) द्वितीय सातकर्णी

3. नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए।

(क) भारतीय ग्रीक शासक मेनेण्डर की राजधानी शाकल का आधुनिक नाम क्या है ?

(ख) शक लोग पहले कहाँ रहते थे ?

(ग) कौन कौन से अंचलों में कुशाणों का साम्राज्य था ?

(घ) कनिष्क कौन कौन से अंचलों को जीत कर अपने साम्राज्य में मिलाया था ?

(ङ) कुशाण किस मूल यायावर जाति के लोग थे ?

(च) सातवाहन वंश के प्रतिष्ठाता कौन थे ?

(छ) खारबेल की राजधानी कहाँ थी, ऐसा विश्वास किया जाता है ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार संभाव्य विकल्प उत्तर दिए गए हैं । सही उत्तर के सामने सही (✓) निशान लगाइए ।

(क) ईसापूर्व दूसरी शती में किसने पहले भारत पर आक्रमण किया था ?

शक　　कुशाण

सातवाहन　　ग्रीक

(ख) कौन मंगोलीय महाशाखा के लोग थे ?

शक　　कुशाण

शुंग　　सातवाहन

(ग) किसने भारत में सबसे पहले स्वर्णमुद्रा का प्रचलन किया था ?

रुद्रदामन　　कनिष्क

प्रथम काडफिसेद　　द्वितीय काडफिसेस

(घ) खारेबल के शासन में किस वर्ष महाविजय प्रासाद बनाया गया था ?

सप्तम　　पंचम

चतुर्थ　　नवम

(ङ) किस युग को तमिल साहित्य का सुवर्ण युग कहते हैं ।

गुप्तयुग　　वैदिक युग

संगम युग　　मौर्य युग

(च) बाहर देशों से तमिल राज्य को कौन-सी चीज आयात की जाती थी ?

सोना	ताँबा
पीतल	काँसा

5. सातवाहन वंश के राजाओं को उनके शासन काल के क्रम से सजाइए ।

यज्ञश्री सातकर्णी	सिमुक
गौतम पुत्र सातकर्णी	कृष्ण
बशिष्टि पुलमावी	

6. 'क' स्तंभ के शब्द के साथ 'ख' स्तंभ के शब्दों को जोड़िए।

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
अरियार	बौद्ध पंडित
आमुदरिया	यायावर
शक	रुद्रदामन
नागार्जुन	पर्वत
नगर अखदंस	राज कर्मचारी
	ज्ञानी लोग

7. सही कथन के सामने सही (✓) निशान और गलत कथन के सामने गलत (✗) निशान लगाइए।

(क) चीन में बड़ी चहारदीवार बनी थी, इसलिए ग्रीक लोग चीन की ओर नहीं जा सके ।

(ख) रुद्‌रदामन पालि भाषा के पक्षधर थे ।

(ग) द्वितीय काडफिसेस ने स्वर्णमुद्रा चलायी थी ।

(घ) संगम युग में 'तोलकापियम' नामक तमिल व्याकरण लिखा गया था ।

(ङ) तमिल कवि और पंडितों की सभा को संगम कहा जाता था ।

(च) खारबेल राजकर्मचारियों के लिए अस्थायी आश्रयस्थल भुवनेश्वर उयदगिरि पहाड़ की गुफा में बनवाये थे ।

आपके लिए काम :

भारत का मानचित्र अंकित करके कनिष्क किन राज्यों को जीते थे, उनके आधुनिक नामों को पहचान कर लिखिए।

ईस्वी ३०० से ८०० के बीच भारत

अविनाश ने पुस्तक में जब महाराजाधिराज उपाधि पढ़ी तो उसके बारे में ज्यादा जानने की इच्छा की । इस उपाधि का क्या अर्थ हैं, कौन और क्यों इस का उपयोग करते थे उसके बारे में जानना चाहा तो उसके मामा ने समझाया "राजाओं में जो सबसे ज्यादा शक्तिशाली और चक्रवर्ती होता था वह इस उपाधि को ग्रहण करता था । प्राचीन भारत में गुप्तवंश के राजा प्रथम चन्द्रगुप्त अपने को महाराजाधिराज उपाधि से भूषित किया था ।" अब उस वंश के राजा तथा उनके परवर्ती राजाओं के बारे में जानेंगे ।

कुशाणों के राज्य शासन के अनंतर भारत में राजनैतिक अस्थिरता आ गई और यह देश कई छोटे - छोटे राज्यों में बँट गया । मगर गुप्त राजाओं ने फिर से एक विशाल और शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना कर सके। उस वंश के प्रतम दो राजा श्रीगुप्त और घटोत्कच गुप्त अधस्तन राजा थे और उनकी उपाधि थी, महाराज । भारत में गुप्त साम्राज्य की प्रतिष्ठा ईसा की तीसरी शताब्दी के मध्य तक हो गई थी । गुप्त वंश के तीसरे राजा थे, प्रथम चन्द्रगुप्त । ईसा की तीसरी सदी में वे राज करते थे । वे प्रथम दो राजाओं की तरह अधीनस्थ राजा नहीं थे, अपितु स्वतंत्र रूप में अपना प्रभुत्व विस्तार कर पाए थे । इसलिए उनकी उपाधि थी "महाराजाधिराज" ।

प्रथम चंद्रगुप्त : (आनुमानिक समय ईस्वी 320 - 335)

चन्द्रगुप्त 320 ईस्वी में राज गद्दी पर बैठे । इसी वर्ष से गुप्ताब्द शुरू हुआ । उन्होंने लिच्छिबी वंश की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया था । इसी से भारत में उनका दबदबा काफी बढ़ गया । उनका राज्य बिहार, बंगाल और उत्तर भारत के कई अंचलों को लेकर गठित हुआ था । उन्होंने मुद्रा प्रचलन किया था ।

समुद्रगुप्त (ईस्वी 335-380) :

प्रथम चन्द्रगुप्त के बाद उनके सुयोग्य पुत्र समुद्रगुप्त ने सिंहासन आरोहण किया । इलाहाबाद के स्तंभलेख से उनके कृतित्व के संबध में अनेक बातें मालूम होती हैं । इसे उनके मंत्री हरिसेण ने रचना की थी। हरिसेण इस स्स्तंभ लेख में समुद्र गुप्त का यशगान किया है । इसलिए इसको प्रशस्ति कहा जाता है ।

भारत के मानचित्र में इलाहाबाद की पहचान कीजिए।

अशोक का एक अनुशासन भी इसी स्तंभ पर लिखा है । भारत के विभिन्न राजाओं और राज्यों के साथ समुद्रगुप्त के संबंध के बारे में इस प्रशस्ति में वर्णन किया गया है । इसके अलावा उनकी विजय यात्रा का वर्णन भी इसी में वर्णित हुआ है ।

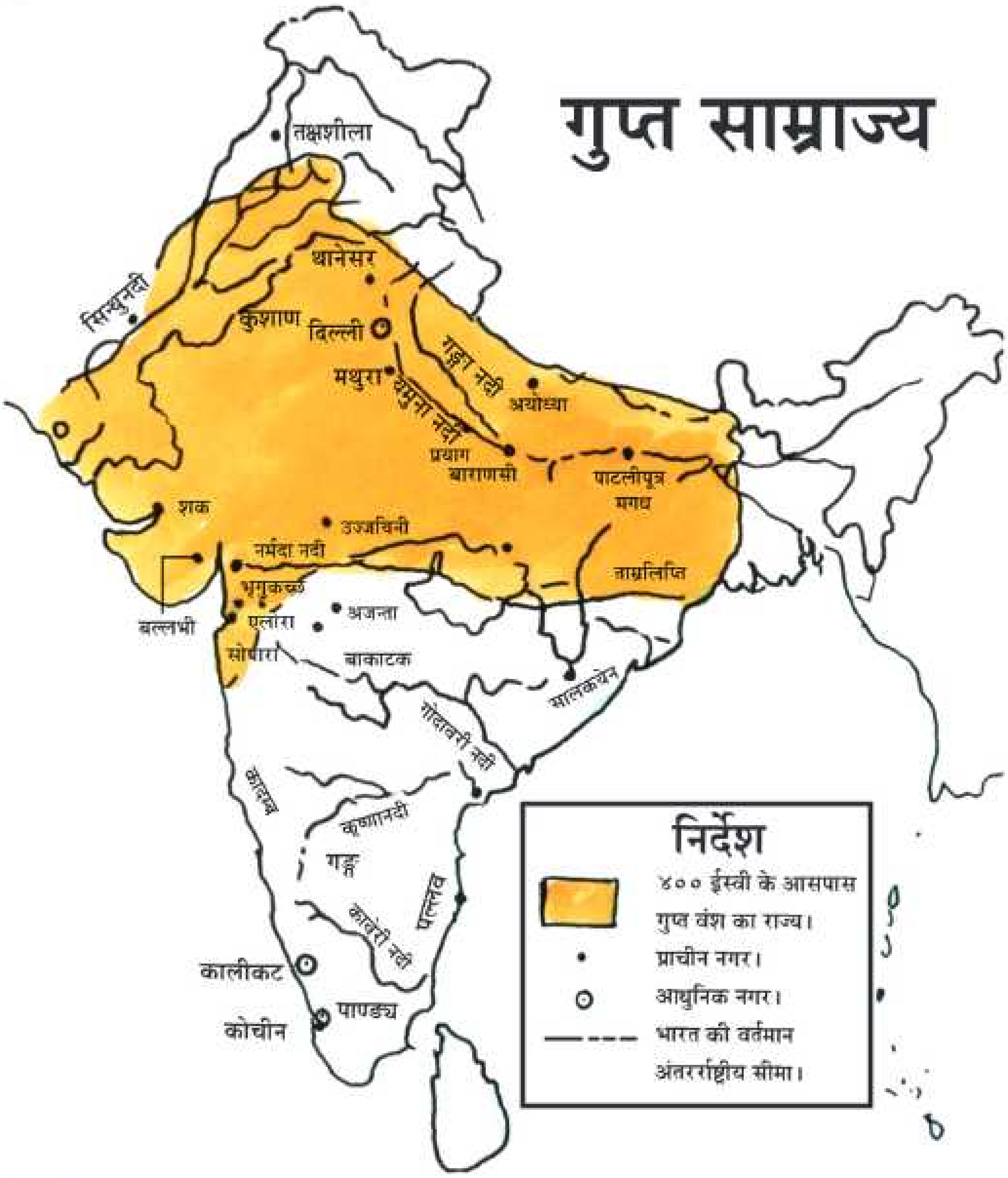

राज्यों पर विजय

उत्तर भारत में समुद्रगुप्त ने नौ राजाओं को पराजित करके उनके राज्यों को अपने साम्राज्य में शामिल किया था ।

दक्षिण भारत को युद्ध अभियान में जाकर उन्होंने बारह राजाओं को परास्त किया । लेकिन उन्हें अपने राज्य लौटा दिए। फलस्वरूप सब पराजित राजा गुप्त सम्राट की वश्यता स्वीकार करते रहे । उन पर गुप्तों का राजनैतिक प्रभाव बरकरार रहा । गुप्त साम्राज्य की सीमा से लगे सम तट , दावक, कामरूप, नेपाल आदि के नरपतियों ने स्वेच्छा से समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की थी । उसी प्रकार सीमांत में अवस्थित नौ जनजातियों के प्रमुखों ने भी समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर लिए। वे समुद्रगुप्त को कर और उपहार आदि देने के साथ उनके आदेशों का पालन करते थे ।

शक, कुशाण और मुरुण्डों के मुख्य और श्रीलंका के राजा मेघवर्ग समुद्रगुप्त के साथ मित्रता पूर्व संधि से बँध गए। नतीजा यह हुआ कि समुद्रगुप्त का राजनैतिक प्रभाव पूरे भारत वर्ष के अधिकांश अंचलों में स्थापित हो गया और वह सिंहल या आज की श्रीलंका तक फैला हुआ था । इस प्रकार समुद्र गुप्त ने अपने साम्राज्य को संगठित किया था । अश्वमेघ यज्ञ करके उन्होंने अपने को सार्वभौम राजा या सम्राट के रूप में प्रमाणित कर दिया ।

आजकल दक्षिण भारत के राज्यों के नाम लिखिए।

समुद्रगुप्त सिर्फ एक राज्य जीतने वाले वीर न थे । उनकी एक उपाधि थी कविराज । मतलब वे एक कवि थे । संगीत के प्रति भी उनका अनुराग था । उनके द्वारा चलायी गयी एक मुद्रा के एक पार्श्व में खुदी वीणा जैसा एक वाद्य यंत्र को वे बजाते हुए दिखाई देते हैं । वे दानी और सुशासक थे ।

द्वितीय चन्द्रगुप्त : (380-415 ई.)

समुद्रगुप्त के बाद उनके सुयोग्य पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय सम्राट हुए। समुद्रगुप्त ने उनको अपने उत्तराधिकारी के रूप में मनोनीत किया था । वे 'विक्रमादित्य' उपाधि से विभूषित हुए थे । दक्षिण के शक्तिशाली वाकातक राजवंश के साथ उनका वैवाहिक संबंध था । उनकी कन्या प्रभावती गुप्ता वाकातक राजकुमार रुद्रदेव के साथ विवाहित थी । उन्होंने पश्चिम भारत के शकों के खिलाफ विजय अभियान चलाकर पश्चिम मालवा और सौराष्ट्र को अपने अधीन किया । इसी से गुप्त साम्राज्य अरब सागर तक विस्तृत हो गया । इसलिए भारत के पश्चिम उपकूल में स्थित बंदरगाह गुप्त साम्राज्य के अधीन हो गए । इससे उनके नौवाणिज्य को बड़ी मदद मिली।

ओड़िशा उपकूलों के बंदरगाहों के नाम लिखिए।

चन्द्रगुप्त ने ज्ञानी और विद्वानों को अपने दरबार में स्थान दिया था । उनके दरबार में नौ बड़े प्रख्यात विद्वान थे । ऐसा लोग मानते हैं । वे हैं - बराहमिहिर, अमर सिंह, कालिदास, घटकर्पर, धन्वन्तरी, क्षपणक, शंकु, वररुचि और बेताल भट्ट । ये विद्वान "नवरत्न" के नाम से विख्यात हैं । इन लोगों ने संस्कृत भाषा में बहुत से अनमोल ग्रंथ लिखे थे । उनके राज्यकाल की एक विशिष्ट घटना है चीन परिव्राजक फा सियाँ (फाहियान) का भारत भ्रमण ।

फा-सियाँ (फाहियान का भारत भ्रमण) :

बौद्धधर्म भारत में जन्म लेकर कालक्रम से भारत बाहर के विभिन्न देशों में प्रसारित होता गया । चीन, जापान, नेपाल, श्रीलंका आदि देशों में उसका खूब प्रचार प्रसार हुआ । बौद्धधर्म के विषय में अधिक जानने के लिए बहुत विदेश परिव्राजक (यात्री) भारत भ्रमण में आते रहे । उनमें फा-सियाँ एक थे ।

फा-सियाँ के भारत आक्रमण के समय द्वितीय चन्द्रगुप्त का राज चल रहा था । वे भारत में विभिन्न स्थानों में भ्रमण करके लोगों की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था और धर्म के विषय में बड़े अनमोल विवरण लिख गए । लेकिन उन्होंने गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त का नाम नहीं लिया।

फा -सियाँ के विवरण से मालूम पड़ता है कि उस समय भारत के लोग बड़ी खुशी से जीवन बीता रहे थे । वे सभी स्थानों को बिना बाधा के आना-जाना कर सकते थे । लोगों की आर्थिक अवस्था अच्छी थी । राजालोग सुशासन थे । प्राणदंड की व्यवस्था न थी । बड़े अपराध करने पर या बारबार विद्रोह करने पर अंगच्छेद किया जाता था । दोषियों को अर्थदंड दिया जाता था । गाँवों की संख्या बहुत थीं। राजा कृषकों से उनकी आय का चतुर्थांश ही कर के रूप में लेते थे। भारत में तब बहुत सी धर्मशालाएँ थीं। बौद्धधर्म के अनुयायी और ब्राह्मण लोग एक साथ शांतिपूर्वक रहते थे। भ्रमण के अंत में फा-सियाँ जलपथ से अपने देश में लौट गए ।

जापान से बौद्ध संन्यासी आएँ तो वे कौन - कौन से
स्थानों में परिदर्शन करने जाना चाहेंगे,पूछ-ताछ करके लिखिए।

बौद्धधर्म की अवनति और ब्राह्मण्य धर्म का पुनरुत्थान :

ईसापूर्व छठी शताब्दी में बौद्ध धर्म का उद्भव हुआ फिर भारत में उसका प्रसार हुआ । बाद में उसका प्रसार तो श्रीलंका, चीन, जापान, मियाँमार आदि देशों तक प्रसारित हुआ । लेकिन गुप्त राजत्व में इस धर्म की अवनति होने लगी। ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान के कारण बौद्धधर्म की अवनति हुई ।

गुप्त राजाओं का शासन दो सौ से अधिक वर्षों तक चला । उन्होंने ब्राह्मण्य धर्म की पृष्ठपोषकता की । वैसे अंतिम काल में कई राजाओं ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया था ।

मगर ब्राह्मण धर्म अधिक लोकप्रिय होने लगा । इसके साथ संस्कृत भाषा का उपयोग बढ़ा । ब्राह्मण्य धर्म के सारे ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं । फा-सियाँ के विवरण से पता चलता है कि पाँचवीं शती के समय महायान बौद्ध धर्म ने उत्तर भारत में लोकप्रियता खोयी नहीं थी । लेकिन ब्राह्मण्य धर्म के विकास द्वारा बौद्धधर्म का पूर्व गौरव कम हो गया। चीन परिब्राजक ने स्वीकार किया है कि गया और कपिलबास्तु के बौद्ध विहार परित्यक्त अवस्था में थे । दक्षिण भारत के पल्लवों राजाओं ने भी ब्राह्मण धर्म को अपनाया था । महायान पंथ के अभ्युदय से बौद्ध धर्म में भी मूर्ति पूजा का प्रचलन हो गया । बौद्ध ग्रंथों को संस्कृत में लिखा गया । फलस्वरूप बौद्ध और ब्राह्मण्य धर्म का प्रभेद का ह्रास हुआ । यहाँ तक कि बौद्ध विष्णु के एक अवतार के रूप में गिने जाने लगे । आखिर में शंकर द्वारा प्रचारित अद्वैतवाद का प्रभाव बौद्ध धर्म पर पड़ा । उन्होंने हिन्दू धर्म की सुरक्षा के लिए चेष्टा की । उनके बलिष्ठ दार्शनिक तर्कों का सामना बौद्ध दर्शनिक नहीं कर पाये । जन सामान्य बौद्ध धर्म को हिन्दू धर्म से अलग मानने को तैयार न थे। हिन्दू धर्म के प्रभाव से बौद्ध धर्म में तंत्र के प्रवेश होने पर बज्र यान का आविर्भाव हुआ ।

अतएव, इन सभी कारणों से भारत में बौद्धधर्म की घोर अवनति हुई ।

ब्राह्मण्य धर्म का पुनरुत्थान :

नीचे के सभी कारण ब्राह्मण्य धर्म के पुनरुत्थान के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं । गुप्त युग में वैष्णव धर्म का विशेष प्रसार हुआ । कई गुप्त राजा विष्णु के उपासक थे । इसके अलावा लोग भगवान शिव की पूजा करते थे। गुप्त युग में 18 पुराणों का संकलन हुआ। उन पुराणों में विष्णु और शिवों का माहात्म्य वर्णित किया गया । मंदिरों में मूर्ति पूजा गुप्त युग में एक परंपरा बन गई । मूर्ति पूजा के लिए विभिन्न स्थानों में मंदिरों का निर्माण हुआ। गुप्त युग के भागवत या वैष्णव धर्म की एक खास विशेषता है, अवतारवाद । दुष्टों के विनाश के लिए विष्णु विभिन्न अवतारों के रूप में धरती पर अवतरण हुआ था । यह विषय लोगों के मन को विशेष रूप से प्रभावित किया।

दस अवतारों के नाम संग्रह करके लिखिए ।

साहित्य, कला, स्थापत्य और विज्ञान :

साहित्य :

गुप्त युग में संस्कृत साहित्य की विशेष उन्नति हुई । धार्मिक और लौकिक दोनों प्रकार के साहित्य का विकास हुआ। यह गुप्त राजाओं की पृष्ठपोषकता के कारण संभव हुआ। गुप्त युग के प्रसिद्ध कवि और नाट्यकार थे, कालिदास। उन्होंने काव्य और नाटक दोनों की रचना की थी । उनका प्रसिद्ध नाटक "अभिज्ञान शकुन्तलम्" है । उनके रचित दूसरे नाटक हैं "मालविकाग्निमित्रम्" और "विक्रमोर्वशीयम्" ।

उन्होंने 'रघुवंशम', 'कुमारसंभवम्' और 'मेघदूतम्' की रचना भी की थी । ये सब संस्कृत भाषा की कालजयी रचनाएँ हैं ।

कालिदास जैसे प्राचीन भारत के और कई कवियों और नाटककारों के नाम संग्रह करके तालिका कीजिए।

शुद्रक द्वारा लिखित 'मृच्छकटिकम्' एक सामाजिक नाटक था । तभी विष्णु शर्मा के द्वारा 'पंचतंत्रम्' लिखा गया था।

गुप्त काल में अमर सिंह ने 'अमरकोष:' नामक कोश की रचना की थी । गुप्तयुग में रामायण, महाभारत और पुराणों का संकलन पूरा हुआ था । भगवद् गीता महाभारत का एक महत्त्वपूर्ण अंश है । इस विवेचन से स्पष्ट है कि साहित्य के लिए गुप्त काल एक गौरवशाली युग था ।

कला और स्थापत्य :

इस काल में अनेक बौद्ध चैत्यगृह और विहारों का निर्माण किया गया था । पत्थर में खुदे स्थापत्य का प्रमाण अजन्ता गुफा में मिलते हैं ।

ओड़िशा में कहाँ कहाँ बौद्ध विहार है एक तालिका बनाओ ।

ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान हेतु गुप्त काल में देवी-देवताओं के लिए मंदिर निर्माण का काम शुरु हुआ । उत्तर प्रदेश के झांसी जिले के देवगढ़ में दशावतार मंदिर, मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले के तिरवा में विद्यमान विष्णु मंदिर , भूमारा का शिवमंदिर और भीतरगाँव का ईंटों से बना मंदिर आदि गुप्त युग के स्थापत्य के प्रमाण हैं ।

भास्कर्य या मूर्त्तिकला :

गुप्त युग का भास्कर्य या मूर्ति कला की उन्नति भी चरम पर थी । गुप्त मूर्तिकला में कोमलता, स्वाभाविकता, सुदृश्यता, आलंकारिकता और आध्यात्मिकता का सुंदर समावेश दिखाई देता है । गुप्तयुग की श्रेष्ठ कलाकृतियाँ मथुरा, सारनाथ में देखने को मिलती हैं । सारनाथ की बुद्ध मूर्त्ति भारतीय भास्कर्य की श्रेष्ठ कृति मानी जाती है ।

मध्यप्रदेश के उदयगिरि में स्थित वराह मूर्त्ति, देवगढ़ का शेषशायी विष्णु, अहिछत्र की मिट्टी की मूर्तियाँ, कोहर मुखलिंग आदि गुप्तयुगीन मूर्त्तिकला की अनवद्य सृष्टि है ।

आपके घर के पास स्थित मंदिरों को ध्यान से देख कर और उनके बारे में लिखिए।

चित्रकला :

गुप्त युग में चित्रकला की भी काफी प्रगति हुई थी । महाराष्ट्र के अजंता के भित्तिचित्र चित्रकला का एक अनूठा उदाहरण है । अजंता का चित्र विश्व भर में प्रख्यात है ।

विज्ञान :

गुप्त युग में केवल साहित्य और कलाकारी उन्नति नहीं हुई; विज्ञान क्षेत्र में भी विकास साधित हुआ । गणित के क्षेत्र में दशमलव पद्धति, शून्य का प्रचलन आदि गुप्त युग की देन हैं । भारत की अंक लेखन की पद्धति अरब देशों में लोकप्रिय हुई । यह पद्धति यूराप गई । प्रख्यात गणितज्ञ आर्यभट्ट ने 'आर्यभट्टीयम' नामक पुस्तक की रचना की थी । वे गणित और ज्योतिर्विज्ञान में पारंगम थे । उनकी गाणितिक पद्धति दशमलव के ऊपर आधारित थी । उन्होंने गणित को एक विशिष्ट विषय का दर्जा दिलाया था । उनके विचार से पृथ्वी एक ग्रह है और अपनी कक्षा में घूमती है ।

उस युग के एक और ज्योतिर्विज्ञानी थे, बराहमिहिर । उन्होंने 'वृहत् संहिता' की रचना की थी । उन्होंने सिद्धान्तिका में रोमक सिद्धांत का उल्लेख किया है । कहा जाता है, इस पर ग्रीक प्रभाव पड़ा है। बहुत लोगों का विश्वास है कि चिकित्सा-शास्त्र के विशारद बाग्भट्ट 'गुप्त युग' में हुए थे ।

ओड़िशा के एक प्रख्यात ज्योतिर्विज्ञानी का नाम लिखिए। उनके बारे में तथ्य संग्रह कीजिए ।

गुप्त युग में धातव शिल्प के क्षेत्र में भी उन्नति हुई थी । गुप्तयुग के शिल्पकारों ने बड़े सुंदर-सुंदर लोहे और काँसे की मूर्त्तियाँ बनाई थीं । दिल्ली के मेहराउली में विद्यमान लौहस्तंभ गुप्त युग कीर्तिमान है । अत्यंत आश्चर्य की बात है कि इस पर अभी तक जंग नहीं लग पायी है । इसीसे गुप्तकाल के धातु शिल्प विद्या की निपुणता साफ दिखाई देती है । नालन्दा से एक विशाल ताँबे से बनी बुद्धमूर्त्ति पायी गई है । इसका रंग आज तक तेजोमय है। उपरोक्त वर्णन से मालूम पड़ता है कि गुप्तकाल भारतीय इतिहास का 'सुवर्ण युग' था ।

पल्लव वंश, चालुक्य वंश, बर्द्धन वंश और ह्वेन सांग का भारत भ्रमण :

पल्लव वंश :

पल्लव वंश एक प्राचीन राजवंश है । तमिलनाडु के कांजीवरम् इलाके में पल्लव शासन करते थे। चालुक्यों के पहले इन्हीं पल्लवों ने दक्षिण भारत में एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की थी । सातवाहन वंश के पतन के उपरांत ईस्वी सन् छठी शताब्दी के अंतिम काल में पल्लव राज्य की स्थापना हुई थी । इस वंश का प्रथम राजा सिंहविष्णु ने शत्रुओं को पराजित करके कृष्णा से कावेरी नदी तक के अंचल में अपने राज्य को प्रतिष्ठित किया ।

प्रथम महेन्द्रवर्मन (इ.600 से 630)

पल्लव वंश के प्रथम पराक्रमी राजा हैं, महेन्द्र वर्मन प्रथम । उनके शासन काल में चालुक्यों के साथ उनकी दुश्मनी शुरू हुई। जो एक सौ सालों से ज्यादा चली और आखिर चालुक्यराज पुलकेशिन द्वितीय और महेन्द्रवर्मन के साथ युद्ध शुरू हुआ । महेन्द्रवर्मन एक साथ योद्धा, कवि और संगीतज्ञ थे।

प्रथम नरसिंह वर्मन (इ.630-668) :

पल्लव वंश के सर्वश्रेष्ठ राजा के रूप में नरसिंह वर्मन प्रथम ही सुपरिचित हैं । उनके समय में राजनैतिक शक्ति शीर्ष स्थान पर पहुँची थी । उन्होंने चालुक्य राजा पुलकेशीन द्वितीय को युद्ध में पराजित किया और चालुक्यों की राजधानी वातापि पर अधिकार जमाया । उसीसे उन्हें 'वातापिकोण्डा' के नाम से अभिहित किया गया । जिसका अर्थ है 'वातापि के विजयी' । पुलकेशीन लड़ाई में हारकर स्वर्ग सिधारे । उन्होंने चेरों और चालों को भी लड़ाई में हराया। नरसिंह वर्मन ने श्रीलंका के विरुद्ध नौसेना भेजी थी । उनमें उन्हें बड़ी सफलता मिली थी । नौंवी शताब्दी के अंतिम भाग में चोलों ने पल्लवों के राज्य को ध्वस्तविध्वस्त कर दिया ।

संस्कृति का विकास :

दक्षिण भारत के सांस्कृतिक इतिहास में पल्लवों की अतुलनीय देन हैं । तब संस्कृत भाषा को काफी सम्मान दिया जाता था। उनके बहुत से शिलालेख संस्कृत में लिखे गए हैं । भारवी और दंडी जैसे महान पंडित पल्लवराज ने दरबार को अलंकृत किया था । भारवी का 'कीरातार्जुनीयम् ' और 'दशकुमारचरितम्' संस्कृत भाषा के दो अत्यंत प्रख्यात ग्रंथ हैं । कांची संस्कृति और शिक्षा का एक श्रेष्ठ केन्द्र था । राजा महेन्द्रवर्मन प्रथम के द्वारा रचित 'मत्तविलासप्रहसन' एक सामाजिक नाटक है । धर्मक्षेत्र में भक्ति आन्दोलन वैष्णव और शैव संतों के द्वारा सर्वप्रथम पल्लव राज्य में ही आरंभ हुआ था । इस समय दक्षिण भारत में आर्य संस्कृति का प्रसार संपूर्ण हुआ था । कांची विश्वविद्यालय आर्य संस्कृति का प्रचार केन्द्र था । पल्लव राजा लोग सभी धर्मों को सम्मान करते थे । चीन यात्री ह्वेन सांग (जुआंग जांग) ने पल्लव राज्य में भ्रमण करके अपने विवरण में कांचीपुरम के संबंध में लिखा है ।

पल्लवों के राज्यकाल में कला और स्थापत्य का भी काफी विकास हुआ । शिव और विष्णु दोनों के मंदिर निर्माण हुए । महाबलीपुरम् में विराट पत्थर काटकर कई मंदिरों का निर्माण किया गया था । उनको "रथ" कहते हैं। महावलीपुरम् के पाण्डव रथ और समुद्र तट पर स्थित मंदिर पल्लवों के मंदिरों में प्रख्यात हुए हैं । इसके अलावा कांचीपुरम् का कैलाशनाथ मंदिर भी पल्लवों की कृति है ।

आपने ओड़िशा में जितने मंदिर देखे हैं, वे पत्थर को काट कर या जोड़कर बने हैं, अनुध्यान करके लिखिए।

चालुक्य वंश :

विंध्य पर्वतमाला से तुंगभद्रा नदी तक के अंचल को दक्षिण भारत (दाक्षिणात्य) कहा जाता है । इस अंचल में सातवाहनों के पतन के बाद वाकातकों ने एक शक्तिशाली राष्ट्र की स्थापना के लिए उद्यम किया था, परंतु वे ज्यादा दिन शासन नहीं कर सके । उनके बाद चालुक्य वंश ने वहाँ एक शक्तिशाली राष्ट्र निर्माण करने में सफल हुए । मुख्य रूप से कृष्णा, तुंगभद्रा नदी के बीच के इलाके में रायचुर जैसे उर्वर अंचल में चालुक्य अपना अधिकार जमाने को सतत उद्यम करते थे ।

द्वितीय पुलकेशीन (ईस्वी 608-642)

चालुक्य राजाओं में पुलकेशीन द्वितीय सर्वश्रेष्ठ थे । वे हर्षवर्धन के समसामयिक थे । जैन कवि रवि कीर्त्ति द्वारा रचित अहिहोल शिलालेखसे पुलकेशीन के राजकाज के संबंध में बहुत-सी बातें मालूम पड़ती हैं । हर्षवर्धन दक्षिण भारत के अभियान के समय, नर्मदा नदी के किनारे पुलकेशीन के द्वारा परास्त होकर स्वदेश लौट गए थे । हर्षवर्धन को परास्त करके चालुक्यराज पुलकेशीन 'दक्षिणापथस्वामी' उपाधि से भूषित हुए थे । उन्होंने पल्लवराज महेन्द्रवर्मन प्रथम को लड़ाई में हराया था । उनके समय में चालुक्य राज्य की सीमा पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में आधुनिक कर्णायक तक फैली हुई थी ।

लेकिन उनकी यह सफलता ज्यादा दिन तक टिक न सकी । पल्लवराज महेन्द्रवर्मन के बाद नरसिंह वर्मन प्रथम ने पुलकेशीन को युद्ध में पराजित कर दिया । चालुक्यों की राजधानी वातापि पर पल्लवों ने अधिकार जमाया था । कुछ वर्ष बाद प्रथम 'विक्रमादित्य' चालुक्य राज्य का पूर्व गौरव लौटा आने में सक्षम हुए और राजधानी वातापि पर फिर से अधिकार जमाया । अष्टम शताब्दी के मध्य भाग में चालुक्य राज्य का पतन हुआ । चालुक्य राज्य की राजधानी वातापि या बादामी आजकल कर्णाटक राज्य में है ।

संस्कृति का विकास :

राजधानी वातापि एक समृद्ध नगरी थी । व्यापारिक कुशलता हेतु चालुक्यों की अर्थनैतिक उन्नति अच्छी हुई थी । ईरान, अरबी देश और लोहित सागर पर अवस्थित विभिन्न बन्दरगाहों के साथ चालुक्य व्यवसायियों का व्यापारिक संबंध था। वे व्यवसाय करने उनके साथ जाते भी थे ।

पुलकेशीन द्वितीय ने पारस के राजा द्वितीय खुसरों के पास एक दूत भेजा था । ह्वेन सांग (जुआंग जांग) के विवरण से मालूम पड़ता है कि वे बड़े प्रभावशाली राजा थे ।

पहाड़ खोद कर मंदिर बनाने का काम चालुक्य राज्य में हुआ था । वातापि या वादामी में विभिन्न मन्दिरों में विष्णु, ब्रह्मा, शिव आदि की अत्यन्त कमनीय मूर्तियाँ खुदी हुई हैं । इसी समय अजन्ता के चैत्यगृह पहाड़ों में ही खोदित हुए थे। एलोरा, मेगुति, अहिहोल और पट्टदकल के मंदिर चालुक्य शासन काल में ही बने थे ।

बर्द्धन वंश :

ईस्वी छठी शताब्दी के मध्य भाग में गुप्त साम्राज्य का पतन हो गया । हूणों ने गुप्तों के विशाल साम्राज्य को ध्वस्त कर दिया था । उत्तरे भारत में बहुत से छोटे-छोटे राज्यों का अभ्युदय हुआ । राजनैतिक एकता और शक्तिशाली शासन का घोर अभाव दिखायी पड़ा अंतिम भाग में उत्तर भारत के दो प्रमुख राजवंशों का उत्थान हुआ जो थानेश्वर का वर्द्धन वंश और कनौज का मौखरी वंश था।

सप्तम शताब्दी के आरंभ में प्रभाकर वर्द्धन ने अपने को 'महाराजाधिराज' उपाधि में भुषित करके थानेश्वर में एक नए राज्य की स्थापना की । राज्यवर्द्धन और हर्षवर्द्धन उनके दो पुत्र थे और उनकी इकलौती कन्या राजश्री ने मौखरी वंश के राजकुमार ग्रहवर्मन को विवाह किया था । पिता की मृत्यु के बाद राज्यवर्द्धन थानेश्वर के राजा हुए । ऐसे समय मालवराज देवगुप्त ने ग्रहवर्मन की हत्या की । देवगुप्त मौड़ या बंगाल के राजा शशांक के साथ मित्रता की थी । बहनोई के हत्याकारी को युद्ध में पराजित करके लौटते समय शशांक के षडयंत्र में पड़कर राज्यवर्द्धन की मृत्यु हुई । राज्यश्री ने बिंध्य पर्वत में आश्रय लिया था । हर्ष को ऐसे दुर्दिन में सिर्फ सोलह साल की उम्र में राजा का कार्य संभालना पड़ा ।

हर्षवर्द्धन (ईस्वी 606-647) :

बड़े भाई राज्यवर्द्धन की मौत के बाद 606 ईस्वी में हर्षवर्द्धन राज सिंहासन पर बैठे । इसी समय से हर्षब्द का प्रारंभ हुआ । हर्षबर्द्धन के बारे में हम उनके राजकवि बाणभट्ट के द्वारा रचित हर्षचरितम् से बहुत बातें जान सकते हैं । परंतु वह हर्षबर्द्धन की संपूर्ण जीवनी नहीं है ।

किसी की जीवनी पढ़ने से हम क्या जानेंगे, सोचकर लिखिए।

ग्रहवर्मन की मृत्यु के बाद कनौज में कोई राजा न था । राज्यश्री शासन हाथ में लेने को राजी नहीं हुई तो हर्षवर्द्धन को राजा बनने के लिए निमंत्रण भेजा गया । हर्षवर्द्धन जब मौखरी राज्य के राजा बन गए तब थानेश्वर और कनौज का मिश्रण हो गया । हर्षवर्द्धन ने अपनी राजधानी थानेश्वर से कनौज को स्थानान्तरित किया । उसके बाद बर्द्ध वंश के मुख्य शत्रु शशांक पर बदला लेने के लिए हर्ष युद्ध अभियान में निकल पड़े । इसी बीच शशांक के खिलाफ अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए कामरूप के राजा भास्कर वर्मन के साथ उन्होंने संधि की ।

शशांक हर्ष के हाथों पराजित हुए या नहीं, ठीक से पता नहीं। लेकिन इतना मालूम है कि शशांक की मृत्यु (ईस्वी 644) के बाद हर्ष ने गौड़देश पर अपना अधिकार जमा लिया था ।

हर्ष अपने जामाता ध्रुवसेन को वल्लवी राज्य सिंहासन पर बिठाया । इससे वल्लवी में उनका प्रभुत्व कायम हुआ । दक्षिण अभियान में वे पुलकेशीन द्वितीय के द्वारा परास्त होकर अपनी राजधानी लौट आए ।

हर्षवर्द्धन ने उत्तर भारत के अधिकांश अंचलों को अपने साम्राज्य के अधीन किया था । इसलिए उनको 'सकल उत्तरापथनाथ ' कहा जाता था । चालीस साल शासन करके हर्ष का देहान्त 647 ईस्वी में हुआ ।

शासन और सभ्यता :

हर्षवर्द्धन ने गुप्त साम्राज्य की शासन व्यवस्था में सामान्य बदलाव करके उसे अपने साम्राज्य में चालू किया। वे सुशासन के लिए प्रयत्नशील थे । शासन कार्य में अनेक कर्मचारियों को नियुक्त किया गया था । अशोक की तरह वे राज्य के विभिन्न स्थानों में दौरा करते थे और अपनी आँख से शासन व्यवस्था का निरीक्षण करते थे ।

उत्पादित अनाज का छठवाँ भाग राजस्व के रूप में राजा वसूल करते थे । अमनचैन के लिए कानून का कड़ाई से पालन करवाते थे । बड़े अपराध के लिए अंगच्छेदन की व्यवस्था थी ।

धर्म :

हर्षवर्द्धन हिन्दू और बौद्ध दोनों में विश्वास रखते थे । वे स्वयं सूर्य, शिव और बुद्ध की उपासना करते थे । जीवन के अंतिम दिनों में वे बौद्ध धर्म के प्रति आकृष्ट हुए । उन्होंने ह्वेन सांग (जुआंग जांग) को सम्मान देने के लिए अपनी राजधानी कन्नौज में एक विशाल धर्मसभा का आयोजन कराया था । हर्ष हर पाँच वर्षों में प्रयागराज (इलाहाबाद) में एक धर्मोत्सव पालन करते थे । उस उत्सव में राज्य के सारे संचित धन को लोगों को दान कर देते थे । हर्ष के समय महायान बौद्ध धर्म का विशेष प्रचार हुआ था ।

हर्षवर्द्धन की रुचि साहित्य में थी । 'नागानन्द', 'रत्नावली' और 'प्रियदर्शिका' आदि संस्कृत नाटकों के लेखक कनौज राजा हर्ष है, ऐसा बहुतों का विश्वास है । कवि बाणभट्ट उनकी राजसभा मंडन करते थे । हर्षचरित के अलावा उन्होंने 'कादम्बरी' की रचना की थी ।

जुआंग जांग का भारत भ्रमण :

भारत से बौद्ध ग्रंथों का संग्रह करने और बौद्ध धर्म के बारे में आहरण करने का उद्देश्य लेकर चीन परिब्राजक यात्री, जुआंग जांग (ह्वेन सांग) 629 ईस्वी में स्थल पथ से होकर भारत आए थे । भारत में विभिन्न स्थानों में भ्रमण करके उन्होंने 'सि-यू-कि' नामक एक ग्रंथ की रचना की थी । वे ओड़िशा भी आए थे और उन्होंने पुष्पगिरि बौद्ध विहार और चेलितोला बंदरगाह देखा था । वे कनौज में हर्ष के व्यक्तिगत मित्र की तरह कुछ दिन ठहरे । जुआंग जांग का भ्रमण वृत्तांत अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय है, ऐसा ऐतिहासिकों की राय है । हर्ष के समय में सामाजिक और अर्थनैतिक अवस्था, धर्म और शासन व्यवस्था के बारे में बहुत सारी बातें उनके विवरण से मिल जाती हैं। उनके लेख से मालूम होता है कि तब कन्नौज एक समृद्धशाली नगर था । लेकिन पाटलिपुत्र और वैशाली का गौरव कम हो गया था ।

जुआंग जांग के विवरण से पता चलता है कि लोगों का जीवन सरल था । अधिकांश लोग निरामिष भोजन पसंद करते थे । कठोरजाति प्रथा प्रचलित थी । शूद्रों को कृषक जाति के लोग कहा गया है। उन्होंने बौद्ध धर्म का विशद वर्णन भी किया है । बौद्ध धर्म की अट्ठारह शाखाएँ थीं । उनमें से महायान और हीनयान शाखाएँ मुख्य थीं । हर्ष के समय नालन्दा विश्वविद्यालय एक श्रेष्ठ और सम्मानास्पद शिक्षाकेन्द्र था । देशविदेश से 10,000 विद्यार्थी आकर यहाँ अध्ययन करते थे । वहाँ महायान शाखा के दर्शन की शिक्षा दी जाती थी । उन्होंने हर्ष को एक जनहितैषी शासक माना है । हर्ष के द्वारा आयोजित कन्नौज और प्रयाग की धर्मसभाओं का विशद विवरण देते हैं । जुआंग जांग 644 ईस्वी को स्वदेश वापस गए थे ।

इसलाम धर्म का अभ्युदय और अरबों का सिंधु अंचल पर अधिकार :

संसार में जितने धर्मों का अभ्युदय हुआ है, उनमें इस्लाम एक है । अंधविश्वास दूर करने के लिए जितने मार्ग बताए गए हैं, उनमें इस्लाम सबसे आसान और बोधगम्य है । ऐक्यभाव, उदारता, भ्रातृप्रेम, पवित्रता और सत्य जैसे परम आदर्श इस धर्म के मूलमंत्र हैं ।

जब उत्तर भारत में हर्षवर्द्धन , दक्षिण भारत में पल्लवराज नरसिंह वर्मन और चालुक्य राजा द्वितीय पुलकेशीन राज कर रहे थे तभी सुदूर अरब रेगिस्तान से छठी शती के अंतिम भाग में एक नया धर्म का उद्भव हो रहा था । महापुरुष महम्मद इसके प्रवर्त्तक थे ।

इस्लाम के अलावा भारत के बाहर कई दूसरे धर्मों के बारे में जानने की कोशिश कीजिए।

इस धर्म के अभ्युदय के पूर्व समाज में अनेक कुसंस्कार प्रचलित हो गए थे । अरब के अधिवासी विभिन्न मूर्त्तियों की पूजा करते थे । मक्का में अवस्थित 'कावा' नामक पत्थर की वे पूजा करते थे । अमीर लोग गरीबों से ऊँची दर में ब्याज वसूल करके उनका शोषण करते थे । मादक द्रव्य बहुत इस्तेमाल होता था ।

महम्मद ईस्वी 570 को मक्का में जनमे थे । उनके मन को कुसंस्कार सर्वदा परेशान करते थे । हीरा नामक पर्वत पर ध्यान करते वक्त भगवान अल्लाह से प्रेरित होकर दूत मेब्रियाल की वाणी उनके कानों में सुनाई पड़ी । इस नए धर्म का सार था - भगवान एक है, अद्वितीय है । अल्लाह ही भगवान हैं और महम्मद उनके पैगम्बर या प्रतिनिधि हैं। जो इस धर्म को ग्रहण करते थे, उनको मुसलमान कहा जाता था ।

इस्लाम धर्म के पवित्र ग्रंथ का नाम है 'कोरान'। यह अल्लाह के मुख से निकली वाणी है । एकेश्वरवाद पर महम्मद बहुत जोर देते थे ।

अरब व्यापारियों के साथ भारत का संपर्क :

ईसापूर्व 200 और ईस्वी 200 के बीच भारत ने एशिया के पश्चिम और केन्द्रांचल के विभिन्न देशों के साथ व्यापारिक और वाणिज्यिक संबंध स्थापित किया था । इस्लाम के आविर्भाव के पहले ही अरब देशों के बणिक रोम साम्राज्य के विभिन्न स्थानों के साथ वाणिज्य कारोबार करते थे। उनमें से कइयों ने केरल के उपकूल के इलाकों के साथ वाणिज्यिक संबंध शुरू किया था। वहाँ से भारतीय मसाले और दूसरी कीमती वस्तुएँ खरीद करके उन्हें विभिन्न देशों में बेचते और अपने देशों में भी ले जाते थे । ऐसे ही इस्लाम के उद्भव से पहले अरब के साथ भारत के व्यापारिक संबंध आरंभ हो चुका था । उसके बाद नए धर्म में दीक्षित होकर अरब के व्यापारी भारत में धर्म प्रचार करने लगे और कुछ भारतीयों को इस्लाम में दीक्षित किया । कालक्रम से केरल में एक मुसलमान संप्रदाय आविर्भूत हुआ । उनको मोपला मुसलमान कहा जाता है । अरब के वणिक अपने साम्राज्य के विभिन्न स्थानों में व्यापार मेलों का आयोजन करते थे। भारत और भारत बाहर की बहुत सारी चीजें वहाँ बिक्री के लिए आती थीं।

अरबियों का सिंधु अंचल पर दखली :

महम्मद की मौत के बाद उनके उत्तराधिकारी या खलीफा लोग राज्य विस्तार करने की कोशिश करने लगे । काफी कम वक्त में अरब को सेना सीरिया, मेसोपोटोमिआ, पालेस्टाइन, इजिप्ट, अफ्रीका का पूर्वांचल और यूरोप के स्पेन आदि स्थानों में धर्म प्रचार करने के लिए उपनिवेशों की स्थापना की । राज्य विस्तार का उद्देश्य लेकर आठवीं शती में खलीफा लोगों ने भारत पर हमला किया । वे भारत को धनदौलत के प्रति आकृष्ट हुए थे । तत्कालीन राजनैतिक अवस्था उनको भारत आक्रमण के लिए प्रोत्साहित करती थी । लेकिन भारत पर दो बार हमला करने के बावजूद भी वे सफल नहीं हो पाए थे ।

आखिरकार 712 ईस्वी में खलीफा के आदेश पाकर महम्मद बिन काशिम नाम का, एक हमलावार बहुत सारे सैनिकों के साथ सिंधु प्रदेश में घुसे । स्थानीय राजाओं के प्रति प्रजाओं का असंतोष और अन्तदृष्टि आदि के कारण महम्मद बिन कासिम बड़ी आसानी से सिंधु और पंजाब के कई स्थानों पर अपना दखल जमाया । इसके बावजूद खलीफा के हुक्म से उन्हें फाँसी दे दी गई । इसलिए अरबी लोग भारत में इस्लाम राष्ट्र का निर्माण नहीं कर पाए । परंतु सांस्कृतिक दृष्टि से अरबीय लोगों ने भारत से दर्शन, गणित, विद्या, आयुर्वेद, विज्ञान, ज्योतिर्विद्या और ज्योतिष विद्या आदि विषयों का ज्ञान आहरण किया ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

(क) द्वितीय चंद्रगुप्त ने अपने को कौन - सी उपाधि से विभूषित किया था और उन्होंने कैसे अपने साम्राज्य का विस्तार किया था ?

(ख) फा-सियाँ के भारत भ्रमण संबंधी विवरण से उस समय के लोगों की अर्थनैतिक और सामाजिक अवस्था कैसी थी, लिखिए।

(ग) गुप्त युग में कैसे बौद्धधर्म की अवनति और ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान कैसे हुआ था ?

(घ) गुप्त युग के शासकों के समय कैसे साहित्य, कला और स्थापत्य की उन्नति हुई थी ? लिखिए।

(ङ) भारतीय संस्कृति को चालुक्यों की देन का उल्लेख कीजिए।

(च) दक्षिण भारत के सांस्कृतिक क्षेत्र में पल्लव शासकों का अवदान कैसे अतुलनीय था ?

(छ) जुआंग जांग (ह्वेन सांग) कौन हैं ? उन्होंने अपने भ्रमण वृत्तांत में क्या - क्या लिखा है ?

(ज) हर्षबर्द्धन की राज्यशासन प्रणाली कैसी थी ?

(झ) समुद्रगुप्त ने कैसे अपने राज्य को संगठित किया ?

(ञ) गुप्त युग को भारत का सुवर्णयुग क्यों कहा जाता है ?

2. **निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए।**

(क) प्रथम चन्द्रगुप्त ने किस वंश की राजकुमारी से शादी की थी ?इससे उनका प्रभाव कैसे बढ़ा था ?

(ख) इलाहाबाद की स्तंभ रचना को किसने लिखा था और उसे प्रशस्ति क्यों कहते हैं ?

(ग) समुद्रगुप्त की संगीत के प्रति रुचि थी, यह कैसे मालूम पड़ता है ?

(घ) फा-सियाँ के भारत के यात्रा विवरण से गुप्त युग में अपराधियों को कैसे सजा दी जाती थी ? यह कैसे मालूम होता है ?

(ङ) प्रसिद्ध कवि और नाटककार कालिदास क्या - क्या रचनाएँ की थीं ?

(च) गुप्त युग में विज्ञान का विकास कैसे साधित हुआ था ?

(छ) महम्मद का जन्म कहाँ हुआ था ? उन्होंने इसलाम धर्म के बारे में क्या कहा था ?

(ज) खलीफा लोगों ने किस उद्देश्य से भारत पर आक्रमण किया था ?

(झ) इसलाम के आविर्भाव से पहले अरब के व्यापारी भारत के साथ कैसे वाणिज्यिक संपर्क रखा था ?

3. **नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक - एक वाक्य में दीजिए ।**

(क) प्रथम चन्द्रगुप्त के पूर्व दो गुप्तवंशी राजाओं के नाम लिखिए।

(ख) गुप्तवंश के तृतीय राजा प्रथम चन्द्रगुप्त किस उपाधि से विभूषित हुए थे ?

(ग) किस वर्ष से भारत में गुप्ताब्द आरंभ हुआ ?

(घ) समुद्रगुप्त ने कौन-सा यज्ञ करके अपने को सार्वभौमराजा या सम्राट के रूप में प्रतिपादित किया था ?

(ङ) गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त किसानों से कैसे कर की वसूली करते थे ?

(च) शंकर के द्वारा प्रचारित अद्वैतवाद का प्रभाव किस धर्म पर पड़ा था ?

(छ) 'पंचतंत्र' की रचना किसने की थी ?

(ज) किस गुप्त राजा के दरबार में कालिदास थे ?

(झ) कौन पल्लव राजा ने 'वातापिकोण्डा' उपाधि ग्रहण किया था ?

(ञ) हर्षवर्द्धन के पिता का नाम क्या था ?

(ट) हर्ष के द्वारा लिखित नाटकों के नाम लिखिए।

(ठ) महम्मद का जन्म किस वर्ष में हुआ था ?

(ड) इसलाम धर्म के पवित्र ग्रंथ का नाम क्या है ?

4. 'क' स्तंभ के शब्द के साथ 'ख' स्तंभ के उपयुक्त शब्द जोड़िए।

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
महम्मद	कादम्बरी
प्रथम चन्द्रगुप्त	कांची
वाणभट्ट	भारतीय मसाला
पल्लव	अद्वैतवाद
द्वितीय पुलकेशीन	अहिहोल शिलालेख
जुआंग जांग	सि-यू-कि
अरब व्यापारी	सिंधु आक्रमण
महम्मद बिन काशिम	एकेश्वरवाद
शंकर	गुप्ताब्द
	मोपला

5. कोष्ठक में से सही शब्द चुन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

(क) द्वितीय चन्द्रगुप्त पश्चिम भारत में .... को पराजित किया था ।
(शक, हूण, ग्रीक, कुशाण)

(ख) शशांक .... देश के राजा थे ।
(गौड़, पांचाल, कलिंग, कामरूप)

(ग) रामायण महाभारत और पुराणों का संकलन .... युग में पूरा हुआ ।
(मौर्य, नन्द, गुप्त, वैदिक)

(घ) प्रभाकर वर्द्धन .... उपाधि से विभूषित हुए थे ।
(वातापिकोण्डा, महाराजाधिराज, कविराज, गजराज)

(ङ) जुआंग जांग .... ईस्वी को स्वदेश लौट गए ।
(629 ईस्वी, 644 ईस्वी, 570 ईस्वी, 710 ईस्वी)

(च) द्वितीय पुलकेशीन्...................... वंश का सर्वश्रेष्ठ राजा थे।

(गुप्त, पल्लव, चालुक्य, बर्द्धन)

(च) हर्ष हर पाँच सालों में .... में एक धर्मोत्सव करते थे ।

(कन्नौज, प्रयाग, थानेश्वर, एलोरा)

(छ) 'सकलोत्तरापथनाथ'......................... कहा जाता था ।

(समुद्रगुप्त, द्वितीय चंद्रगुप्त, हर्षवर्द्धन, शशांक)

आपके लिए काम :

- कालिदास की तरह प्राचीन भारत के कई कवि और नाटककारों की एक तालिका बनाइए।

राजनीति विज्ञान

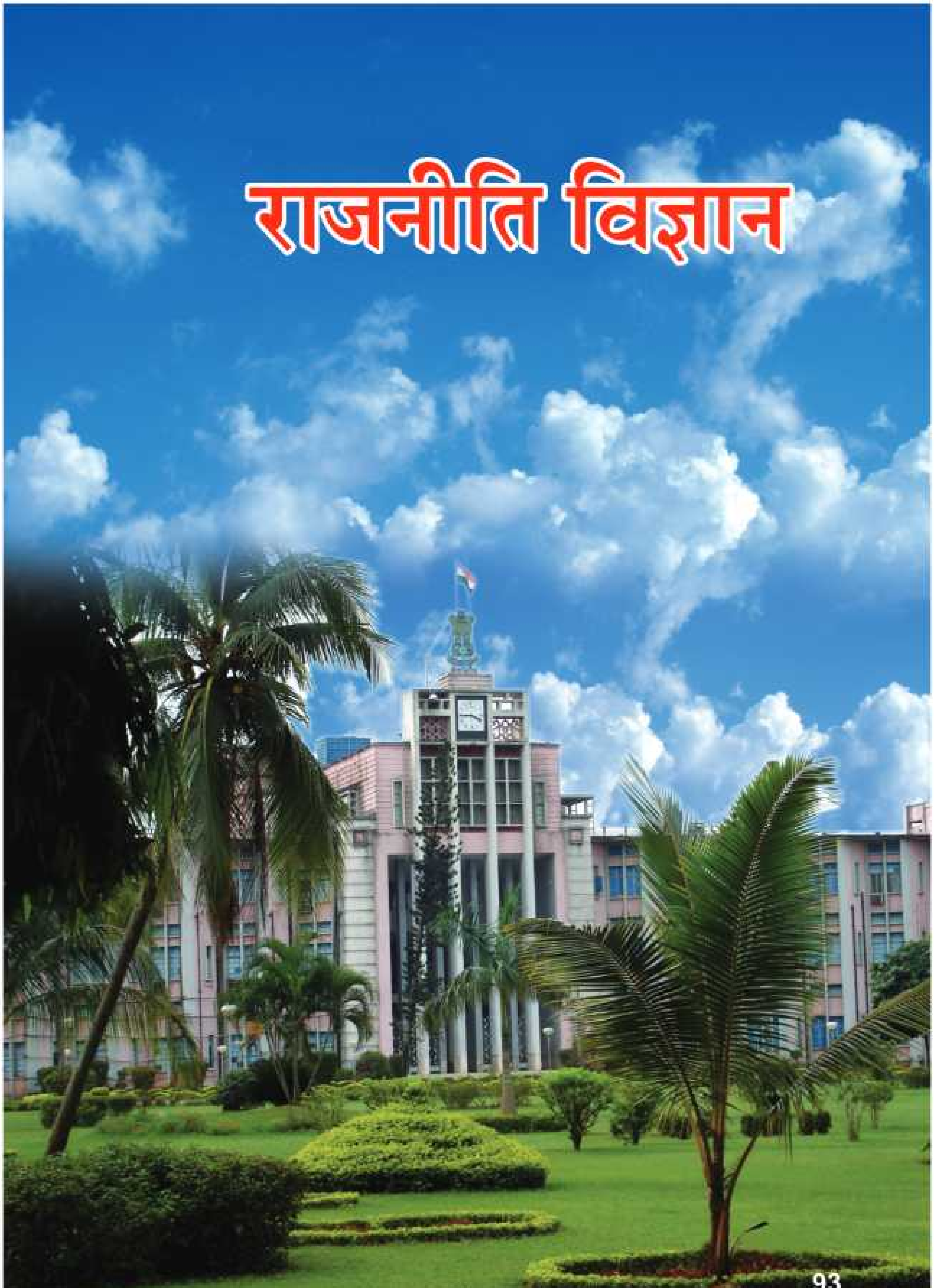

प्रथम अध्याय

हम और हमारा समाज

अखबार पढ़ते हुए पिताजी ने माँ से कहा, "सुनती हो, पिछली बाढ़ में काफी जानमाल का नुकसान हुआ है। लोगों के घरबार बह गए हैं, मुट्ठी भर खाने को भी नहीं बचा है । सरकारी , गैर-सरकारी संगठन मदद के लिए आगे आए हैं । मैं आज कुछ रुपये भेज देता हूँ ।" माँ ने कहा, "हाँ, जरूर ! यह तो हमारा कर्त्तव्य है । हम समाज में हैं । आपसी दु:ख-सुख में भागीदार बनना चाहिए । सब लोग, सभी परिवार सुख से रहें तभी न देश की प्रगति होगी ।" पढ़ाने के कमरे में बैठी मिनी पिताजी की बातें सुन रही थीं। सोच रही थी परिवार, समाज ये सब क्या हैं ? इनके बीच क्या संपर्क है ? ये न होते तो हमें क्या दिक्कतें होतीं ?

आइए, हम इन सबके बारे में जानें ।

परिवार :

हम सब परिवार में रहते हैं । यह सबसे छोटा सामाजिक अनुष्ठान है। परिवार के सब लोग घर में निवास करते हैं। कुछ लोग बाहर रहते हैं । फिर भी परिवार से संबंध रखते हैं ।

माता-पिता और उनकी संतानों को लेकर एकक परिवार बनता है । कुछ दूसरे परिवारों में माता-पिता, ताऊ-बड़ी माँ, चाचा - चाची, बुआ, फूफा, दादा, दादी आदि सब मिल-जुल कर रहते हैं । ऐसे परिवार को **संयुक्त परिवार** कहा जाता है ।

क्या आप जानते हैं ?

एकक परिवार :

माता पिता

संतान संतान

संयुक्त परिवार :

दादाजी दादी माँ

पिता माता चाचा चाची ताऊ बड़ी माँ चाचा फूफा

संतान संतान संतान संतान संतान संतान

- भारतीय परिवारों में पिता मुख्य होते हैं ।
- कुछ दूसरे परिवारों में माता भी मुख्य होती हैं ।

वंश की सुरक्षा परिवार का मुख्य उद्देश्य है । इसके अलावा शिशु का लालन - पालन , उसे सुरक्षा प्रदान, बड़े होने पर उसे जीविका कमाने में मदद करना जैसे काम भी परिवार को करना पड़ता है । परिवार के लोगों से सद्गुणों की शिक्षा करके शिशु उत्तम नागरिक बनता है ।

परिवार से शिशु कौन - से अच्छे गुण सीखता है, इस पर साथियों से चर्चा कीजिए। जैसे मिल-जुल कर काम करना ।

वंश :

आप पुराणों से यदु वंश, कुरुवंश आदि के बारे में सुना होगा । वैसे इतिहास में मौर्यवंश, पल्लव वंश, चालुक्य वंश, और गुप्त वंश आदि के बारे में पढ़ा होगा । सामान्य रूप से कई पीढ़ियों के रक्त संबंध वाले लोगों को लेकर वंश बनता है । आपके पिता, ताऊ, चाचा, का परिवार आपके दादाजी के परिवार से बने हैं । आपके दादाजी और उनके भाइयों को लेकर उनका परिवार बना है । इसलिए आपके बीच रक्त संपर्क है । इसलिए आप सब एक ही वंश के हैं।

एक वंश के लोग परस्पर को सहायता और सहयोग करते हैं । वंश की परंपरा के अनुसार विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान, क्रिया-कर्म पालन करते हैं । वंश के विभिन्न सदस्यों में विवाद उपजता है तो उसकी सुलह करते हैं । वंश अधिक पीढ़ियों का हो जाने पर , इसकी जनसंख्या ज्यादा हो जाती है । फलस्वरूप धार्मिक क्रिया कर्म के पालन में असुविधा होती है, कभी-कभार जमीन जायदाद को लेकर विवाद होता है । ऐसे वक्त कई निकट के संपर्क वाले लोग परिवार से मूल वंश से अलग होकर नया वंश रचते हैं । इसको वंश विभाजन कहा जाता है । वंश विभाजन होने पर भी समग्र वंश का एक साधारण पूर्व पुरुष (पूर्वज) होता हैं । प्रत्येक वंश के गोत्र विभिन्न प्रकार के होते हैं । गोत्र अर्थात् कुल प्रवर्तक ऋषि । विभिन्न ऋषियों को लेकर विभिन्न वंश होते हैं। जिस ऋषि को अपना कहकर सम्मान देते हैं, उसी वंश का गोत्र वही ऋषि हैं । जैसे - काश्यप, भरद्वाज, नागस्य ।

क्या आप जानते हैं ?

- हिंदुओं का वंश सामान्य तथा पितृवंशीय है ।
- कोई लड़की शादी करती है तो वह जिस परिवार में जाती है, वह उसी वंश में शामिल हो जाती है ।
- दूसरे वंश से आयी पोष्य संतान, जिस परिवार में आती है, उसी परिवार के वंश में शामिल होता है ।
- प्रत्येक वंश का गोत्र होता है ।
- कुछ गोत्र हैं - काश्यप , भारद्वाज, नागस्य।
- मित्रों के साथ आलोचना करके अन्य गोत्रों के नाम लिखिए।

आपके वंश में कितने परिवार हैं, हिसाब लगाइए।

जनजाति :

जनजाति भारतीय समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग हैं । अंग्रेजी में इसको ट्राइब (Tribe) कहते हैं । हम जनजाति के लोगों को आदिवासी या वनवासी के रूप में जानते हैं ।

ये एक निर्दिष्ट अंचल में वास करते हैं । एक जनजाति के लोग अपने को एक साधारण वंश के मानते हैं । ये एक साधारण भाषा में बातचीत करते हैं , मिल-जुल कर विभिन्न पर्व-त्योहारों का पालन करते हैं । समान काम करके अपनी जीविका चलाते हैं । प्रत्येक जनजाति में एक मुखिया होते हैं । सब उनके निर्देश का पालन करते हैं । हमारे राज्य में बण्डा, संथाल, कंध आदि जनजातियाँ देखे जाते हैं ।

ओड़िशा में किस जनजाति के लोग किस जिले में रहते हैं, उसकी तालिका बताइए। जैसे परजा - कोरापुट

जनजाति के लोग कई कारणों से शिक्षा और वैषयिक ज्ञान से पिछड़े हुए हैं। लेकिन उनकी संस्कृति काफी ऊँची है । नाच, गीत, पर्व मनाने की प्रणाली से उनकी उन्नत संस्कृति के बारे में पता चलता है । अब उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार आदि क्षेत्रों में उन्नत करने की कोशिश जारी है ।

क्या आप जानते है ?

- हमारे राज्य में 62 किस्म के आदिम आधिवासी है ।
- संथालों की भाषा है, संथाली उसकी लिपि है ।

जनजाति के नाम	भाषा
•	•
•	•
•	•
•	•
•	•
•	•

जनजाति की उन्नति के लिए क्या सब किया जा रहा है, चर्चा करके लिखिए।
जैसे - आदिवासी गाँव में विद्यालय ।

संघ :

कुछ लक्ष्य हासिल करने के लिए लोग अपनी इच्छा से इकट्ठे होकर काम करते हैं । इस तरह एकजुट होकर काम करने से संघ बनता है । हर संघ का साधारण लक्ष्य होता है । कुछ नीति नियम भी होते हैं ।

उनका पालन संघ के सभी सदस्य करते हैं । संघ के संचालन के लिए एक मुखिया होते हैं । सदस्य लोग चंदा देकर संघ के लिए धन जमा करते हैं ।

परिवार की तरह संघ, चिरस्थायी होते हैं। दूसरे संघ स्थायी न होने के कारण अधिक समय तक रहने हेतु स्थायी होते हैं।

क्या आप जानते हैं ?

- कार्य के अनुसार अनेक प्रकार संघ होते हैं । इन संघों में से कुछ के उदाहरण नीचे दिए गए हैं । और कौन-से उदाहरण दिए जा सकते हैं, सोचकर लिखिए।
- रक्त संबंधीय संघ - परिवार
- धार्मिक संघ - हिंदू महासभा
- अवसर विनोदन संघ- के संगीत, नृत्य अनुष्ठान
- वृत्ति/ पेशे के संघ - वकील संघ
-
-
-

आप जिन संघों के बारे में जानते हैं, उनके क्या लक्ष्य हैं, चर्चा कर लिखिए । जैसे - रिक्सा चालक संघ का लक्ष्य है उचित किराए की रकम पाना ।

समुदाय / गोष्ठी (कम्युनिटी)

एक निर्दिष्ट अंचल में एकता का मनोभाव लेकर रह रहे लोगों को लेकर समुदाय या गोष्ठी बनती है । यह प्राकृतिक ढ़ंग से बनती है । एक गोष्ठी में रहनेवाले लोग एक साधारण जीवनधारा में सहभागी होते हैं । गाम्य समुदाय / पौर समुदाय आदि इसके उदाहरण हैं ।

सदस्यों की जरूरतें पूरी करने ही गोष्ठी या समुदाय का मुख्य लक्ष्य है । एक समुदाय में रहनेवाले लोगों की प्रथा, रीतिरिवाज, परंपरा, भाषा आदि में समानता होती है । समुदाय के वासस्थान जितने छोटे होते हैं, लोगों में एकता उतनी दृढ़ होती है। फिर भी वृहत् समुदाय भी व्यक्ति को कई तरह से मदद करता है ।

क्या आप जानते हैं ?

- कोई संघ अपने लक्ष्य के अलावा जनसामान्य के लिए उन्नतिमूलक काम करे तो सामुदायिक गुण बढ़ते हैं ।
- आजकल हमारे गाँवों के सामुदायिक गुण कम हो रहे हैं । यह एक अच्छा लक्षण नहीं हैं। इसके कारण के बारे में खुद सोचिए और सामुदायिक संपर्क और एकता की वृद्धि के लिए क्या किया जा सकता हैं, लिखिए।
-
-
-

छोटे समूह (समुदाय) में आत्मनिर्भरता , निविड़ संपर्क, मित्रता, आंतरिकता दिखाई देती है । वृहत् समूह व्यक्ति को आवश्यक वस्तुओं की आपूर्त्ति , सामयिक सुरक्षा, अर्थउपार्जन की क्षमता आदि प्रदान करते हैं ।

दूसरे किन क्षेत्रों में गोष्ठी या समुदाय व्यक्ति को मदद करता है, चर्चा कीजिए।

समाज

आदिम मनुष्य स्वतंत्र होकर जीवन बिताता है । बाद में जनसंख्या बढ़ी तो उनमें कलह और शत्रुता पैदा हुई । तब मनुष्य कुछ नीति - नियम बनाकर सुख से रहने की कोशिश करने लगा ।

- 1838 में अमेरीका में आन्ना नाम की एक पाँच साल की लड़की का पता लगा । छह महीने की उम्र से उसे एक कमरे में छिपा कर रखागया था । उसे पाँच साल होने पर भी वह न तो ठीक से चल पाती थी, न बात कर पाती थी। सही तालीम लेने के बाद वह धीरे-धीरे चल-फिर सकी, बोल सकी ।

समाज के बिना जिंदा रहना मनुष्य के लिए नामुमकिन है । अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए मनुष्य समाज पर निर्भर करता है । समाज बचपन से शिशु की मदद करता है । शिशु समाज से सहयोग, सहनशीलता, शौच-सफाई आदि अच्छे गुण सीखता है । समाज व्यक्ति को अपनी जीविका अर्जन करने में मदद करता है, और व्यक्ति अपने धन जीवन की सुरक्षा के लिए समाज पर निर्भर करता है । व्यक्ति समाज से नई अभिज्ञता और ज्ञान हासिल करता है । अपने को परिमार्जित करके उन्नति करने की कोशिश करता है । समाज में प्रचलित आदर्श , नीति और रीति - रिवाजों से व्यक्तित्व का सही विकास होता है । वैसे व्यक्ति समाज पर निर्भर करता है , वैसे ही समाज भी व्यक्ति पर निर्भर करता है । व्यक्ति की उन्नति होती है तो समाज की उन्नति होती है । व्यक्ति समाज में परिवर्तन लाकर उसे समृद्ध करता है ।

पूर्व काल में अपराधियों को निर्वासन का दंड क्यों दिया जाता था, चर्चा कीजिए।

हमने सीखा -

- परिवार एक क्षुद्रतम सामाजिक संस्था है ।
- शिशु परिवार से विभिन्न गुण सीखता है ।
- रक्त संबंधीय परिवारों को लेकर परिवार बनता है ।
- कुल प्रवर्त्तक ऋषि को लेकर गोत्र बनता है ।
- एक साधारण नाम वाले देशीय लोगों के क्षुद्र समूह को जनजाति कहा जाता है । उनकी भाषा, धर्म, विश्वास, चाल-चलन , जीविका अर्जन आदि में समानता होती है ।
- निर्दिष्ट लक्ष्य हासिल करने के लिए कुछ व्यक्ति स्वेच्छा से मिलजुल कर संघ गठन करते हैं ।

- एक निर्दिष्ट अंचल में एकताबद्ध होकर निवास करने वाले लोगों को लेकर 'समुदाय' या 'गोष्ठी' गठित होती है ।
- समाज के बिना मनुष्य की स्थिति असंभव है । व्यक्ति और समाज परस्पर परिपूरक हैं ।

अभ्यास

1. संक्षेप में उत्तर लिखिए।

(क) व्यक्ति कैसे समाज पर निर्भर करता है ?

(ख) परिवार के क्या कार्य होते हैं ?

(ग) समुदाय और संघ के बीच क्या फर्क है ?

(घ) एक जनजाति के लोगों में कौन - सी समानताएँ दीखती हैं ?

(ङ) वंश - विभाजन के कारण बताइए ।

(च) समाज की उन्नति कैसे की जा सकती है ?

2. नीचे दिए संघ कार्य की दृष्टि से किस प्रकार के हैं ?

परिवार -

रामकृष्ण मिशन -

प्राथमिक शिक्षक संघ -

रेडक्रॉस -

3. शून्य स्थानों की पूर्त्ति कीजिए।

(क) क्षुद्रतम सामाजिक संस्था है .... ।

(ख) साधारण लक्ष्य साधन के लिए कुछ लोग स्वेच्छा से .... गठन करते हैं ।

(ग) लोगों के बीच संबंध की निबिड़ता .... समुदाय में ज्यादा होती है ।

(घ) संथाल जनजाति के लोग .... भाषा में बात करते हैं ।

(ङ) रक्त संबंध वाले परिवारों को लेकर .... गठित है ।

4. सही उत्तर के सामने (✓) और गलत उत्तर के सामने (×) निशान लगाइए।

(क) एकक परिवार में बाप - माँ , चाचा-चाची, उनके बच्चे सब मिल जुलकर रहते हैं । ☐

(ख) समुदाय (समूह) प्राकृतिक ढ़ंग से बनता है । ☐

(ग) समाज के साथ व्यक्ति का कोई संपर्क नहीं होता । ☐

(घ) परिवार से शिशु अनेक गुण सीखता है । ☐

5. संपर्क को देखकर शून्य स्थान को भरिए ।

(क) पुत्र : पिता का गोत्र : : विवाहिता कन्याएँ : ....

(ख) परजा : कोराफुट : : बण्डा : ....

(ग) आत्मनिर्भरता : क्षुद्र समुदाय : : सामाजिक सुरक्षा : ....

(घ) पारवार : चिरस्थायी : : राजनैतिक दल : ....

आपके लिए काम :

- आपके ग्राम / अंचल में स्थित क्लब या स्वयं सहायक गोष्ठी के मुख्य से मुलाकात कर वे कौन से कार्य करते हैं, पूछताछ कर और लिखिए ।
- आपके वंश के पूर्वजों की तालिका बनाइए। जरूरत हो तो पिताजी / दादाजी से पूछिए।
- टार्जन कहानी पुस्तक पढ़िए। समाज से दूर रहने से क्या दिक्कत होती है ?
- आपके गाँव / वार्ड में जो एकक और संयुक्त परिवार हैं, उनकी तालिका बनाइए, हर परिवार के मुख्य के नाम लिखिए।

राष्ट्र

कक्षा में पढ़ाई शुरु होने से पहले शिक्षक ने बच्चों से एक सवाल किया । बच्चों बताइए गरीब रथ किसे कहते हैं ? फौरन सुमन सौरभ ने सही उत्तर दिया कि जो सवारी रेलगाड़ी कम किराये में वातानुकूलित सुविधा देती हैं उसे "गरीब रथ" कहते हैं । यह साधारणत: एक राज्य की राजधानी से दूसरे राज्य की राजधानी तक यातायात करती है। उत्तर सुनकर शिक्षक खुश हुए और बोले, "ऐसी रेलयात्रा की सुविधा राष्ट्र ने हमारे लिए किया है ।"

यह सुनकर सुमन ने सोचा, राष्ट्र क्या है ? राष्ट्र ने हमारे लिए और क्या-क्या किया हैं ?

राष्ट्र का अर्थ :

राष्ट्र राजनीति विज्ञान की मुख्य विषयवस्तु और केन्द्रबिन्दु है । हमारे सामाजिक जीवन में राष्ट्र की भूमिका काफी है। क्योंकि यह सबसे बड़ा शक्तिशाली सामाजिक तथा राजनैतिक संस्था है । मनुष्य जन्म होते ही अपने को राष्ट्र की सदस्य तालिका में शामिल करता है । राष्ट्र कब बना ? इसके बारे में सठीक कुछ नहीं कहा जा सकता । लेकिन मनुष्य पैदा होने के साथ राष्ट्र की आवश्यकता आ पड़ी है, ऐसा कहा जाता है। यह सबसे शक्तिशाली संगठन होने के कारण व्यक्ति और संघों के विभिन्न कार्यकलापों के बीच समन्वय स्थापित करता है ।

क्या आप जानते हैं ?

- अरस्तू की राय में, परिवार और ग्रामों की समष्टि से राष्ट्र बनता है ।
- अध्यापक गारनार की राय है, कि स्थायी रूप में एक निर्दिष्ट भूखंड में रहनेवाले, बाहरी नियंत्रण से मुक्त और अधिकांश अधिवासियों का निरवच्छन्न अनुगत रहना एक संगठित सरकार के अधिकारी, कमोबेश लोगों के संप्रदाय को राष्ट्र कहते हैं ।

राष्ट्र के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति का सही विकास होता है । क्योंकि साधारण व्यक्ति सर्वांगीण विकास के लिए राष्ट्र कई प्रकार के कल्याणकारी योजना बना कर उनका कार्यान्वयन कराता है । समय के परिवर्तन के साथ राष्ट्र का कार्य करने का ढ़ंग भी बदलता है । हर मनुष्य की इच्छा होती है कि वह एक स्वस्थ सामाजिक जीवन जीए । इसी के मूल में राष्ट्र सृष्टिका कारण निहित है । चूँकि राष्ट्र एक स्थायी संस्था है; इसकी जरूरत हर समय पड़ती है । राष्ट्र के द्वारा निर्मित नीति - नियम सामाजिक जीवन को अनुशासित करते हैं । दृढ़ करते हैं । मनुष्य की इच्छा ही उसे राष्ट्र में रहने को मजबूर करती है, इसलिए एक अत्यावश्यक संस्था है ।

राष्ट्र के वैशिष्ट्य / उपादान :

राष्ट्र के मुख्य रूप से चार उपादान हैं - (क) जनसंख्या (ख) आयतन (ग) सरकार (घ) सार्वभौमत्व

(क) **जनसंख्या :** राष्ट्र के गठन के लिए अधिवासी / जनसंख्या आवश्यक है । क्योंकि जनमानव शून्य रेगिस्तान , सागर और पशुओं का आवास जंगल को राष्ट्र नहीं कह सकते । जनसंख्या के बिना राष्ट्र की स्थिति असंभव है । जनसंख्या की कोई निर्दिष्ट सीमा नहीं होती । यह चीन या भारत जैसे भारी जनसंख्या वाले राष्ट्र हो सकते हैं या मोनाको और सानमारिनो जैसे कम जनसंख्या वाले राष्ट्र भी हो सकते हैं । वास्तव में किसी राष्ट्र की जनसंख्या उसके आयतन और संबल के अनुसार होना चाहिए ।

> **क्या आप जानते हैं ?**
> - प्लाटो के मतमें राष्ट्र का जनसंख्या 5040 होना चाहिए।
> - रूषो कहते थे, राष्ट्र का जनसंख्या 10,000 होना चाहिए।

(ख) **आयतन :** जनसंख्या की तरह हर राष्ट्र का एक अपना भूखण्ड रहना चाहिए । यह न हो तो राष्ट्र बन ही नहीं सकता। इसलिए इसकी एक निर्दिष्ट परिसीमा होनी चाहिए । जल, स्थल, नभ , नदी, झील , खनिज द्रव्यों को लेकर एक राष्ट्र की परिसीमा स्थिर होती है । राष्ट्र के लिए भूभाग एक दम आवश्यक है । लेकिन इसकी एक निर्दिष्ट सीमा नहीं है । यह रूस, संयुक्त राष्ट्र अमेरीका और चीन की सीमा जैसी बड़ी भी हो सकती है और मोनाको सारमारिनों की तरह छोटी भी ।

आयतन बड़ा हो तो राष्ट्र की क्या - क्या सुविधाएँ होती हैं, मित्रों से बात करके लिखिए।

(ग) **सरकार :** सरकार किसी भी राष्ट्र का एक महत्त्वपूर्ण अंग है । एक निश्चित भूभाग में अधिवासी रहते हुए भी उसे राष्ट्र नहीं कह सकते अगर उसकी अपनी-अलग सरकार न हो । सरकार एक राजनैतिक संगठन होने के कारण इसके जरिए राष्ट्र की इच्छा जाहिर होती है, और विविध श्रिर्णयों पर कार्य कराती है । सरकार के जरिए राष्ट्र का सच्चा रूप प्रकाशित होता है । सरकार न हो तो राष्ट्र का शासन कार्य नहीं चल सकता, क्योंकि सरकार के पास राष्ट्र के सारे अधिकार होते हैं । सरकार जनसाधारण सामाजिक जीवन को नियंत्रित और अनुशासित करते हैं । सरकार न हो तो अराजकता होती है और राष्ट्र, समाज तथा व्यक्ति का अस्तित्व विपन्न हो जाता है ।

(घ) **सार्वभौमत्व :** सार्वभौमत्व ही राष्ट्र का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपादान है । यह राष्ट्र की जीवन-शक्ति है । इसके बल पर राष्ट्र दूसरे सभी संघों से अलग मालूम पड़ता है । सार्वभौमत्व राष्ट्र का सबसे बड़ा अधिकार है । उसके ऊपर दूसरी कोई क्षमता नहीं होती । सार्वभौम अधिकार का प्रयोग करके राष्ट्र अपने देश के नागरिक, गोष्ठी , संस्था आदि को नियंत्रित करने के साथ स्वतंत्र रूप से वैदेशिक नीति बनाता है ।

क्या आप जानते हैं ?

- सार्वभौमत्व (Sovereignty) एक लैटिन शब्द सुपरआनस से निकला है। इसका अर्थ है, सर्वोच्च क्षमता ।
- सार्वभौमत्व को दो भागों में विभक्त किया गया है । जैसे-आभ्यंतरीण सार्वभौमत्व और बहि:सार्वभौमत्व।
- आभ्यंतरीण सार्वभौमत्व के बल पर राष्ट्र,व्यक्ति, नागरिक, गोष्ठी और संस्थाओं पर नियंत्रण जारी करता है ।
- बहि: सार्वभौमत्व के बल से राष्ट्र अपनी विदेश नीति और संबंध निर्धारित करता है ।

राष्ट्र की उत्पत्ति और विकास

राष्ट्र की उत्पत्ति कब और कैसे हुई, कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिलता। इसकी उत्पत्ति के बारे में जो कुछ कहा गया है , वे सब अनुमान और कल्पना के आधार पर है । इस संबंध में नीचे चर्चा की गई है । राष्ट्र की उत्पत्ति के बारे में एक प्राचीन मत भी है । इसके अनुसार राष्ट्र ईश्वर के द्वारा बनाया गया है । इसको शासन करने के लिए ईश्वर राजा को भेजते हैं । राजा ईश्वर के प्रतिनिधि हैं । इस मत के अनुसार अतीत में अनेक राजा (स्वेच्छाचारी) होकर प्रजाजनों पर बहुत अत्याचार कर गए हैं ।

- ईसाई धर्म के प्राचीन ग्रंथ टेस्टामेंट और हिंदू धर्म की मनु स्मृति और महाभारत में राष्ट्र भगवान के द्वारा बनाया गया है, ऐसा लिखा है ।
- भगवान के द्वारा राष्ट्र बना है । इस मत को ऐश्वरीय सृष्टि तत्त्व कहा जाता है ।

राजा स्वेच्छाचारी हो तो लोगों की क्या क्या असुविधाएँ होती हैं, एक तालिका बनाइए।

एक दूसरा मत है कि शक्ति या युद्ध के द्वारा राष्ट्र की उत्पत्ति हुई है । अतीत में कुछ दलों के नेता बल लगाकर दूसरों को अपने अख्तियार में कर लेते थे । कई शक्तिशाली राष्ट्र दूसरे कमजोर राष्ट्र को युद्ध में पराजित करके उनके राज्यों को अपने राज्य में मिलाकर अपने राज्य की परिसीमा बढ़ा लेते थे ।

क्या आप जानते हैं ?

- युद्ध या शक्ति द्वारा राष्ट्र की उत्पत्ति को शक्तितत्त्व कहा जाता है ।
- इस तरह की रीति-रिवाज प्राचीन काल में प्रचलित थी ।

'जोर जिसका राज उसका' इस नीति पर समाज परिचालित होता था । इसलिए युद्ध या शक्ति से राज्य उत्पन्न हुआ है, ऐसा अनुमान किया जाता है ।

माता और पिता के कर्तव्य से राष्ट्र की उत्पत्ति हुई है, कुछ लोग यह राय भी देते हैं। इस मत के अनुसार अति प्राचीन काल में विभिन्न स्थानों में पितृकैन्द्रिक और मातृकैन्द्रिक परिवार होते थे, ऐसा प्रमाण मिला है । माता या पिता परिवार के मुख्य थे । परिवार के मुख्य के हिसाब से बाकी सभी लोग उनको मानते थे । परिवार से वंश और वंश से गोष्ठी बनी है । इसी गोष्ठी से राष्ट्र की उत्पत्ति हुई है । अत: राष्ट्र को माता या पिता के कर्तव्य का रूपांतर कहा जाता है ।

- माता या पिता के कर्त्तब्य के रूपांतर से राष्ट्र बना है । इस मत को पितृशासित और मातृशासित सिद्धांत कहते हैं।

आपके परिवार में माता - पिता क्या - क्या करते हैं लिखिए।

राष्ट्र की उत्पत्ति के बारे में कुछ दूसरे लोग अलग राय देते हैं । उनके विचार से सामाजिक अनुबंध (इकरार) से राष्ट्र बना है। वे कहते हैं कि सृष्टि के आरंभ काल में कोई समाज या राष्ट्र नहीं था । तब बसने वाले आदि मानव सरल जीवन बिताते थे । इस अवस्था को मानव की प्राकृतिक अवस्था कहा जाता था । बाद में उनके बीच झगड़ा हुए । 'जोर या बल जिसका मुल्क उसी का ' वाली स्थिति हुई । इससे लोगों का जीवन दु:खमय हो गया । कालक्रम से यह स्थिति असहनीय हो गई तो अपने धन जीवन की सुरक्षा के लिए, सुख शांति से रहने के लिए आपस में अनुबंध करके राष्ट्र की उत्पत्ति की।

क्या आप जानते हैं ?

- मनुष्य इकरारनामे से राष्ट्र बना है । इस मत को सामाजिक करार मतवाद कहते हैं।
- अंग्रेज दर्शन हाब्स, लक और फरासी दार्शनिक रूसो, सामाजिक करार वाले मतवाद के समर्तक हैं ।

कुछ लोग राष्ट्र की उत्पत्ति को लेकर एक भिन्न मत देते हैं । उनका मत है कि राष्ट्र की उत्पत्ति विभिन्न पर्यायों में क्रम विवर्त्तन से संभव हुआ । उनके बारे में नीचे चर्चा की जा रही है ।

रक्त संबंध :

राष्ट्र के क्रम विकास में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है । रक्त संबंध से परिवार की वृद्धि हुई, कालक्रम से वंश और गोष्ठी बनी । वही गोष्ठी अंत में राष्ट्र में बदल गई ।

धर्म : अत्यंत प्राचीन काल से धर्म की मदद से ऐक्य भाव पनपा और लोग एक निश्चित स्थान में रहने लगे । तो धार्मिक एकता से राष्ट्र की उत्पत्ति हुई ।

शक्ति : अतीत काल में शक्ति का प्रयोग करके कई राष्ट्रों का निर्माण किया गया । राजा लोग युद्ध करके सीमा बढ़ाकर साम्राज्य स्थापित करते थे । शक्ति ही राष्ट्र की स्थिति को नियंत्रित करती थी ।

व्यक्तिगत संपत्ति :

यायावर जीवन छोड़कर एक वक्त ऐसा आया जब मनुष्य व्यक्तिगत संपत्ति का मालिक बना । उसके साथ जनसंख्या बढ़ी । इस व्यक्तिगत संपत्ति की सुरक्षा के लिए राष्ट्र की आवश्यकता का अनुभव मनुष्य को हुआ । इसलिए राष्ट्र के क्रमविकास में व्यक्तिगत संपत्ति एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती रही ।

राजनैतिक चेतना :

राष्ट्र गठन में राजनैतिक चेतना या इच्छाशक्ति का एक मुख्य उपादान के रूप में स्वीकार किया गया है । इसी चेतना या इच्छा शक्ति के द्वारा राष्ट्र की उत्पत्ति हुई है । समय के बीतने पर मनुष्य की राजनैतिक चेतना में अग्रगति हुई है । इसी चेतना के माध्यम से उसने अपने मौलिक अधिकार और समाज में संगठित जीवन का महत्त्व समझ सका है । राष्ट्र के द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण उन्नति हुई ।

इसलिए विभिन्न पर्यायों में राष्ट्र का क्रमविकास होकर आज के दिन में गणतांत्रिक प्रथा के जरिए अनेक राष्ट्र संचालित हो रहे हैं ।

राष्ट्र के कार्य

आज के जमाने में पृथ्वी के अधिकांश राष्ट्र अपने को जनकल्याण या जनमंगल राष्ट्र के रूप में विवेचन करते हैं । इसलिए वे जनसाधारण के लिए बहुत सारे उन्नतिमूलक कार्य करने का लक्ष्य रखते हैं । एक जन कल्याण राष्ट्र के कार्य को दो भागों में विभाजित किया जाता है । जैसे - (1) बाध्यतामूलक कार्य (2) इच्छाधीन कार्य ।

बाध्यतामूलक कार्य

- देश के अंतर शांति और अनुशासन की रक्षा करके जनसाधारण के धन जीवन को सुरक्षा देना ।
- देश को बहि: शत्रु के आक्रमण से बचाना।
- उत्तम वैदेशिक नीति बनाकर दूसरे देशों के साथ सुसंपर्क रखना।

क्या आप जानते हैं ?

राष्ट्र की स्थिति, व्यक्ति की सुरक्षा और देश की स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए जो कार्य किए जाते है, उनको राष्ट्र के बाध्यतामूलक कार्य कहते हैं ।

- लोगों को सही इंसाफ दिलाने के लिए कानून बनाना और अदालत स्थापित करना ।

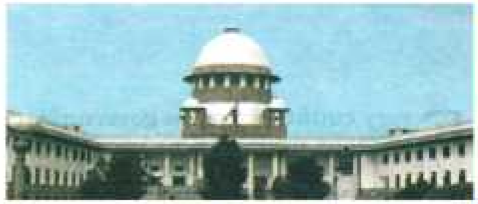

उच्चतम न्यायालय

इच्छाधीन कार्य :

- शिल्प / उद्योग संस्थाओं का नियंत्रण करना।
- कृषि का आधुनिकीकरण, सिंचाई और सहकारी संस्थाओं की उन्नति करना।
- अत्यावश्यक जिनसों की सही कीमत में आपूर्ति और बिक्री।
- शिक्षा और स्वास्थ्य की उन्नति के लिए विभिन्न कार्यक्रम तैयार करना और कार्यन्वयन के लिए कदम उठाना।
- आवाजाही / गमनागमन और योगायोग व्यवस्था की सही परिचालना करना।
- अर्थनैतिक योजना द्वारा मानव संबल का सही विनियोग करना।
- दुर्बल श्रेणी के लोग के लिए सामाजिक और अर्थनैतिक व्यवस्था करना।
- वृद्ध/वृद्धा, लावारिस और दिव्यांगों के लिए सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना।

जो कार्य जनसाधारण के कल्याण लिए उद्दिष्ट है उसको देश का इच्छाधीन कार्य कहते हैं।

आपके अंचल में सरकार की ओर से लोगों की उन्नति के लिए क्या क्या कार्य किये जा रहे हैं, दूसरों से चर्चा करके लिखिए।

लोगों की उन्नति के लिए राष्ट्र बहुत से कार्यक्रम चलाते हैं । ये कार्यक्रम विभिन्न समय में लोगों की जरूरतों के अनुसार अलग अलग होते हैं । अब विभिन्न राष्ट्र शिक्षा, स्वास्थ्य, अर्थनैतिक और सामाजिक सुरक्षा जैसे अनेक योजनाओं पर जोर देते हैं । इन सभी कार्यक्रमों को सफलता के साथ कार्यकारी करने से जनसाधारण की बहुत प्रकार की उन्नति हो रही है ।

हमने सीखा-

- राष्ट्र ही राजनीति विज्ञान की मुख्य विषयवस्तु है और केन्द्रबिन्दु है ।
- राष्ट्र के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति का सही विकास होता है ।
- जनसंख्या, आयतन, सरकार, सार्वभौमत्व इन चार उपादानों से राष्ट्र बनता है ।
- राष्ट्र ईश्वरीय शक्ति, सामाजिक अनुबंध (इकरार), पिता माता के कर्तत्व और क्रम विवर्तन द्वारा उत्पन्न हुआ है, ऐसा कहा जाता है ।
- राष्ट्र के कार्य को दो भागों में बाँटा गया है । 1. बाध्यतामूलक 2. इच्छाधीन।

अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50 शब्दों में दीजिए ।**

(क) राष्ट्र को राजनीति विज्ञान का मुख्य विषय क्यों कहा जाता है ?
(ख) राष्ट्र को एक अत्यावश्यक अनुष्ठान क्यों कहते हैं ?
(ग) राष्ट्र किन किन उपादानों से गठित है ?
(घ) सार्वभौमत्व का क्या मतलब है , इसका प्रयोग राष्ट्र कहाँ कहाँ करता था ?
(ङ) शक्ति के द्वारा राष्ट्र का गठन कैसे होता है ?
(च) सामाजिक इकरार (अनुबंध) का क्या अर्थ है ? यह क्यों किया गया था ?
(छ) व्यक्तिगत संपत्ति राष्ट्र गठन में मुख्य भूमिका कैसे अदा किया ?
(ज) राष्ट्र के कार्यों को कितने भागों में विभाजित किया जाता है ? और वे सब क्या-क्या हैं ?

2. **रेखांकित पद को न बदलकर वाक्य में गलती हो तो ठीक कीजिए।**

(क) राष्ट्र एक इकरार वाला संघ है ।
(ख) मोनाको की जनसंख्या बहुत है ।
(ग) सरकार एक धार्मिक संगठन है ।
(घ) गोष्ठी से परिवार बना है ।
(ङ) उद्योग संस्थाओं को नियंत्रण करना राष्ट्र का एक बाध्यतामूलक कार्य है ।

3. **रेखांकित पद/ पदों को बदलकर गलती का सुधार कीजिए।**

(क) राष्ट्र एक अस्थायी संस्था है ।
(ख) सरकार विभिन्न रीतिरिवाजों से परिचालित है ।
(ग) राष्ट्र की उत्पत्ति के बारे में जो कहा है, वे सब वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है ।
(घ) आदिमानव का सरल ढ़ंग से रहना उसकी कृत्रिम अवस्था है ।
(ङ) धर्म के द्वारा विभेद पैदा होता है ।
(च) देश में शांति अनुशासन बनाए रखना एक इच्छाधीन कार्य है ।

आपके लिए काम :

- आपके इलाके में सरकार की ओर से गरीब बेसहारा लोगों की उन्नति के लिए क्या क्या कार्यक्रम होते हैं, एक विवरण तैयार कीजिए।
- विभिन्न राष्ट्रायत्त संस्थाओं का निशान संग्रह करके एक अलबम बनाइए ।

सरकार

विश्वजित और मोनिका भाई-बहन हैं । मोनिका बड़ी है, विश्वजित छोटा है । एक दिन माँ ने उनसे कहा कि "आज पिताजी घर में नहीं हैं । तुम दोनों बाजार जाओ, मछली लाना ।" भाई बहन बाजार गए । रास्ते में चलते हुए विश्वजित ने कहा - "दीदी हमारे गाँव में तो ऐसे सुंदर रास्ते हैं नहीं । इतना बढ़िया रास्ता किसने बनाया है ?" मोनिका बोली, "सरकार ने ।" यह सुन कर विश्ववजित के मन में सवाल उठा - यह सरकार कौन है ? वह कहाँ रहती है और क्या काम करती है ?

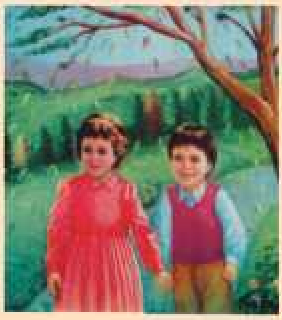

सरकार क्या है ?

सरकार राष्ट्र का एक अभिन्न अंग है । इसके द्वारा राष्ट्र का शासन कार्य चलता हैं । सरकार राष्ट्र की उन्नति के लिए विभिन्न योजनाएँ , जैसे - गमनागमन के लिए रास्ता बनाना, उनकी मरम्मत करना, शहर गाँवों में बिजली पहुँचाना, लोगों को खेती व्यापार के लिए ऋण देना, विद्यालयों के लिए गृहनिर्माण जैसे अनेक कार्य करती है। इन योजनाओं के कार्यन्वयन से जन साधारण की बहुत प्रकार से उन्नति होती है ।

इसके अलावा सरकार देश की सीमा को सुरक्षित करके बाहरी आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करता है । दूसरे देशों के साथ अच्छा संबंध रखकर अपनी उन्नति करती है । इसके अलावा सरकार लोगों के लिए आवश्यक परिमाण में खाद्य आपूर्ति कराती है । लोगों की अच्छी सेहत की व्यवस्था, इलाज के लिए अस्पताल की स्थापना करती है । सरकार विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं

क्या आप जानते हैं ?

सरकार के अन्य कार्य हैं -

- गरीबी रेखा के नीचे वाले लोगों को वासगृह देना।
- सभी को काम देना।
- जाति, धर्म, वर्ण, निर्विशेष में सब को सुरक्षा देना।
- दरदाम में नियंत्रण।
- आप जो जानते हैं कुछ अन्य कार्यक्रमों की तालिका कीजिए।

जैसे-भूकंप, तूफान, बाढ़ और अकाल आदि के समय लोगों की मदद करती हैं । उनके जान-माल की रक्षा करती है। इसके साथ दफ्तर, अदालत के जरिये सुख चैन से रहने की व्यवस्था भी करती है ।

- नदियों की बाढ़, अकाल के समय ओड़िशा के विभिन्न जिलों में लोगों को बहुत नुकसान होता है । ऐसी आपदा में सरकार जनता के लिए कई तरह के मदद की व्यवस्था करती हैं । सरकारी सहायता से लोग जीने की हिम्मत पाते हैं । विपत्ति की सफल मुकाबला करते हैं । सरकार न होती लोगों को बहुत दिक्कतें होतीं ।

आपके अंचल में कौन-कौन से जनमंगल काम कराए गए हैं ? उसकी एक तालिका बनाइए।

सरकार जनसाधारण के मंगल के लिए कानून बनाते हैं । जैसे कि खुली जगह में सबके सामने धूम्रपान नहीं करना, गाड़ी चलाते वक्त लाइसेंस पास रखना और हेलमेट पहनना आदि कानून है । इन कार्यों को जनता पालन न करे तो दंड की व्यवस्था है । ऐसे कानून लागू होता है । देश में सरकार न हो तो अशांति होती है, अनुशासन भंग होता है और अराजकता फैलती है । फलस्वरूप देश की प्रगति ठीक से पहीं हो पाती ।

सरकार के द्वारा और कौन से नीति-नियम लागू किया जाता है, साथियों से चर्चा करके लिखिए।

सरकार विभिन्न कार्यों के सुपरिचालन के लिए बहुत सी संस्थाएँ ; जैसे - डाकघर, स्कूल, गोष्ठी उन्नयन अधिकारी का दफ्तर, हाईकोर्ट आदि स्थापित करती है । इनके जरिए सरकारी काम सफलता के साथ कार्यान्वित करके जनसाधारण का अशेष उपकार करती है ।

उच्च न्यायालय

सचिवालय

पहले जो कुछ कहा गया उसमें विभिन्न कार्यों के द्वारा सरकार की आवश्यकता, राष्ट्रगठन में उसकी अपरिहार्यता कितनी अधिक है, यह आसानी से पता चल जाता है । सरकार राष्ट्र का महत्त्वपूर्णक अंग है । दुनिया के विभिन्न देशों में राजनैतिक, अर्थनैतिक आधार पर सरकार गठित होती है ।

ये सरकार कई तरह की होती हैं। जैसे - संसदीय राष्ट्रपतीय, राजतांत्रिक और गणतांत्रिक आदि ।

आपके अंचल में क्या क्या सरकारी दफ्तर हैं और वहाँ क्या क्या काम होते हैं, लिखिए।

संसदीय सरकार :

कई देशों में राष्ट्र के शासन के लिए संसदीय सरकार हैं । यह सरकार संसद और कार्यपालिका के बीच अच्छी समझ बूझ से काम करती है । इसमें कार्यपालिका संसद का एक मुख्य अंश है । कार्यपालिका संसद के पास उत्तरदायी होती है । संसद के सदस्य जनसाधारण के द्वारा निर्वाचित होते हैं । ये विभिन्न कार्यों के लिए जनसाधारण के पास जिम्मेदार रहते हैं । भारत और इंग्लैण्ड में ऐसी सरकार हैं ।

क्या आप जानते हैं ?

- संसदीय सरकार में राष्ट्रमुख्य आलंकारिक मुख्य होते हैं।
- प्रधानमंत्री के नेतृत्व में परिचालित मंत्रीमंडल ही शासन के असली मुख्य हैं ।
- प्रत्येक मंत्री अपने विभाग के कार्यकलाप के लिए व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से संसद के प्रति उत्तरदायी रहते हैं।

आपके इलाके के सांसद क्या-क्या जनमंगल कार्य करते हैं ? अपने मित्रों के साथ चर्चा करके एक तालिका बनाइए।

राष्ट्रपतीय सरकार :

इस शासन व्यवस्था में राष्ट्र और सरकार दोनों के मुख्य राष्ट्रपति होते हैं । उनके नाम से शासनकार्य चलता है । राष्ट्रपति कार्यपालिका के मुख्य है । वे लोगों के द्वारा प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होते हैं । राष्ट्रपति विभिन्न सचिवों को नियुक्त करके उनके माध्यम से शासनकार्य परिचालन करते हैं ।

क्या आप जानते हैं ?

- राष्ट्रपतीय सरकार में राष्ट्रपति संसद के सदस्य नहीं होते।
- राष्ट्रपति के द्वारा नियुक्त सचिव अपने नियुक्ति दाता के पास उत्तरदायी हैं ।
- इस सरकार में संसद राष्ट्रपति के सचिवों को पदच्युत नहीं कर सकते ।

राष्ट्रशासन के सर्वोच्च अधिकार राष्य्रपति के पास रहते हैं । इस शासन में संसद और कार्यपालिका अलग अलग अपने अपने कार्य करते हैं । राष्ट्रपति और उनके सचिव संसद के पास उत्तरदायी नहीं होते । युक्तराष्ट्र अमेरिका, फ्रांस, श्रीलंका , ब्राजिल आदि में ऐसी सरकारें हैं ।

राष्ट्रपति सारे अधिकारों का उपयोग करने से क्या-क्या सुविधाएँ / असुविधाएँ होती होंगी ? अपने साथियों से विचार करके लिखिए।

ऐकिक सरकार :

जिस राष्ट्र में सारे अधिकार एक सरकार या केन्द्र सरकार के पास न्यस्त होते हैं, उसको ऐकिक सरकार कहते हैं। इस प्रकार के राष्ट्रशासन व्यवस्था को अधिक सफल करने के लिए राष्ट्र को कई अंचलों में विभाजित किया जाता है । इन अंचलों में आंचलिक सरकार गठन करने की व्यवस्था होती है । इसके अलावा केन्द्र सरकार आंचलिक सरकारों को उनके अंचल में शासन करने के लिए कुछ अधिकार देती हैं । वे सरकारें केन्द्र सरकार के निर्देशानुसार शासन कार्य चलाते हैं । इंग्लैण्ड, फ्रांस जैसे राष्ट्रो में ऐकिक सरकार वाला शासन है ।

क्या आप जानते हैं ?

इंग्लैंड, इटली, बेलजियम, जापान , ईरान आदि राष्ट्रों में ऐकिक सरकार वाला शासन है ।

ऐसा और किस राष्ट्रों में ऐकिक सरकारें हैं, तथ्य संग्रह करके लिखिए।

राज्यसंघीव सरकार :

राज्यसंघीय या संघीय सरकार में दो तरह की सरकारे होती हैं । राष्ट्रीय स्तर पर केन्द्र में और राज्य स्तर पर राज्य में अलग सरकारें गठित होती हैं । प्रत्येक सरकार देश की सांविधानिक व्यवस्था के अनुसार अपने अधिकार का उपयोग करते हुए शासन चलाती हैं । दोनों सरकार वैधानिक, प्रशासनिक और न्यायिक अधिकारों का उपयोग करती हैं। भारत और युक्तराष्ट्र अमेरीका में ऐसे राज्यसंघीय सरकारें हैं ।

क्या आप जानते हैं ?

- संविधान के निर्देशानुसार संघीय सरकार बनती है।
- केन्द्र और राज्यों के बीच अधिकार बँटे होते हैं, तब निर्दिष्ट नीति अपनायी जाती है ।
- सारे संघीय राष्ट्रीय अधिकार बंटन प्रणाली में बराबर नहीं होते

राजतांत्रिक सरकार :

सबसे पुराना शासन राजतंत्र है । इस शासन व्यवस्था में वंशानुक्रम से राजा की प्रथम संतानों को राजा या रानी करा कर राष्ट्र शासन करने का मौका दिया जाता है । राजा के पास सारे अधिकार केन्द्रित रहते हैं । राष्ट्र के सभी कानूनों को मानने के लिए राजा बाध्य नहीं होते । इस शासन व्यवस्था में राजा का निर्णय सभी मानने को बाध्य होते हैं ।

इसके अलावा राजा कानून बनाकर उसको कार्यान्वित करते हैं । जो कानून नहीं मानते , राजा उस पर विचार करके उनको दंड देते हैं ।

गणतंत्र शासन की तरह लोगों के प्रति राजा अपने कार्यकलापों के लिए जिम्मेदार नहीं होते। पहले फ्रांस और नेपाल में ऐसे शासन प्रचलित था ।

आप अगर राजा होंगे,लोगों के लिए क्या-क्या काम करेंगे ? एक तालिका बनाइए।

गणतांत्रिक अधिकार :

आधुनिक युग में गणतंत्र ही सर्वाधिक लोकप्रिय शासन है । इस शासन में व्यस्क नागरिक स्वतंत्र होकर चुनावे जरिये वोट देकर राजनैतिक दल के लोगों में से अपना प्रतिनिधि चुनते हैं । बहुमत वाले राजनैतिक दल के प्रतिनिधि सरकार बनाकर राज्य शासन करते हैं । ये चुने हुए प्रतिनिधि उनके विभिन्न कार्यकलाप के लिए जनसाधारण के पास उत्तरदायी रहते हैं । अब भारत, युक्तराष्ट्र अमेरिका आदि राष्ट्रों में गणतांत्रिक सरकार स्थापित होकर शासन कार्य चल रहा है ।

क्या आप जानते हैं ?

- गणतंत्र (डेमोक्रेसी) शब्द दो ग्रीक शब्द डेमोस और क्राटस से निकला है ।
- गणतंत्र गण - शासन है ।
- गणतंत्र शासन में सारी क्षमता लोगों के हाथों में होता है।
- सरकार ठीक से शासन न करे तो लोग उसे बदल सकते हैं ।
- गणतंत्र शासन में जाति, वर्ण, धर्म के बिना भेदभाव के सभी बराबर की सुविधा और अधिकार उपभोग करते हैं।
- हमारे देश में 18 साल से ूपर सब लोगों का वोट देने का अधिकार है ।

लोगों के प्रतिनिधि के रूप में अगर आप चुना जाए आप तुम क्या - क्या काम करेंगे ?

विभिन्न राष्ट्रों में भिन्न - भिन्न प्रकार की सरकारें शासन चलाते रहने पर भी हर सरकार के कुछ गुण दोष होते हैं। इसके बावजूद परंपरा और लोगों की आवश्यकता के आधार पर विभिन्न राष्ट्रों में सरकारों की शासन प्रणाली अलग अलग होती है ।

हमने सीखा -

- सरकार राष्ट्र का अपरिहार्य अंग है ।
- राष्ट्र शासन के लिए सरकारें बनायी जाती हैं ।
- सरकार के विभिन्न कार्य इस प्रकार हैं -
    - विभिन्न योजना बनाना, उन पर काम करना ।
    - जनमंगलकारी कार्यक्रमों द्वारा लोगों का उपकार करना
    - प्राकृतिक आपादाओं के समय लोगों के जानमाल की रक्षा करना ।

- विभिन्न नीति-नियम बनाकर कार्यान्वित करना ।
- विभिन्न देशों के साथ सुसंपर्क रखकर देश को प्रगति पथ पर आगे ले जाना ।
- विभिन्न सरकारी संस्थाओं , जैसे अस्पताल, स्कूल, जिलाधीश का दफ्तर, सचिवालय, उच्च न्यायालय आदि स्थापित करके उनके जरिये लोकमंगल कार्यक्रमों को चलाना ।

पृथ्वी के विभिन्न राष्ट्रों में भिन्न - भिन्न प्रकार की सरकारें होती हैं । वे हैं -

- संसदीय सरकार - भारत , इंलैण्ड
- राष्ट्रपतीय सरकार - युक्तराष्ट्र अमेरिका, फ्रांस
- ऐकिक सरकार - फ्रांस , इंलैण्ड
- राज्यसंघीव या संघीय सरकार - भारत, युक्तराष्ट्र अमेरिका
- राजतांत्रिक सरकार - इंलण्ड
- गणतांत्रिक सरकार - भारत , इंग्लैण्ड

अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50 शब्दों में दीजिए :**

(क) सरकार क्यों बनायी जाती है ?

(ख) सरकार के द्वारा किए गए जनहितकारी कार्यों के उदाहरण दीजिए।

(ग) संसदीय सरकार के लक्षणों को लिखिए ।

(घ) राष्ट्रपति सरकार और संसदीय सरकार का एक तुलनात्मक विवरण दीजिए।

(ङ) 'गणतांत्रिक सरकार ही लोगों की सरकार है ' -आप समझते हैं ?

(च) राज्यसंघीय सरकार और ऐकिक सरकारों में से तुम्हें कौन अच्छी लगती है और क्यों ?

2. **निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए।**

(क) राष्ट्र की उन्नति के लिए विभिन्न प्रकार के नीति-नियम कौन बनाता है ?

(ख) ऐकिक सरकार में किस पर सारा अधिकार न्यस्त रहता है ?

(ग) राष्ट्रपतीय सरकार में कार्यपाल का मुख्य कौन है ?

(घ) राज्यसंघीय सरकार के अंतर्गत दो प्रकार सरकारों के नाम लिखिए।

(ङ) गणतांत्रिक सरकार में शासन कैसे चलता है ?

3. रेखांकित पद / पदों को बदलकर भ्रम संशोधन कीजिए।

(क) परिवार एक सरकारी संस्था है ।

(ख) संसदीय सरकार में कार्यपालिका न्यायपालिका का अंश है ।

(ग) राष्ट्रपतीय शासन में सचिवों को विधायक कहते हैं ।

(घ) इंलैण्ड में राष्ट्रपतीय शासन है ।

(ङ) ऐकिक सरकार में सारा अधिकार आंचलिक सरकारों पर न्यस्त रहता है ।

(च) राज्यसंघीय सरकार में तीन प्रकार की सरकार होती हैं ।

(छ) भारत में वोट डालने के लिए बीस साल होना चाहिए ।

4. प्रत्येक प्रश्न के दिए गए चार उत्तरों में से सही उत्तर चुन कर लिखिए।

(क) राष्ट्र शासन के लिए किसका गठन किया जाता है ?

परिवार	समाज
संघ	सरकार

(ख) आधुनिक युग में कौन - सा शासन अधिक लोकप्रिय है ?

गणतंत्र	ऐकिक
राजतंत्र	राष्ट्रपतीय

(ग) राष्ट्रपतीय शासन में राष्ट्र का मुख्य कौन होता है ?

संसद	राष्ट्रपति
कार्यपालिका	सचिव

(घ) सबसे प्राचीन शासन्स्यवस्था कौन - सी है ?

गणतंत्र	राजतंत्र
साधारणतंत्र	लोकतंत्र

5. **सही कथन के सामने सही (✓) निशान और गलत कथन के सामने गलत (×) निशान लगाइए।**

(क) सरकार न हो तो कानूनी अनुशासन बाधित होता है ।

(ख) संसदीय सरकार में कार्यपालिका राष्ट्रपति के प्रति उत्तरदायी है ।

(ग) श्रीलंका में ऐकिक सरकार है ।

(घ) राष्ट्रपतीय सरकार में राष्ट्रपति परोक्ष रूप में निर्वाचित होते हैं ।

(ङ) गणतंत्र शासन लोगों का शासन है ।

आपके लिए काम :

- आपके ग्राम पंचायत म्युनसिपालिटी में सरकार के द्वारा किन - किन कार्यों में धन खर्च किया जाता है, उसका एक विवरण तैयार कीजिए।
- आपके अंचल में स्थित किन्हीं दो सरकारी संस्थाओं में जाकर उनके दैनिक कार्यों के बारे में लिखिए।

स्थानीय स्वायत्त शासन

प्रकाश कुछ कागज हाथ में लेकर सुनीता के घर गया । तब सुनीता घर पर थी । उसने प्रकाश के हाथ में कागज का बड़ा सा गुच्छा देखकर पूछा, "अरे प्रकाश ! क्या इतने कागज पकड़ रखा है ?" प्रकाश ने बताया," यह हमारे गाँव की वोटर तालिका है । जानती हो, अगले सोमवार को चुनाव है । सो, हमारे गाँव में वोटदान होगा । उनमें सरपंच, समिति के सदस्य, वार्ड मेम्बर और जिला परिषद के सदस्य चुने जायेंगे। मेरे हाथ में जो तालिका है, उसी के अनुसार तेरे माता, पिता, दादा, दादी, दीदी सब लोग वोट डाल सकेंगे। सुनो, तुम्हारी जिम्मेदारी यह है कि तू उन सबको लेकर वोट केन्द्र में जाएगी ।" सुनीता ने हामी भरी, फिर पूछा, "अच्छा प्रकाश , यह तो बता कि इतने लोगों को एक ही बार में कैसेवोट देंगे ? फिर वे लोग वोट पाकर करेंगे क्या ?"

स्वायत्त शासन क्या है ?

हमारे देश के सर्वोच्च शासन को केन्द्र शासन कहते हैं । इस शासन का मुख्य कार्यालय दिल्ली में है । हमारा राज्य है ओड़िशा । इसके शासन को राज्यशासन कहते हैं । इस शासन का मुख्य कार्यालय भुवनेश्वर में है। हमारे देश में लगभग छह लाख गाँव और अनेक शहर हैं । केन्द्र या राज्य सरकार बहुत दूर रहकर इन पर शासन चलाना मुमकिन नहीं होता । इसलिए हमारे देश के गाँवों और शहरों में बसनेवाले लोग अपने कल्याण के लिए खुद पर जिम्मेदारी लेते हैं । तभी अंचलों में बहुविध विकास होगा । गाँव या शहर के लोग व्यक्तिगत स्तर पर यह जिम्मेदारी ले नहीं सकते । इसलिए वे अपने प्रतिनिधि चुन कर एक जनगोष्ठी बनाते हैं । यह जनगोष्ठी अपने ऊपर शासन करना स्वायत्त शासन है । इस शासन के द्वारा देश की स्वतंत्रता की उपलब्ध करते हैं और गणतंत्र शासन की विशेषता को समझते हैं ।

लोग खुद अपने ऊपर शासन करते हैं, इसलिए उनकी क्या - क्या सुविधाएँ होती होंगी, अपने साथियों से चर्चा करके लिखिए।

हमारे देश में प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति के लिए ग्रामीण स्तर से योजनाओं को स्वायत्त शासन व्यवस्था में कार्यान्वित किया जाता है । इसके जरिये लोग सरकार को सलाह देते हैं । सरकार उनके आधार पर विभिन्न योजना तैयार करके स्वायत्त शासन के द्वारा कायन्वित कराती है । जिससे लोगों की बहुत उन्नति होती है ।

सरकार की विभिन्न योजनाएँ

- 6 से 14 साल उम्र के बच्चों को पढ़ने के घर बनाना।
- सभी को पेयजल मुहैया कराना।
- रास्ता निर्माण और मरम्मत ।
- स्वय सहायक गोष्ठियों को विभिन्न कार्यक्रम के लिए कर्जा देना, अनुदान देना ।

आपके अंचल में कौन - कौन सी सरकारी योजना कार्यन्वित होकर लोगों की उन्नति होती है, उसकी एक तालिका बनाइए।

पंचायती राज :

1958 ईस्वी को बलबन्तराय मेहता कमेटी एक त्रिस्तरीय स्वायत्त शासन व्यवस्था के प्रचलन करने के लिए सिफारिश की थी । इस सिफारिश के मुताबिक गणतंत्र का विकेन्द्रीकरण जरिये से ग्राम स्तर में ग्राम पंचायत, ब्लॉक स्तर पर पंचायत समिति और जिले के स्तर पर जिला परिषद ऐसी तीन संस्थाओं का गठन किया गया । प्रत्येक को स्वतंत्र रूप से अपने अधिकारों का प्रयोग करने दिया जाता है। हमारे दोश की इस व्यवस्था को पंचायतीराज कहा जाता है ।

हमारे देश में स्थानीय स्वायत्त शासन व्यवस्था को दो भागों में बाँटा गया है । वे हैं - ग्रामांचल स्वायत्त शासन और शहरी स्वायत्त शासन । ग्रामीण स्वायत्त शासन के तहत ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद आते हैं । शहरांचल स्वायत्त शासन व्यवस्था में निगम, नगरपालिका (म्युनसिपालिटि) अधिसूचित परिषद (एन्.ए.सी.) हैं ।

ग्रामपंचायत :

प्राचीन काल से ही हमारे देश में ग्रामों में पंचायत व्यवस्था प्रचलित थी । गाँव के मुखिया पाँच जनों को लेकर एक सभा गठित होती थी ।

उस समय में गाँव के झगड़ों झंझटों का समाधान होता था। बाद में इस सभा को पंचायत कहा गया । यह पंचायत ग्राम का गठनमूलक कार्यों की देखरेख करने लगे । अंग्रेज जब इस देश में शासन करने लगे, तब ये पंचायत बेकार हो गए। लेकिन हमारे देश के स्वतंत्र होने पर पंचायत शासन व्यवस्था का फिर से प्रचलन हुआ और उनको विभिन्न कार्य करने के लिए अधिकार दिए गए ।

क्या आप जानते हैं ?

- ग्रामांचल की उन्नति के लिए ग्रामसभा, पल्ली सभाओं का गठन किया गया है ।
- पंचायत कानून के तहत ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद का गठन हुआ है ।
- हमारे राज्य में अब 6,234 ग्राम पंचायत हैं ।

आपके ग्राम पंचायत में कितने ग्राम हैं, उनके नाम लिखिए।

गठन : सामान्य तया दो से दस हजार लोकसंख्या वाले ग्राम या एकाधिक ग्राम को लेकर एक ग्राम पंचायत का गठन किया जाता है । हरेक वार्ड से एक वयस्क वार्डर बहुमत से वोटरों के द्वारा चुना जाता है । उनको वार्ड मेम्बर या पंच कहा जाता है । हमारे राज्य में ग्राम पंचायत कानून के अनुसार अधिकतम 25 और न्यूनतम 11 वार्ड मेंबर हो सकते हैं । इसके अलावा ग्राम पंचायत के हरिजन, आदिवासी और महिलाओं के लिए वार्ड मेंबर बनाने को स्थान संरक्षण किया गया है । चुने गए वार्ड मेंबर ग्राम पंचायत के सदस्य और वार्ड के प्रतिनिधि होते हैं ।

आपके ग्राम पंचायत में कौन-कौन वार्ड़ है दुसरो से समझा कर तालिका कीजिए।

हर ग्राम पंचायत का काम करने के लिए एक सरपंच होते हैं । वे उस पंचायत के बाल्कि मतदाताओं के द्वारा बहुमत वोट से चुने जाते हैं । प्रत्येक वार्ड से चुनाव में जीते वार्ड मेंबरों को लेकर पंचायत बैठता है । पंचायत के निर्वाचित वार्ड मेंबरों में से एक को नायब सरपंच के रूप में निर्वाचित किया जाता है । सरपंच पंचायत का कार्य करते हैं । उनकी गैर हाजिरी में नायब सरपंच वह काम करते हैं । एक पंचायत की कार्यविधि 5 साल होती है । पाँच वर्ष पूरे होने पर फिर से चुनाव किया जाता है ।

आपके पंचायत में चुने गए सरपंच और वार्ड मेंबरों के नाम जानिए और लिखिए।

इसके अलावा ग्राम पंचायत के रोजमर्रा का काम करने के लिए एक संपादक होते हैं । वह पंचायत के कागजी सब काम करते हैं, आय व्यय का हिसाब रखते हैं । कुछ पंचायत अपने चपरासी, पहरेदार, माली, करवसूल करने वालों को भी नियुक्त करते हैं ।

ग्राम पंचायत के कार्य

1. बाध्यतामूलक 2. इच्छाधीन

बाध्यतामूलक कार्य

- प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था को कार्यन्वित करना
- लोगों की चिकित्सा व्यवस्था करना
- नलकुआँ और कुआँ खुदवाना
- जन्म मृत्यु तालिका करना
- रास्ता निर्माण और रखरखाव
- पेयजल मुहैया करना
- तालाबों के खुदाई और उनकी देखभाल

स्वेच्छा से किए जाने वाले कार्य

- समवाय समिति गठन करना
- मातृमंगल केन्द्र स्थापित करना
- मछली पालन, मुर्गा पालन और प्रोढ़ शिक्षा केन्द्र स्थापित करना
- पाठागार / पुस्तकालय बनाना
- मुफ्त इलाज की व्यवस्था करना

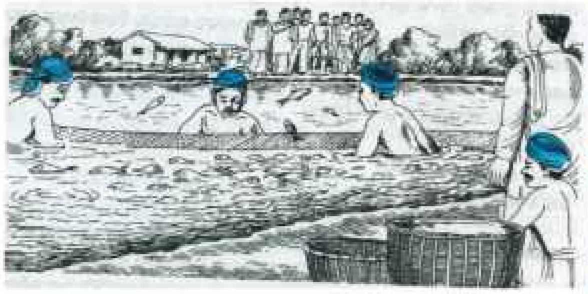

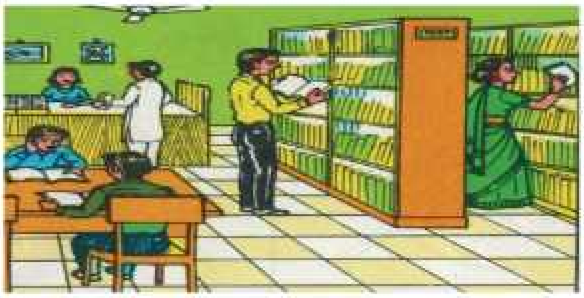

आपके ग्राम पंचायत द्वारा क्या - क्या कार्य हो रहे हैं , दूसरों के साथ सलाह करके लिखिए।

ग्रामसभा :

ग्राम पंचायत में निवास करनेवाले सभी वयस्क वोटर, ग्राम पंचायत के सभी वार्ड सदस्य और सरपंच को लेकर ग्राम सभा बनती है । इस सभा की अध्यक्षता सरपंच करते हैं । इस सभा में पंचायत के विभिन्न कार्य; जैसे पंचायत की अनाबादी जमीन की देखरेख, रास्ता निर्माण, गरीबी सीमा के नीचे वाले लोगों की पहचान, विभिन्न प्रकार के भत्ता पाने वालों की योग्यता पर विचार कर तालिका बनाना आदि । इस तरह के दूसरे कार्यों की योजना बना कर ग्राम सभ्या में उसे प्रस्तुत किया जाता है । पारित, किया जाता है । इन प्रस्तावों को कार्यन्वित करने ऊपरवाली संस्था के अनुमोदन के लिए सिफारिश की जाती है । यह सभा साल में दो बार जरूर बैठती है ।

आपके ग्राम पंचायत की ग्राम सभा में कौन-कौन से कल्याणकारी कार्य करने के प्रस्ताव दिए गए है, दूसरों से पूछ कर तालिका बनाइए।

ग्रामपंचायत की आय :

ग्रामपंचायत के विभिन्न कार्यों के लिए धनराशि आवश्यक होती है । यह धन ग्राम पंचायत दो सूत्रों से पाती है । एक, उसकी अपनी आय जैसे - पंचायत के हाट, जलाशयों की नीलामी, छकड़ों, रिक्सों आदि के लाइसेंस से वसूली । दूसरा, सरकारी अनुदान । इस अनुदान के माध्यम से ग्राम पंचायत के कल्याणकारी कार्य किए जाते हैं ।

ग्रामसभा :
प्रत्येक वार्ड के कल्याणकारी कार्य करने पल्ली सभा का गठन किया जाता है । इस सभा में वार्ड की जरूरत वाले विभिन्न विकासमूलक कार्यों की तालिका बनाकर इसके लिए जरूरी बजट और कौन इस कार्यों की निगरानी करेगा ये सारे प्रस्ताव पंचायत को पास सिफारिश की जाती है ।

क्या आप जानते हैं ?
सरपंच अगर अपने काम में ढ़िलाई करते हैं तो सरकार के आदेश के बल पर ग्राम पंचायत सदस्यों के द्वारा अनास्था प्रस्ताव के जरिये उनके पद से हटाया जा सकता है ।

आपके गाँव में किन लोगों को इन्दिरा आवास मिला है, उसकी एक तालिका बनाइए।

पंचायत समिति :

पंचायत समितिर सभ्य के रूप में और कौन ले जाता है दूसरों के साथ आलोचना कर के लिखिए।

पंचायत समिति पंचायती राज व्यवस्था का द्वितीय स्तर है । हर ब्लॉक में एक पंचायत समिति होती है । ब्लॉक के अधीन सभी पंचायतों को लेकर यह गठित होता है । वयस्क वोट प्रथा के माध्यम से प्रत्येक पंचायत समिति के लिए एक - एक सदस्य / सदस्या निर्वाचित होते हैं । इनको समिति सदस्य कहा जाता है । इन सभ्यों की बीच अनुसूचित जाति, जनजाति और महिला सदस्य / सदस्याएँ आनुपाप्तिक रूप से होते हैं । ये सदस्य अपने में से एक को पंचायत समिति के अध्यक्ष (चेयारमैन) और एक दूसरे सदस्य को उपाध्यक्ष (वाइस चेयारमैन) के रूप में चुनते हैं । अध्यक्ष पंचायत समिति की परिचालन करते हैं। उनकी अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष (वाइस चेयारमैन) पंचायत समिति के कार्य संपादन करते हैं । ओड़िशा में अब 314 पंचायत समितियाँ हैं ।

इनके अलावा पंचायत समिति के अधीन में हर पंचायत के सरपंच, नगरपालिका / अधिसूचित और परिषद के अध्यक्ष, विधानसभा, लोकसभा और राज्यसभा के सदस्यों को भी सदस्य के रूप में स्वीकार किया जाता है । इसके अलावा सरकारी सदस्य के रूप में मंडल कल्याण अधिकारी (बीडिओ), शिक्षा राजस्व, पशुपालन, स्वास्थ्य आदि विभाग के अधिकारी लोग सभ्य रूप में शामिल किए जाते हैं । पंचायत समिति की बैठक, हर दो महीनों में एक बार बैठती है । पंचायत समिति का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है ।

पंचायत समिति के कार्य :

- सरकार के विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों को पंचायत के लोगों के सहयोग से कार्यान्वित किया जाता है।
- पंचायत समिति की बैठक में पारित प्रस्तावों को कार्यन्वित करने की व्यवस्था करना
- ग्राम पंचायत के वार्षिक आय व्यय की अटकल (वजट) तैयार करना
- ब्लॉक स्तर की सारी योजनाओं का प्रणयन करना कल्याणकारी कार्यों पर ध्यान रखना
- पंचायतों के कार्यकलाप का नियंत्रण करना

सरकार विभिन्न कल्याणमूलक कार्य करवाने के लिए हरेक ब्लॉक में एक मंडल विकास अधिकारी (वीडीओ) की नियुक्ति करती है । उनके अधीन सहकारी, मछली पालन, शिक्षा , कृषि, निर्माण और सामाजिक संगठन आदि विय के लिए एक एक विशेषज्ञ और दूसरे कर्मचारी नियुक्त होते हैं । वे अपने अपने विषय में लोगों को विशेष सलाह देते हैं । इसके अलावा विभिन्न उन्नतिमूलक कार्यक्रमों में लोगों को शामिल करने के लिए ग्राम पंचायतों में एक पंचायत कार्य निर्वाही अधिकारी नियुक्त होते हैं । वे लोगों को कृषि और पशुपालन आदि में परामर्श देते हैं और ब्लॉक और जनसाधारण के बीच संपर्क साधे रहते हैं ।

ग्राम सेवक पंचायत स्तर पर और क्या - क्या काम करते हैं, दूसरों से चर्चा करके लिखिए।

पंचायत समिति के विकास कार्यक्रम :

ग्रामीण लोगों की आर्थिक उन्नति के लिए विभिन्न समय में विभिन्न कार्यक्रम ब्लॉक के जरिये कार्यान्वित होते हैं। वे हैं -

- **ग्रामांचल के गरीब लोगों के आर्थिक कल्याण कार्यक्रम** : जिन लोगों की वार्षिक आय दो हजार से कम हो उन लोगों को एक पेशा / धंधा करने के लिए कर्जा मुहैया कराना । यह कर्ज सौ से सत्तर भाग माफ कर दिया जाता है।
- **समन्वित ग्राम कल्याण कार्यक्रम** : जिन लोगों की सालाना आय चार हजार आठ सौ से कम है उनको कोई धंधा करने के लिए कर्ज मुहैया किया जाता है । यह कर्ज सौ से तैंतीस भाग माफ किया जाता है ।

> - पंचायत समिति से दियाजाएगा ऋण अर्थका कूछ अंश बैंक को लिया जाता है।
> - ऋण का जो अंश छोड जाता है उन सरकार बहन करते हैं।

- **राष्ट्रीय ग्राम्य नियुक्ति कार्यक्रम और ग्राम्य श्रमिक नियुक्ति** : इस कार्यक्रम के जरिये श्रमिकों के लिए दैनिक कर्म नियोजन की व्यवस्था की जाती है ।
- **प्रधानमंत्री वित्त सहायता कार्यक्रम** : जिन लोगों की सलाना आय रु. 4800 से 6000 के बीच है उनको इस कार्यक्रम के तहत कृषि ऋण मुहैया कराया जाता है ।

आपके अंचल में कौन कौन सी सरकारी योजना कार्यान्वित होने के बाद लोगों की उन्नति हो रही है । उसके बारे में दूसरों के साथ चर्चा करके लिखिए।

पंचायत समिति की आय :

पंचायत समिति की अपनी आय नहीं होती । विभिन्न उन्नतिमूलक कार्यक्रमों के लिए सरकार से आर्थिक अनुदान मिलते हैं।

जिला परिषद :

पंचायती राज व्यवस्था का सर्वोच्च स्तर यह जिला परिषद है । राज्य के प्रत्येक जिले में जिला परिषद गठित करने की व्यवस्था है । अब ओड़िशा में 30 जिला परिषद हैं । जिला परिषद के माध्यम से विभिन्न विकासमूलक कार्यों की योजना बनाकर कार्यन्वित किया जाता है।

जिला परिषद गठन :

प्रत्येक जिले को कई जिला परिषद जोन में बाँटा गया है । प्रत्येक जोन से वयस्क वोट प्रणाली से एक एक सदस्य चुने जाते हैं । उनको जिला परिषद के सदस्य कहा जाता है । ये जिला परिषद के सदस्य अपनों में से एक को अध्यक्ष तथा दूसरे को उपाध्यक्ष चुनते हैं । पंचायत समिति की तरह जिला परिषद को भी संरक्षण के आधार पर आदिवासी अनुसूचित जाति और महिला सदस्य निर्वाचित होते हैं । इन सभी सदस्यों को लेकर जिला परिषद का गठन होता है । जिला परिषद का कार्यकाल सर्वाधिक 5 साल है ।

जिला परिषद के दूसरे सभ्य हैं-

- जिले के हर पंचायात समिति का अध्यक्ष।
- विधान सभ्य, लोक सभा और राज्यसभा सदस्यो।
- जिले के स्वायत्त शासन संस्था का अध्यक्ष।
- समवाय बैंक के सभापति
- जिले के विभाग का उच्चपदस्थ कर्मचारी और अन्य सदस्य।

जिला परिषद के कार्य :

- जिले के स्तर पर योजना बनाना
- पंचायत समिति और ग्राम पंचायतों को अनुदान देना
- जिले के शिक्षा संस्थानों, सर्वसाधारण के पाठागारों और जनमंगल संस्थाओं को वित्तीय मदद करना ।
- कृषि , उद्योग, सामाजिक वनीकरण, पशुपालन, समवाय, ग्राम्य विद्युतकरण, क्षुद्र जलसेचन योजना, प्राथमिक,माध्यमिक और प्रौढ़ शिक्षा की उन्नति और विकास ।

जिला परिषद का कार्यालय

आपके पंचायत में जिला परिषद की ओर से क्या - क्या जन कल्याणकारी योजनाएँ कार्यन्वित होती हैं, साथियों से चर्चा करके लिखिए।

जिला परिषद की आय :

जिला परिषद सरकारी अनुदान पर निर्भर करती है । कई जिला परिषद कई तरह के कर वसूल करते हैं । कुछ अन्य जिला परिषद कुछ रहने के घर और दुकान के घरों से किराये वसूल करते हैं ।

शहरों में स्वायत्त शासन व्यवस्था :

भारत एक ऐसा देश है जहाँ गाँवों की संख्या अधिक है, फिर भी आजकल इसके विभिन्न इलाकों में छोटे - बड़े बहुत से शहर बस गए हैं । हमारे ओड़िशा में ही भुवनेश्वर, ब्रह्मपुर, संबलपुर और राउरकेला जैसे बड़े शहर हैं । इन शहरों में बहुत लोग रहते हैं । इसलिए स्वायत्त शासन व्यवस्था सिर्फ ग्रामांचल में ही नहीं शहरांचल में भी प्रचलित हो गई है । शहरांचल के यह स्वायत्त शासन संस्था है - महानगर निगम, नगर निगम, अधिसूची परिषद ।

महानगर निगम :

महानगर निगम राज्यों के द्वारा बनाए गए कानून से स्थापित होते हैं । दिल्ली, कोलकाता जैसे ओड़िशा के भुवनेश्वर, ब्रह्मपुर , संबलपुर और राउरकेला में महानगर निगम गठित हुए हैं ।

गठन :

- महानगर निगम दस लाख से अधिक लोग रहने वाले शहर में महानगर निगम गठित होता है ।
- नगरपालिका - 25 हजार से ज्यादा लोग रहनेवाले शहरों में नगरपालिका (म्युनिसिपालिटि) गठित होता है ।
- अधिसूचित अंचल परिषद - दस हजार से ज्यादा लोग रहनेवाले छोटे शहरों में अधिसूचित पौर परिषद (एन्.ए.सी.)

नगर को विभिन्न वार्ड में विभाजित करके प्रत्येक वार्ड से वयस्क चुनाव के माध्यम से निगम परिषद को वोट के जरिए सदस्य चुने जाते हैं । इनको कर्पोरेटरों में से कई सदस्य पद आदिवासी, महिला , अनुसूचित जाति के लोगों के लिए संरक्षित रखे जाते हैं । निगम के प्रतिनिधि अपने में से किसी एक को मेयर और एक दूसरे को डेपुटी मेयर चुनते हैं । मेयर निगम के मुख्य होते हैं और निगम परिषद में अध्यक्षता करते हैं । वे निगम के कमीशनर और सरकार के बीच संबंध रखते हैं । उनकी अनुपस्थिति में डेपुटी मेयर निगम के काम संभालते हैं ।

महानगर निगम के कार्य परिचालन के लिए एक कार्यपालक या कमीशनर होते हैं । वे राज्य सरकार के द्वारा नियुक्त होते हैं । वे निगम के सभी बैठकों में योगदान करते हैं और इसकी कार्य विधि में हिस्सा लेते हैं । वे विभिन्न वजट रिपोर्ट तैयार करके निगम परिषद में दाखिल करते हैं ।

महानगर निगम के कॉर्पोरेटर जनप्रतिनिधि होने के कारण लोगों की कौन सी सुविधा होती है ? मित्रों से चर्चा करके लिखिए।

महानगर निगम के कार्य :

निगम दो प्रकार के कार्य करता है । एक है, बाध्यतामूलक कार्य और दूसरा स्वेच्छा से किए कार्य ।

बाध्यतामूलक कार्य :

- पानी की टंकियों का निर्माण और उनका रखरखाव ।
- बिजली मुहैया कराना, बिजली के लिए तार आदि लगाना ।
- जन स्वास्थ्य के विकास, कूड़े - कचरे की सफाई, नाली मोरियों की सफाई और निर्माण, रखरखाव , संक्रामक रोग नियंत्रण
- रास्ता, पुल आदि का निर्माण, मरम्मत, देखभाल
- यानवाहन चालन और नियंत्रण
- अस्पताल, मातृमंगल, शिशुमंगल केन्द्रों का स्थापन और देखरेख , टीकादान

नगर निगम और क्या कार्य करता है, दूसरों से पता करो और लिखिए।

स्वेच्छा से किए जानेवाले कार्य :

- साधारण पुस्तकालय, वाचानालय, चिड़ियाखाना, पार्क निर्माण।
- विश्राम गृह , अनाथाश्रम का निर्माण और परिचालन।
- पथ पार्श्व में वृक्षारोपण, सामाजिक वनीकरण।
- शहर के सभी मकानों का सर्वे आदि।

महानगर निगम की आय :

महानगर निगम की आय के स्रोत हैं -

- टैक्स से - वाहनों, विभिन्न प्राणियों के उपर टैक्स वसूली से संपत्ति कर, प्रमोद कर, शिक्षा कर, वृत्ति कर आदि ।
- टैक्स से अन्य सूल - मकानों पर कर, लाइसेंस फीस, योगायोग से आय
- लाभजनक व्यापार - गोपालन, मुर्गी पालन, सिनेमा, रंगमंच आदि से वाणिज्य कर की वसूली
- सरकारी अनुदान - सरकार विभिन्न समय में अनुदान देती है ।

महानगर निगम इस के अलावा और किन-किन सूत्रों से आय करता है, चर्चा करके लिखिए।

निगम पर सरकारी नियंत्रण

सरकार निगम की सुपरिचालन के लिए इस पर नियंत्रण जारी करते हैं । कोई नगर निगम संतोषजनक काम न करने से, काम में ढ़िलाई करने से, अधिकार की सीमा पार कर जाने से सरकार निगम को तोड़ कर शासन की जिम्मेदारी अपने हाथ में लेते हैं ।

नगरपालिका

25,000 से अधिक लोग बसने वाले शहरों में एक एक नगरपालिका होती है । एक नगरपालिका कई वार्ड में विभाजित है । एक नगरपालिका में कितने वार्ड होंगे, यह उसकी जनसंख्या पर और सरकार के ऊपर निर्भर करता है । सामान्यत: 11 से 30 संख्या में वार्ड होते हैं ।

गठन :

प्रत्येक वार्ड में एक एक वार्ड सदस्य या कौंसिलर चुने जाने की व्यवस्था है । इन कौंसिलरों में से एक तिहाई संख्या महिलाओं के लिए संरक्षित है । इसके अलावा अनुसूचित जाति, जनजाति को भी संख्या के आधार पर कौंसिलरों की सदस्य संख्या संरक्षित रहती है । हर वार्ड के कौंसिलर को उस वार्ड में रहनेवाले वयस्क लोग वोट देकर चुनते हैं। ये निर्वाचित कौंसिलर ही परिषद का गठन करते हैं । कौंसिलर अपने में से एक को चेयरमैन और एक ओर को वाइस चेयरमैन के रूप में चुनते हैं ।

हर नगरपालिका की बैठक चेयरमैन बुलाते है और उसमें अध्यक्षता करते हैं । चेयारमैन की अनुपस्थिति में वाइस चेयरमैन यह काम करते हैं । नगर निगम की विभिन्न निर्णय के अनुसार शहरांचल में विभिन्न काम होते हैं । नगरपालिका के दैनिक कार्य करने के लिए एक कार्यकारी अधिकारी होते हैं । उनका मुख्य कार्य है पालिका के निर्णय को कार्यन्वित करना (इसके अलावा वे सरकार और नगर पालिका के बीच संपर्क बनाए रखते हैं) ।

नगरपालिका की परिचालन के लिए एक स्वास्थ्य ऑफिसर, एक अभियंता एक शिक्षाधिकारी और इस तरह के अन्य आवश्यक कर्मचारी नियुक्त रहते हैं । इसके अलावा शिक्षा, स्वास्थ्य निर्माण आदि के लिए स्वतंत्र सभाएँ गठित होती हैं जिसमें कौंसिलर तथा दूसरे लोग रहते हैं । नगरपालिका , स्वतंत्र सभा और कर्मचारियों को लेकर नगरपालिका गठित होती है ।

नगरपालिका में और कौन कौन काम करते हैं ? पूछकर लिखिए।

नगरपालिका के कार्य :

नगरपालिका के कार्य दो प्रकार के हैं -

1. बाध्यतामूलक और 2. इच्छाधीन

बाध्यतामूलक कार्य

- आवाजाही , रास्ता निर्माण और रखरखाव
- पेयजल आपूर्ति, जल की निकासी, आलोक व्यवस्था
- संक्रामक की रोकथाम और निराकरण
- कूड़े कचरों का प्रबंधन, कंपोस्ट गड्ढ़ों की खुदाई
- प्राथमिक शिक्षा प्रचार, स्कूल घर निर्माण
- जन्म मृत्यु पंजीकरण

इच्छाधीन कार्य

- गृह निर्माण , टाऊन बस चलाना
- आमोद प्रमोद व्यवस्था, पार्क निर्माण आदि
- रंगमंच , क्रीड़ा व्यवस्था, सिनेमा घर बनाना
- जनगणना , हाट बाजार, वाचनालय स्थापन

नगरपालिका और क्या-क्या कार्य करती है? अपने साथियों के साथ बात करके लिखिए।

नगरपालिका की आय :

नगरपालिका अपना खर्च चलाने के लिए वित्त की (धन) जरूरत होती है । यह धन दो तरह से मिलता है ।

अपनी आय :

- नगरपालिका के अंतर्गत जमीन, घर, मकान आदि पर कर वसूल कर धन प्राप्त करती है ।
- पण्य कर, शौचालय, आलोक, जल कर, व्यापारियों पर टैक्स और प्रमोद कर आदि की वसूली
- यानवाहन, जैसे - साइकिल, रिक्सा, छकड़ा, ट्राली आदि पर टैक्स

सरकारी अनुदान :

नगरपालिका की उन्नतिमूलक कार्यों के लिए सरकार बीच बीच में अनुदान देती है ।

नगरपालिका और किन सूत्रों से आय करती है? पूछ कर लिखिए।

अधिसूचित नगर परिषद (एन्.ए.सी.)

जिस छोटे शहर की लोक संख्या 10,000 से ज्यादा है, वहाँ अधिसूचित नगर परिषद (Notified Area council) गठित होती है । इस परिषद का गठन, कार्य, आय और अन्य सारी व्यवस्थाएँ नगरपालिका के गठन, कार्य, आय जैसे ही होता है । ओड़िशा में 66 नगर परिषद हैं ।

सहरांचल में स्वायत्त शासन व्यवस्था के प्रवर्तन से लोग अपने अंचल की विभिन्न समस्याओं का समाधान खुद कर पाते हैं । इसके अलावा विभिन्न सरकारी योजनाएँ स्थानीय लोगों के सहयोग से सफलतापूर्वक कार्यन्वित होती हैं और देश प्रगतिकर रहा है ।

हमने सीखा -

- जन साधारण आप अपने ऊपर शासन करते हैं तो उसे स्वायत्त शासन कहते हैं ।
- स्वायत्त शासन के जरिये विभिन्न योजना कराके सरकार को प्रस्ताव भेजा जाता है ।
- स्वायत्त शासन संस्था के द्वारा सरकार विभिन्न जनमंगलकारी योजनाओं को कार्यन्वित करके लोगों का काफी विकास करती है ।
- पंचायती शासन व्यवस्था द्वारा राज्य में त्रिस्तरीय शासन चल रहा है ।
- स्वायत्त शासन व्यवस्था को दो भागों में बाँटा गया है । वे हैं - ग्रामांचल स्वायत्त शासन और शहरांचल स्वायत्त शासन ।
- ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद ये सब ग्रामांचल स्वायत्त शासन व्यवस्था के अंतर्गत है । ये सब ग्रामांचल के जन साधारण का बहुबिध विकास करती हैं ।
- महानगर निगम, नगर पालिका और अधिसूचित नगर परिषद शहरांचल स्वायत्त शासन व्यवस्था के अंतर्गत आते हैं। ये सब शहरांचल की जनता का बहुबिध विकास करते हैं ।
- ग्राम पंचायत के मुखिया सरपंच होते हैं, और वह लोगों के द्वारा प्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं । ग्राम पंचायत दो तरह के काम करते है । एक बाध्यतामूलक कार्यक्रम और दूसरा ईच्छाधीन कार्य ।
- पंचायत समिति के मुख्य अध्यक्ष (चेयारमैन) होते हैं । वे लोगों के द्वारा परोक्ष रूप से चुने जाते हैं ।
- जिले के स्तर पर जिला परिषद का गठन किया जाता है और उसके मुख्य को समर्पित (अध्यक्ष) कहते हैं । वे लोगों के द्वारा परोक्ष रीति से चुने जाते हैं।
- महानगर निगम के मुख्य को मेयर कहा जाता है । नगरपालिका और नगर परिषद के मुख्य चेयारमैन होते हैं । ये जनता के द्वारा परोक्ष रीति से निर्वाचित होते हैं ।
- महानगर निगम, नगर पालिका और नगर परिषद शहरांचल के जन साधारण की बहुत विकास कार्य करते हैं ।

अभ्यास

1. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर लिखिए।

(क) स्वायत्त शासन कहने से क्या समझते हो ? यह क्यों किया गया है ?

(ख) मेहेता कमेटी ने सरकार को क्या सिफारिश की थी ?

(ग) पंचायती राज व्यवस्था किसे कहते हैं ?

(घ) ग्राम पंचायत का गठन कैसे होता है ?

(ङ) ग्राम सभा कैसे गठित होती है ?

(च) पंचायत समिति चेयारमैन कैसे चुने जाते हैं ?

(छ) जिला परिषद कैसे गठित होती है ?

(ज) जिला परिषद कौन कौन से कार्य करती है ?

(झ) शहरांचल स्वायत्त शासन में क्या - क्या शामिल हैं ?

(ञ) महानगर निगम का गठन कैसे किया जाता है ?

(ट) महानगर निगम के बाध्यतामूलक कार्य क्या क्या हैं ?

(ठ) नगरपालिका किन सूत्रों से आय करती हैं ?

2. कोष्ठक में से सही शब्द / संख्या चुन कर खाली स्थानों को भरो ।

(क) हमारे देश के शासन का मुख्य कार्यालय .... में हैं ।
(मुंबई, चेन्नई, दिल्ली, कोलकाता)

(ख) बलवंतराय मेहता कमेटी .... ईस्वी में त्रिस्तरीय स्वायत्त शासन व्यवस्था को चालू करने की सिफारिश की थी ।
(1957, 1958, 1959, 1960)

(ग) ग्राम पंचायत का कार्यकाल .... साल होता है ।
(3, 4, 5, 6)

(घ) ग्रामसभा .... की अध्यक्षता में बैठती है ।
(वार्ड मेंबर, नायब सरपंच, सरपंच, समिति सदस्य)

(ङ) ब्लॉक का दैनिक कार्य चलाने के लिए सरकार .... को नियुक्त करती हैं ।
(ग्राम सेवक, बीडिओ, कृषि विकास अधिकारी, निर्माण यंत्री)

(च) जिला परिषद का कार्यकाल .... साल है ।
(4, 5, 6, 7)

(छ) दस लाख से ज्यादा आबादी वाले शहर में .... स्थापन किया ।
(जिला परिषद, ग्राम पंचायत, महानगर निगम, नगर परिषद)

(ज) नगरपालिका के सदस्यों को .... कहा जाता है ।
(समिति सदस्य , कौंसिलर, वार्ड मेंबर, सरपंच)

3. नीचे दिए गए उत्तरों में से सही के आगे (✓) और गलत के आगे गलत (✗) निशान लगाओ ।

(क) ग्राम पंचायत गठन के लिए कितनी जनसंख्या जरूरी है ?

2,000 से 10, 000 | 3000 से 6,000
4,000 से 5,000 | 5,000 से 6,000

(ख) शहरांचल स्वायत्त शासन व्यवस्था कौन है ?

ग्राम पंचायत | पंचायत समिति
जिला परिषद | महानगर निगम

(ग) ग्रामपंचायत का एक बाध्यतामूलक कार्य है -

कुआँ खोदना | मछली पालन
सहकार संस्था बनाना | पाठागार निर्माण

(घ) पंचायत समिति बैठक होती है

दो महीनों में एक बार | चार महीनों में एक बार
तीन महीनों में एक बार | पाँच महीनों में एक बार

(ङ) जिला परिषद का कार्यकाल है -

4 वर्ष | 6 वर्ष
5 वर्ष | 7 वर्ष

(च) एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहर में यह गठित होता है -

जिला परिषद | महानगर परिषद
नगर पालिका | अधिसूचित नगर परिषद

4. गलती हो तो ठीक करो ।

(क) लोग अपने प्रतिनिधि चुनकर राज्य गोष्ठी बनाते हैं ।
(ख) वार्ड के सदस्य को जिला परिषद सदस्य कहते हैं ।
(ग) सरपंच की आय व्यय का हिसाब रखते हैं ।
(घ) पंचायत समिति का अध्यक्ष लोगों के द्वारा चुने जाते हैं ।
(ङ) जिला परिषद के मुख्य को सरपंच कहते हैं ।
(च) महानगर निगम के कार्य चलाने के लिए बीडिओ होते हैं ।
(छ) नगरपालिका के वार्ड से चुने गए सदस्य को वार्ड मेंबर कहते हैं ।

आपके लिए काम :

- आपके ग्राम पंचायत में पिछले 2 महीनों में कौन कौन से कार्य किए गए हैं ? कितना खर्च लगा है, उसका एक विवरण प्रस्तुत कीजिए।
- आप जिस वार्ड में हैं, वहाँ क्या - क्या जन कल्याण वाले कार्य किए गए हैं ? किसके द्वारा किए गए हैं ? उसकी एक तालिका प्रस्तुत कीजिए।